सामाजिक अध्ययन

कक्षा - छः

भाग - तीन

'राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद' का यह प्रयोग है।

पाठ्य सामग्री तैयार की है 'एकलव्य' संस्था और उससे जुड़े कई साथियों ने।

चित्रांकन: राजेश यादव - इटारसी, प्रीति आनन्द - हरदा, आशा शर्मा - भोपाल
मुखपृष्ठ: 'देश का पर्यावरण' से साभार

मुद्रक: भण्डारी आफसेट प्रिंटर्स, भोपाल

विषयसूची

भूगोल

पाठ-7 जापान 2-14
पाठ-8 एशिया के ध्रुवीय प्रदेश 15-25
पाठ-9 ईरान 26-36
पाठ-10 प्राकृतिक बनावट, वनस्पति तथा जलवायु 37-47

इतिहास

पाठ-7 राजा, महाराजा और शहर 48-65
पाठ-8 नए प्रश्न, नए विचार 66-72
पाठ-9 मौर्य वंश के राजा 73-81
पाठ-10 विदेशों से व्यापार संपर्क 81-87

नागरिक शास्त्र

पाठ-7 सरकार 88-103
पाठ-8 जिला प्रशासन 104-113

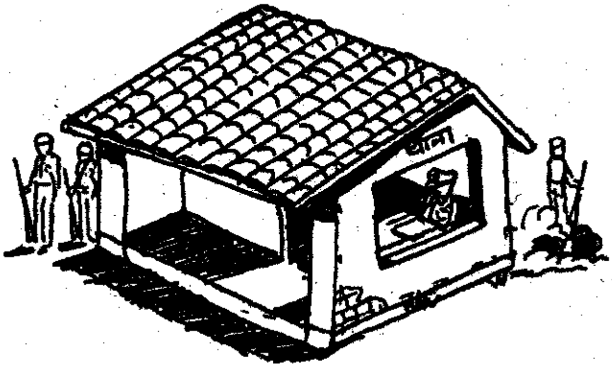

भूगोल पाठ-7 जापान

तुमने कई बार जापान के बारे में सुना होगा । उस देश की बनी कई सारी चीजें जैसे – रेडियो, टेपरिकार्डर टी•वी•, विडियो भी बहुत जानी मानी हैं । शायद तुमने इनमें से कुछ देखी भी होंगी ।

जापान एक बहुत ही छोटा देश है । पर, वहां का उद्योग बहुत विकसित है । जापान एशिया महाद्वीप का पहला देश है, जहां ब्रिटेन और अमेरिका जैसे उद्योग बने ।
चलो इस देश के बारे में पढ़ें ।

- एशिया के नक्शे में जापान को ढूंढो । बताओ वह भारत से किस दिशा में जाने से मिलेगा ?

जापान एशिया महाद्वीप के पूर्वी किनारे पर स्थित है या पश्चिमी किनारे पर ?

क्या हम भारत से जापान रेल या बस से जा सकते हैं ?

जापान देश के चारों ओर समुद्र है । इन समुद्रों को किस नाम से जाना जाता है – एशिया के नक्शे से पता लगाओ । यह भी देखो कि जापान के आसपास कौन से देश हैं ?

इंडोनेशिया की तरह जापान देश भी टापुओं या द्वीपों का बना है । इसमें कई हज़ार छोटे द्वीप हैं, पर इनमें चार बड़े द्वीप हैं । इनका नाम है – होकाइदो, हान्शू, क्यूशू और शिकोकू । मानचित्र (7•1) में इन्हें ढूंढों ।

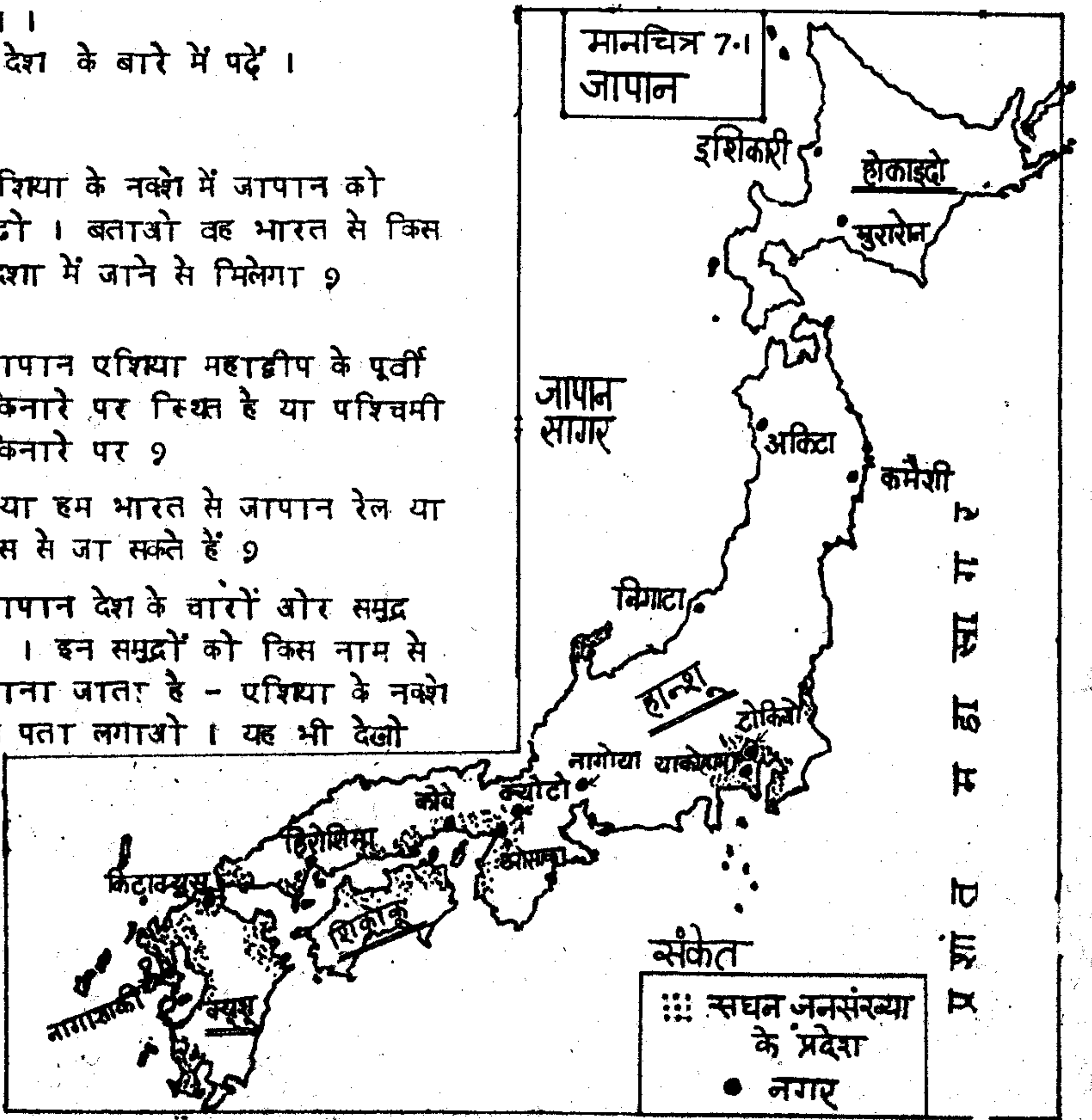

अब इस बात पर ध्यान दो कि जापान पृथ्वी पर कहां स्थित है। तुमने इंडोनेशिया देश को भूमध्य रेखा के पास पाया था। अब देखो कि जापान भूमध्य रेखा से कितनी दूर, उत्तर में है।

- तो क्या इंडोनेशिया जैसे यहां भी साल भर तेज गर्मी रहेगी ?

भूमध्य रेखा से अधिक उत्तर में होने के कारण जापान में सर्दी भी पड़ती है। जब सर्दी का मौसम आता है तो बहुत ठंड पड़ती है। दूसरे मौसम में गर्मी भी पड़ती है पर उतनी नहीं जितनी इंडोनेशिया में।

गर्मी सर्दी का मौसम तो अपने यहां मध्य प्रदेश में भी होता है। पर जापान की जलवायु मध्य प्रदेश से भी भिन्न है।

- ग्लोब व नक्शे में देखो कि पृथ्वी पर जापान कहां है और मध्य-प्रदेश कहां ?
  भूमध्य रेखा के ज्यादा निकट कौन है ?

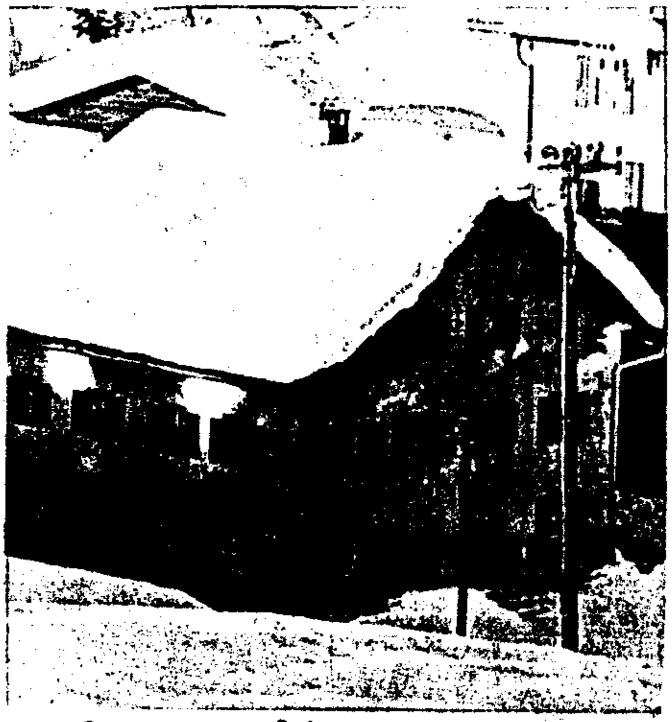

चित्र 7•2 बर्फ से ढका एक घर।

- अब बताओ कि जाड़े के मौसम में ज्यादा ठंड कहां पड़ेगी ? और गर्मी के मौसम में अधिक गर्मी कहां होगी ? मध्य प्रदेश में या जापान में ?

चित्र 7•3

यह जापान के फूजियामा पर्वत का चित्र है। फूजियामा पर्वत एक ज्वालामुखी है। पर, इसकी ढलानें सफेद क्यों दिख रही हैं ?

● यह जापान देश दिखता कैसा है ?

इसका अन्दाज़ा तुम नीचे दिए चित्र (7·4) को देखकर लगा सकते हो। इस चित्र में जापान के पर्वत, घाटी, मैदान आदि दिखाई देते हैं ।

● इस चित्र को देखकर तुम्हें नीचे दिए गए वाक्यों में से कौन सा सही लगता है ?

1· जापान द्वीपों का देश है ।
2· जापान पहाड़ों का देश है ।
3· जापान एक पठार है ।
4· जापान एक चौड़ा मैदानी देश है ।
5· जापान में जावा की तरह ज्वालामुखी हैं ।

● इस चित्र को देखकर क्या तुम्हें लगता है कि यहां के लोग कहां पर बस कर रहते होंगे ?

सब ओर तो पहाड ही पहाड हैं। पर ध्यान से देखो । पहाड़ों के नीचे और समुद्र के किनारे पर छोटे-छोटे मैदान हैं । इन्हें पहचानों और इनके आगे "म" का निशान लगाओ ।

इन्हीं मैदानों में अधिकांश खेती होती है और गांव बसे हैं । यहीं पर बड़े बड़े शहर भी स्थित हैं ।

● जापान के नक्शे में (चित्र 7·) देखो, किस द्वीप में कौन-कौन से शहर बसे हैं। हर द्वीप के प्रमुख शहरों के नाम लिखो ।

इस नक्शे में तुम्हें कुछ बिन्दियां भी दिखेंगी (⁘) । ये वो इलाके हैं, जहां घनी आबादी रहती है, यानी बहुत सारे लोग बसे हैं ।

● इन्हें नक्शे में पहचानो । क्या ये समुद्र तट के इलाके हैं ?

बाकी जगहों में भी लोग रहते हैं पर कम ।

उन भागों में क्या है ?

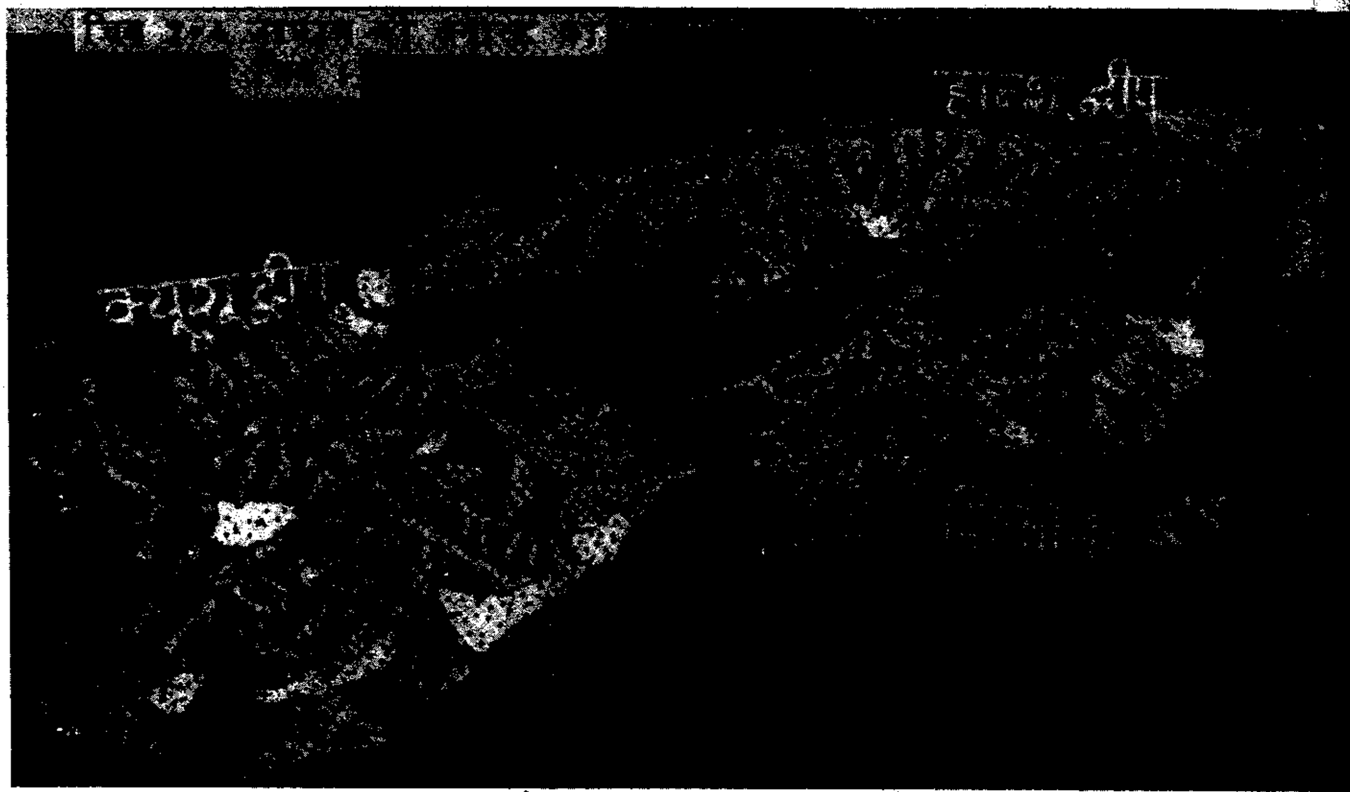

● यह भी देखो कि जापान के अधिकांश लोग उत्तरी हिस्सों में रहते हैं या दक्षिणी ?

जापान में खूब सारे पहाड़ हैं, यह तुमने देखा । अधिकतर पहाड़ वनों से ढके हैं ।

इस चित्र (7·5) में वहां के पेड़ देखो । वे किस चीज से दबे हैं ?

● क्या अपने चारों तरफ ऐसे पेड़ दिखते हैं ?

भारत में हिमालय पर्वत पर ऐसे वन जरूर होते हैं । तो जापान में वैसी ही ठंड पड़ती होगी ।

जिन इलाकों में मौसम साल भर ठंडा रहता है, वहां ऐसे पेड़ पाए जाते हैं । इन पेड़ों की पत्तियां लंबी व नुकीली –सुई जैसी होती हैं । जैसे इस चित्र (7·5) में दिखाई हैं ।

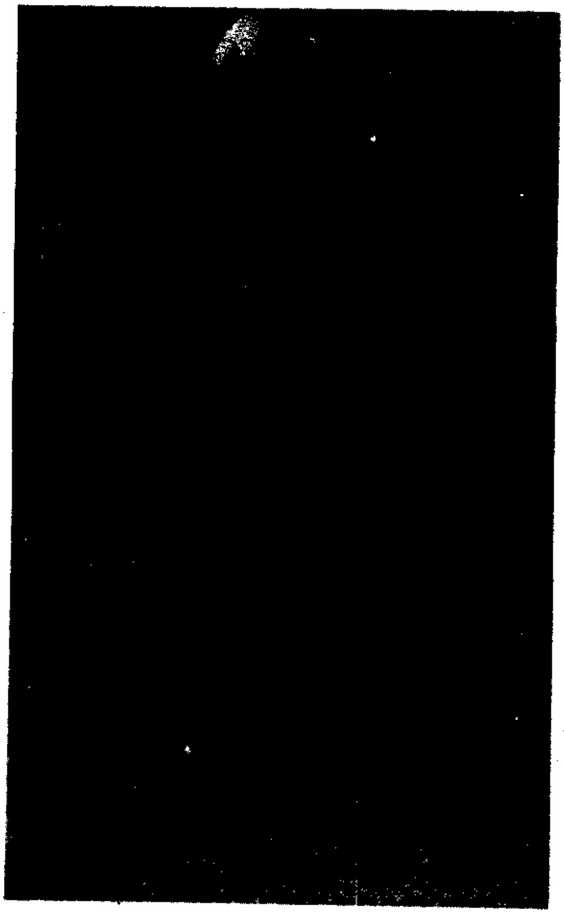

चित्र 7·5 नुकीली पत्ती वाले कोणधारी वन

जापान में ऐसे पेड़ कई जगह पाए जाते हैं, खासकर, ऊंचे पहाड़ों पर जहां साल भर मौसम ठंडा रहता है और बर्फ भी गिरती है । पर, हर जगह ऐसे पेड़ नहीं होते । जिन हिस्सों में गर्मी का मौसम भी रहता है, वहां दूसरी तरह के पेड़ होते हैं ।

चित्र (7·6) में देखो । इन पेड़ों की पत्तियां चौड़ी होती हैं ।

● क्या अपने प्रदेश में चौड़ी पत्ती के पेड़ होते हैं ?

जापान में क्रेन (बगुला), प्रेमिगान, जैसे पक्षी और लोमड़ी व हिरण जैसे जानवर बहुत पाए जाते हैं ।

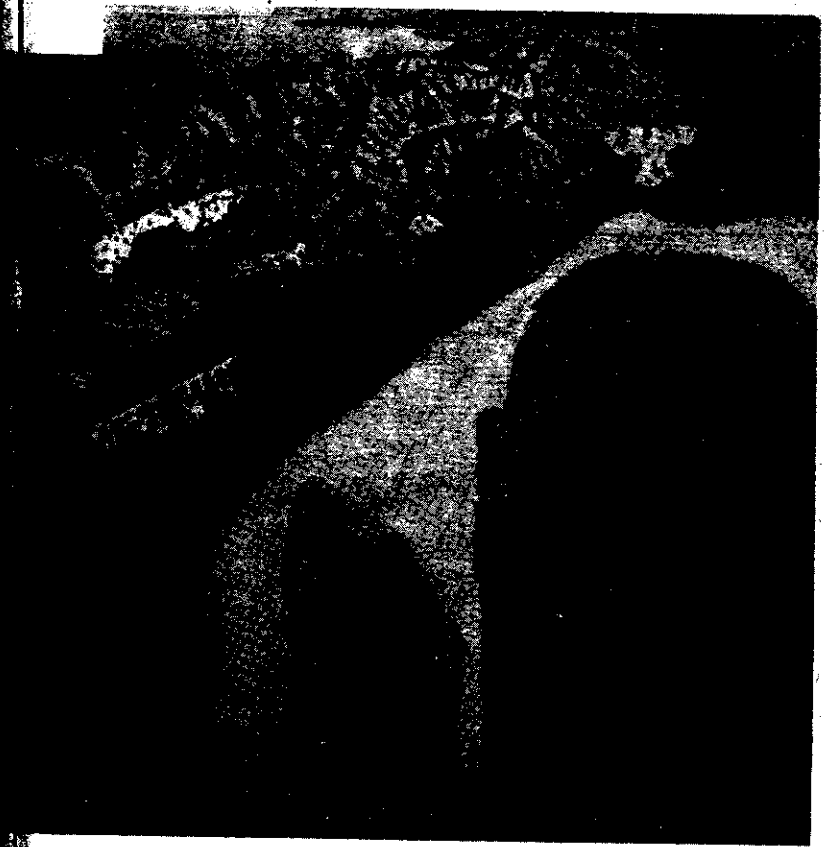

←चित्र 7·6 चौड़ी पत्ती वाले बर्च पेड़ ।

जापान में खेती

अब चलो जापान के पहाड़ों और जंगलों को छोड़कर वहां के खेतों को देखें। तो नीचे मैदान पर उतरें। चित्र (7·7) में सपाट मैदान दिखता है। उसके किनारे पहाड़ खड़े हैं। तुम्हें मैदान में पानी से भरे खेत तो जरूर दिख रहे होंगे।

● इनमें क्या उगता होगा ?

जापान में मैदान इतने छोटे हैं और वहां की आबादी इतनी ज्यादा है कि लोग पहाड़ों की ढलानों पर भी खेती करते हैं। पथरीली और बहुत ढलानी जमीन पर तो खेती नहीं हो सकती। इसलिए जिन पर्वतीय ढलानों पर थोड़ी मिट्टी है, उन्हें काटकर छोटे-छोटे सीढ़ीनुमा खेत बना लिए जाते हैं।

चित्र में तुम एक पहाड़ पर ऐसे सीढ़ीनुमा खेत देख पा रहे हो।

दूसरे पहाड़ पर कुछ औरतें काम कर रही दिखती हैं।

● क्या तुम अंदाज लगा सकते हो कि वे क्या कर रही हैं ?

इस पहाड़ की ढलान पर क्या उगा है ?

जापान में पहाड़ों की ढलानों पर चाय खूब उगाई जाती है। चाय के पौधों के लिए बहुत सा पानी गिर के बह जाना चाहिए। इसलिए ढलान पर ये अच्छे उगते हैं।

ढलानों पर कई प्रकार के फलदार पेड़ भी लगाए जाते हैं। शहतूत के पेड़ भी बहुत उगाए जाते हैं। इनकी पत्तियां खाकर रेशम की इल्लियां पलती हैं। जापान में रेशम काफी मात्रा में बनाया जाता है।

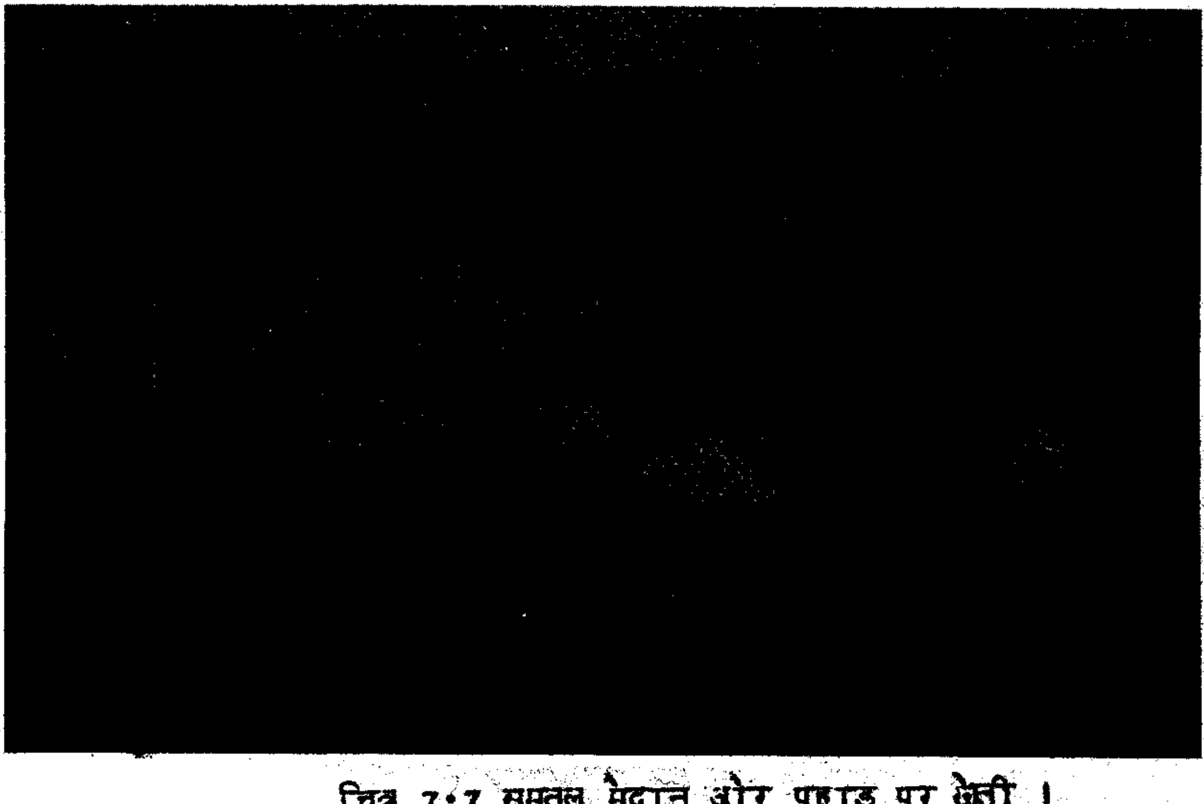

चित्र 7·7 समतल मैदान और पहाड़ पर खेती।

यह तो रही पहाड़ी ढलानों पर उगने वाले पेड़ पौधों की बात । अब आओ पता करें कि जापान के समतल खेतों में क्या-क्या फसलें ली जाती हैं । इसके लिए पहले जापान की बारिश और तापमान के बारे में कुछ बातें जानो ।

जापान में बारिश जून से सितम्बर तक होती है । इन महीनों में भारी वर्षा होती है ।

● क्या इन्हीं महीनों में अपने यहां भी बारिश का मौसम होता है ?

इंडोनेशिया की तरह साल भर बारिश न अपने यहां होती है न जापान में ।

जापान में जून से सितम्बर तक तेज धूप भी पड़ती है । तेज धूप के साथ जहां बारिश होती है वहां अक्सर धान अच्छा होता है । इसलिए अपने यहां भी धान इन्हीं महीनों में उगाया जाता है ।

बरसात के समय जापान में भी धान उगाया जाता है । वहां की धान की खेती बहुत प्रसिद्ध है ।

जापान में धान के अलावा गेहूं, जौ, राई, आलू, सब्जियां भी उगाई जाती हैं । ये फसलें ठंडे इलाकों में ज्यादा होती हैं ।

● बताओ कि ये जापान के कौन से द्वीप में अधिक उगती होंगी ?

जापानी लोगों ने अपने छोटे-छोटे खेतों में अधिक से अधिक उत्पादन लेने के कई तरीके विकसित किए हैं । वे खेतों में कैसे काम कर रहे हैं, चित्र 7·8 में देखो -

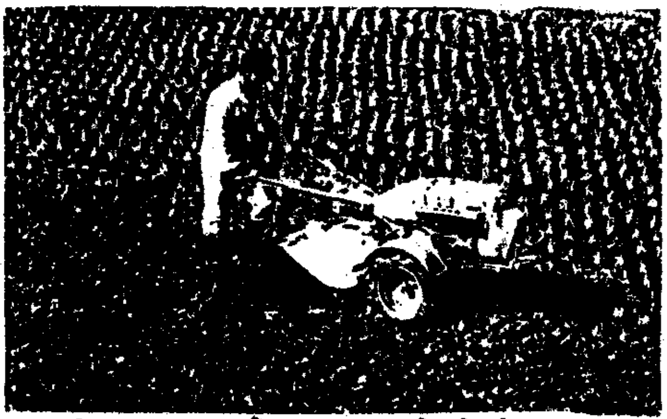

चित्र 7·8 छोटी मशीनों से खेती ।

वे अपने जैसे हल बैल से तो काम नहीं कर रहे हैं । खेतों में ट्रैक्टर भी नहीं हैं । ये छोटी-छोटी मशीनें हैं जो डीजल से चलती हैं । खेती के हर काम के लिए यहां ऐसी छोटी-छोटी मशीनें हैं । मिट्टी पलटने, मिट्टी को बारीक कणों में कूटने, मिट्टी में पानी मिलाकर उसे कीचड़ बनाने, बोने, खरपतवार उखाड़ने, दवाई छिटकने,कटाई करने,यहां तक कि धान की रूपाई करने की भी मशीनें हैं ।

● चित्र में मशीन का उपयोग किस लिए किया जा रहा है ?

जापान में मशीनें ऐसी छोटी-छोटी क्यों हैं, क्या इसका कोई कारण सोच सकते हो ?

ये मशीनें वहां पिछले तीस सालों में बनी हैं । पहले वहां भी हाथ और हल से ही काम चलता था ।

● सोच कर बताओ कि जापान में 30 साल पहले ज्यादा लोग खेतों में काम करते होंगे कि अब ?

इतने विकसित तरीके से खेती करने पर भी जापान में अनाज आदि की कमी पड़ती है । जापान अनाज,

मांस, फल, दूध, मक्खन, शक्कर आदि विदेशों से मंगवाता है ।

मछली पकड़ना

जापान के चारों तरफ समुद्र ही समुद्र है । तो यहां मछली पकड़ने का खूब बड़ा धन्धा है ।

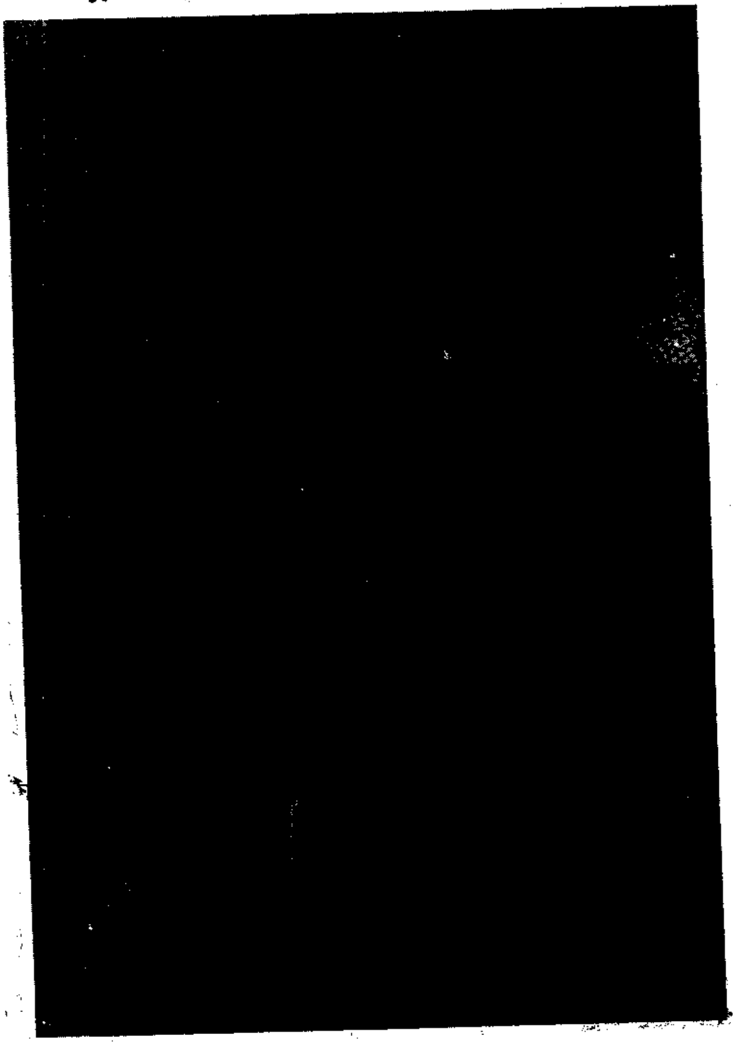

चित्र 7·9 नाव से मछली पकड़ रहे हैं ।

जापान का तट कितना कटा-फटा है नक्शे में देखो । इसमें कई खाड़ियां हैं ।

● भारत के तट पर क्या तुमने कोई खाड़ी देखी थी ?

जापान की खाड़ियों में अच्छे बंदरगाह हैं । चारों ओर समुद्र में मछलियां भी खूब मिलती हैं । अतः बंदरगाहों से बड़े जलयानों में बैठकर यहां के लोग दूर तक समुद्र में मछली पकड़ने जाते हैं । चित्र 7·9 देखो। कई जलयानों में मछली पकड़ने के सभी सुविधाजनक यंत्र लगे होते हैं । जापान दूसरे देशों को मछली बेचता है । हां, जापान में मछली का तेल भी निकाला जाता है ।

कभी-कभी यहां समुद्र में भयंकर तूफान आते हैं । इन्हें टायफून कहते हैं। तूफान के कारण समुद्र किनारे की जगहों में पानी भर जाता है । घर, बिजली की लाईनें आदि टूट-फूट जाती हैं । ऐसे तूफान अपने देश में भी आते हैं ।

जापान में उद्योग

जापान के मैदानों और पहाड़ों और समुद्री किनारों को हमने देख लिया, और वहां के जंगलों व खेतों की बात भी कर ली । अब जापान के कारखानों के बारे में कुछ जानो ।जापान अपने कारखानों के लिए बहुत प्रसिद्ध है । उस देश में बहुत सारे कारखाने हैं ।तरह-तरह के कारखाने भी हैं । मानचित्र (7·10) में जापान के प्रमुख औद्योगिक केन्द्रों की जानकारी दी है । वहां कौन से उद्योग हैं यह भी दिखाया है ।

नक्शा देखकर तुम सूची बनाओ कि किन नगरों में कौन से उद्योग हैं -

नगर	मुख्य उद्योग
1. टोकियो तथा याकोहामा	
2. नगोया	
3. ओसाका	
4. कोबे तथा क्योटो	

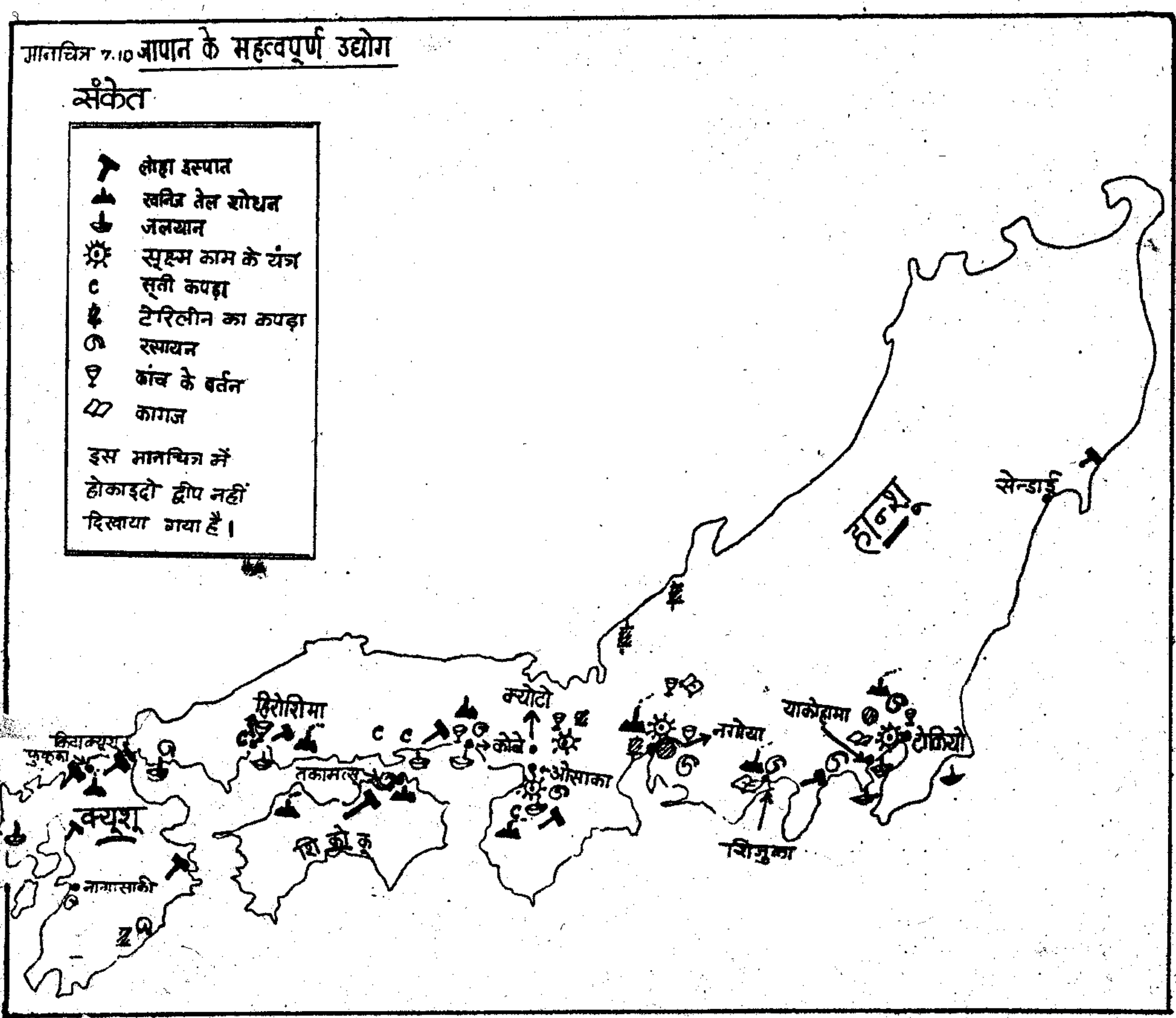

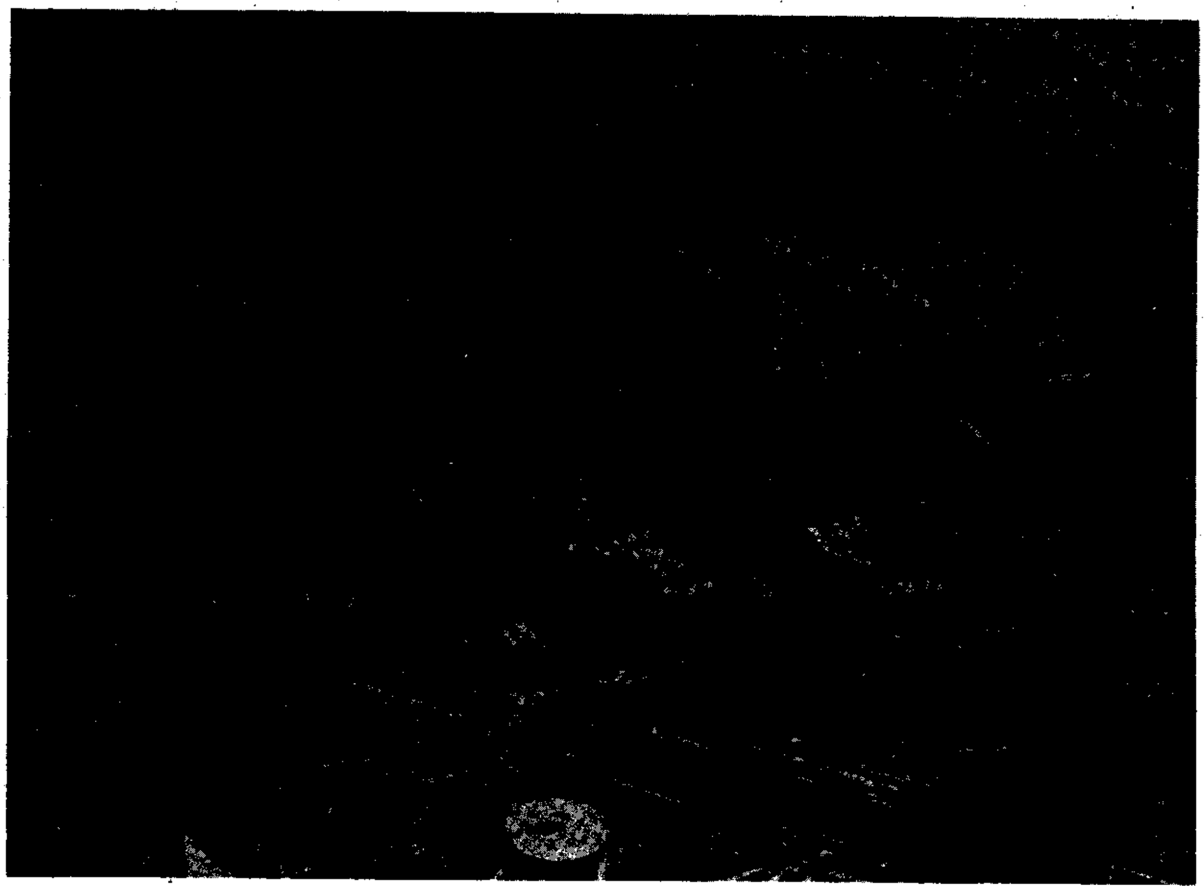

चित्र 7·11 एक औद्योगिक क्षेत्र का दृश्य । धुएं से ढके बड़े-बड़े कारखाने । उनके अन्दर से गुजरती रेल पटरियां । पास में ही बंदरगाह, जिसमें खड़े हैं जहाज - माल लाने ले जानेको। बंदरगाह के उस पार और कारखाने ।

चित्र 7·12 एक मोटर कारखाने के अंदर

जापान में ऐसे तरह-तरह के उद्योग विकसित हैं। लेकिन इनके लिए अधिक कच्चा माल यहाँ नहीं मिलता। जापान में कुछ खनिज जैसे -कोयला, लोहा, तांबा आदि अवश्य खदानों से निकाला जाता है। पर बहुत सा कच्चा माल विदेशों से मँगाना पड़ता है। उसके बदले में तरह-तरह की बनी हुई चीजें जापान दूसरे देशों को भेजता है।

चित्र 7•13 यहाँ टेपरिकार्डर बन रहे हैं।

● नीचे दी गई तालिका को देखो -

जापान में दूसरे देशों से खरीदा माल.	कारखानों में बनी चीजें जिन्हें जापान दूसरे देशों को बेचता है.
1• खनिज तेल	1• मोटर गाड़ी
2• पेट्रोल	2• लोहा - इस्पात (स्टील)
3• तांबा, टीन	3• जहाज
4• चांदी, सोना	4• कांच की चीजें
5• खनिज लोहा	5• लोहे की चीजें
6• कोयला	6• रेडियो, टेपरिकार्डर
7• कपड़ा	7• मोटर सायकल
8• मांस	8• मशीनें
9• चारा	9• टेरीलीन का कपड़ा
10• रूई	10• प्लास्टिक
11• सोयाबीन	
12• गेहूं	
13• लकड़ी	

बताओ - 1• खाने की कौन सी चीजें जापान मँगाता है ?

2• यह भी बताओ कि यदि जापान कारखानों की बनी चीजें बाहर के देशों को न भेजे तो क्या उसके लोगों की भोजन की जरूरतें पूरी हो सकेंगी ?

3• दूसरे देशों से खरीदी गई ये चीजें जापान के किन उद्योगों में काम आती होंगी, तालिका में भरो -

1• लोहा —
2• तांबा व टिन —
3• कोयला —
4• लकड़ी —
5• रूई —
6• खनिज तेल —

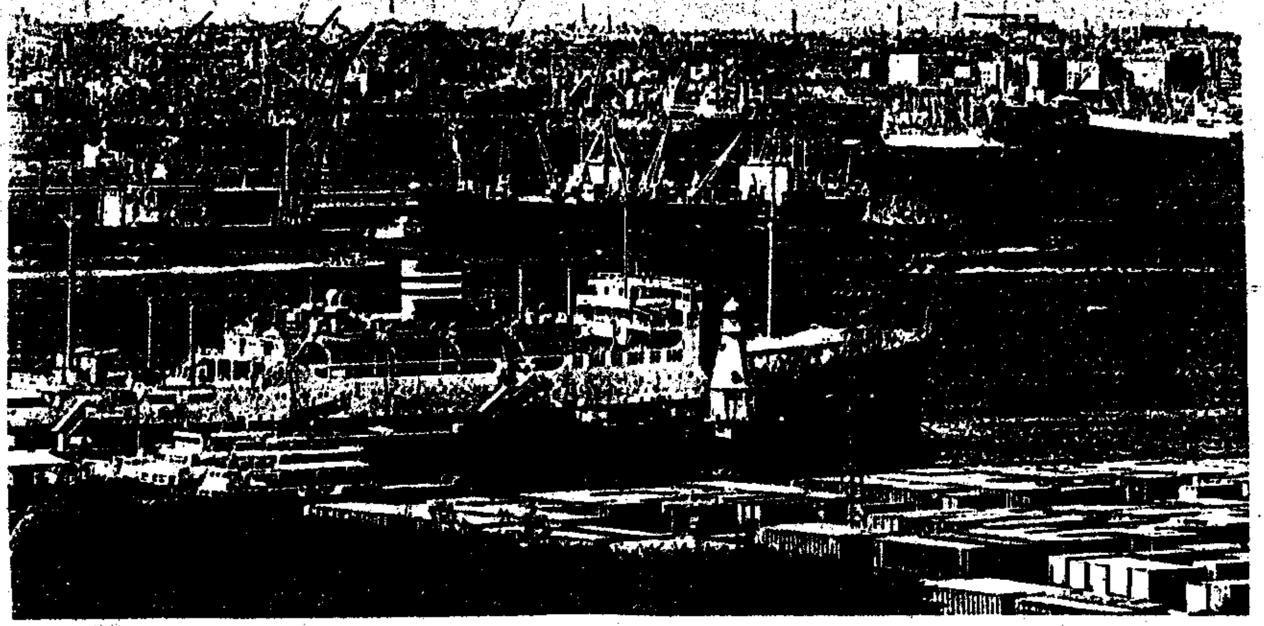

चित्र 7·14 एक बंदरगाह का दृश्य । देखो कितने सारे जहाज हैं । जमीन पर रखे बड़े-बड़े खोके जहाज में चढ़ाए जाने के लिए तैयार हैं । सामान चढ़ाने उतारने की मशीन, क्रेन भी दिख रही है ।

बाहर से आने वाले माल को कारखानों तक पहुंचाने और बने हुए माल को बाहर भेजने के लिए जापान में परिवहन सुविधा बहुत जरूरी है । वहां सड़कें और रेल मार्ग बहुत अच्छे हैं । रेल गाड़ियां तो खूब तेज और समय पर चलती हैं । जापान में हर औद्योगिक क्षेत्र के पास बंदरगाह भी हैं। यह क्यों तुम समझा सकते हो ?

अपने देश में तो अधिकतर लोग खेती में काम करते हैं । पर जापान

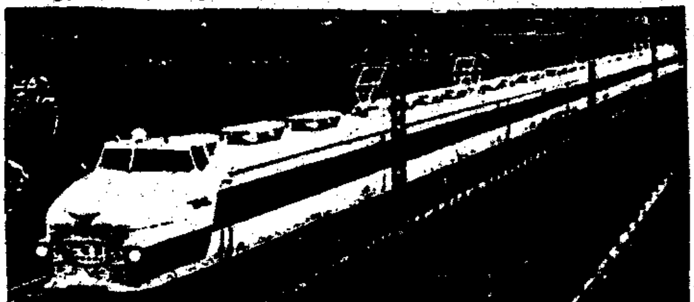

चित्र 7·15 जापान की रेल ।

देश में बहुत कम लोग खेती में काम करते हैं । वहां के अधिकतर लोग कारखानों में काम करते हैं ।

हजारों लोग शहर में अपने रहने की जगह से कारखानों में काम करने जाते हैं, और घर लौटते हैं । इसके लिए भी मोटर गाड़ियों और रेलगाड़ियों की सुविधा बहुत जरूरी है ।

जापान के लोग

जापान में बड़े-बड़े नगर हैं जिनमें अनेक कारखाने हैं । भूमि की कमी के कारण नगर बहुत घने बसे हैं । घर भी अधिकतर छोटे-छोटे होते हैं । उनमें कुर्सी-मेज आदि अधिक नहीं होते । लोग छोटी मेज के चारों ओर बैठकर खाना खाते हैं । चटाईयों पर बिस्तर बिछाकर सोते हैं । वहां के घरों के अन्दर का चित्र 7·16 देखो ।

जापानी लोगों की परम्परागत पोशाक का नाम किमोनो है। चित्र में देखो यह ढीली-ढाली पोशाक कैसी होती है। अब पश्चिमी देशों के प्रभाव से जापान में औरतें फ्रॉक पहनने लगी हैं और आदमी कोट-पेन्ट पहनने लगे हैं। जापान की भाषा जापानी है। जापानी लोग बौद्ध धर्म और शिन्टो नाम के धर्म को मानते हैं।

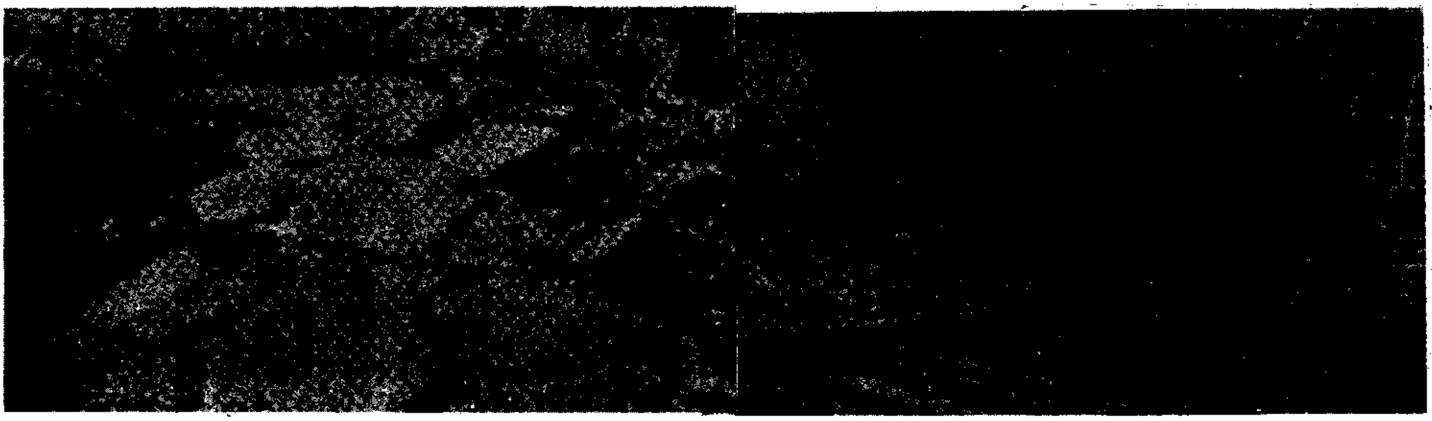

चित्र 7·17 भूकंप के कारण जमीन पर ऐसी दरारें पड़ती हैं और सड़क, रेल आदि ऐसे टूट-फूट जाती हैं।

जापान में भूकंप बहुत आते हैं। चित्र में भूकंप के बाद का दृश्य देखो। पृथ्वी के भीतर की चट्टानें खिसकने से सतह में कंपन होता है। इसे भूकंप कहते हैं। जब भूकंप होता है जमीन तेज़ी से हिलने लगती है। मकान की दीवारें हिलने लगती हैं। पेड़-पौधे उखड़ जाते हैं। बहुत नुक्सान होता है। मकान, सड़क, रेलमार्ग, बिजली के खंभे आदि टूट जाते हैं।

पहले तो जापान में लोग लकड़ी के मकान बनाते थे। लकड़ी के मकान भूकंप के धक्के से हिल उठते हैं पर जल्दी टूटते नहीं। जबकि कांक्रीट मकानों में आसानी से दरारें पड़ जाती हैं।

भूकंप में टूट जाने पर भी लकड़ी के मकानों से ज्यादा खतरा व नुक्सान नहीं रहता।

उसी लकड़ी से दुबारा मकान बनाया जा सकता है।

सोचो अगर कांक्रीट के मकान बार-बार ढह जाएं तो लोगों को कितना खतरा और नुक्सान हो।

पर अब जापान के लोग ऐसे पक्के मकान बनाने लगे हैं जो भूकंप के धक्के से आसानी से नहीं टूटते।

अभ्यास के लिए प्रश्न

जापान तथा इंडोनेशिया की तुलना -

1. जापान तथा इंडोनेशिया में प्राकृतिक बनावट की दृष्टि से निम्न लिखित में से समानताएं बताओ -
   अ- ये दोनों देश द्वीप समूह हैं/ प्रायद्वीप हैं.
   ब- इन देशों में पर्वतीय प्रदेश अधिक हैं/यहां मैदान अधिक हैं.
   स- यहां अनेक ज्वालामुखी हैं / यहां अनेक पठार हैं.
2. इंडोनेशिया की जलवायु गर्म तथा नम है, जबकि जापान की जलवायु ठंडी तथा नम है । ऐसा क्यों ?
3. जापान और इंडोनेशिया के वन एक दूसरे से कैसे भिन्न है ?
4. इंडोनेशिया तथा जापान दोनों देशों में अधिकतर जनसंख्या तटीय मैदानों में बसी है । ऐसा क्यों है ?
5. दोनों देशों को चारों ओर के समुद्र से क्या लाभ है ?
6. दोनों देशों में व्यापार महत्वपूर्ण है । उन वस्तुओं की सूची बनाओ जो यहां से बाहर जाती हैं।
7. मानचित्र पर जापान के महत्वपूर्ण द्वीपों के नाम लिखो।
8. जापान के तीन महत्वपूर्ण नगरों के नाम बताओ तथा मानचित्र पर उनको दिखाओ ।

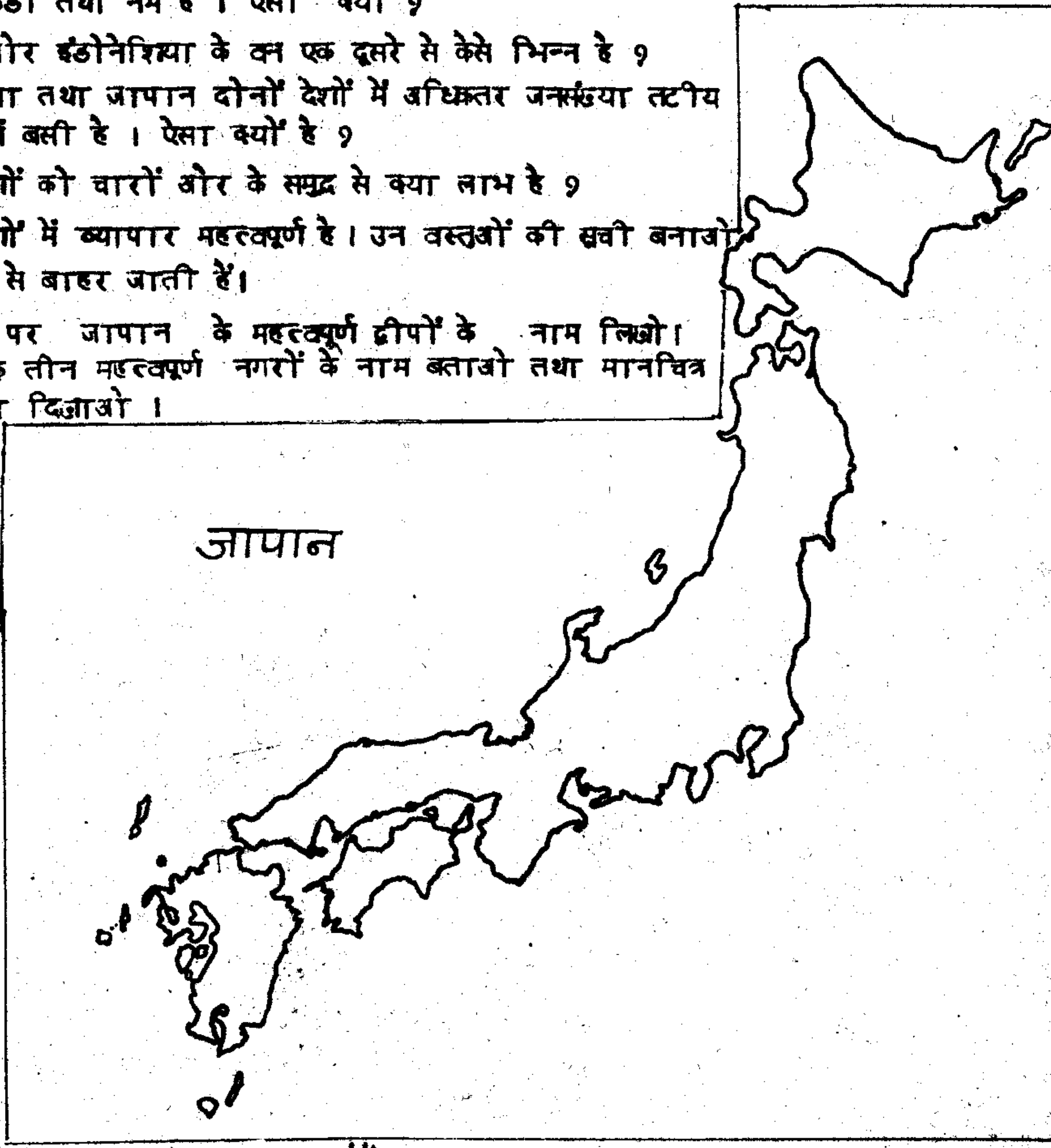

पाठ-8 एशिया के ध्रुवीय प्रदेश

इस पाठ में हम एक ऐसे प्रदेश के बारे में पढ़ेंगे जो हमारे अनुभव से बहुत अलग है। वह एक ऐसा प्रदेश है जहां कई महीने लगातार रात रहती है और कई महीने लगातार दिन। हमारे यहां जैसे वहां पर सूरज रोज़ सुबह उगकर शाम को डूबता नहीं है। क्या तुम ऐसी जगह के बारे में कल्पना कर सकते हो ?

वहां इतनी ठंड पड़ती है, इतनी ठंड पड़ती है कि चारों तरफ बर्फ ही बर्फ जमी रहती है। जमीन पर बर्फ, झीलों पर बर्फ, नदियों पर बर्फ और पूरा सागर का सागर ही बर्फ बना रहता है।
पृथ्वी के इस क्षेत्र को ध्रुवीय प्रदेश कहा जाता है।

चित्र 8•1 ऐसे दिखते हैं ध्रुवीय प्रदेश। इस दृश्य का अपने शब्दों में वर्णन करो।

यह प्रदेश कहां है ? तुमने ग्लोब पर देखा होगा कि पृथ्वी पर दो ध्रुव हैं - उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव। मानचित्र 8•2 को देखो। इस मानचित्र में उत्तरी ध्रुव के आसपास का क्षेत्र दिखाया गया है। सब से बीच में आर्कटिक महासागर है। यहां बीचों बीच बर्फ की मोटी तह जमी रहती है। ग्लोब पर इसे देखो। लगता है यह सागर पृथ्वी पर बर्फ की टोपी है।

मानचित्र 4·2 ध्रुवीय प्रदेश

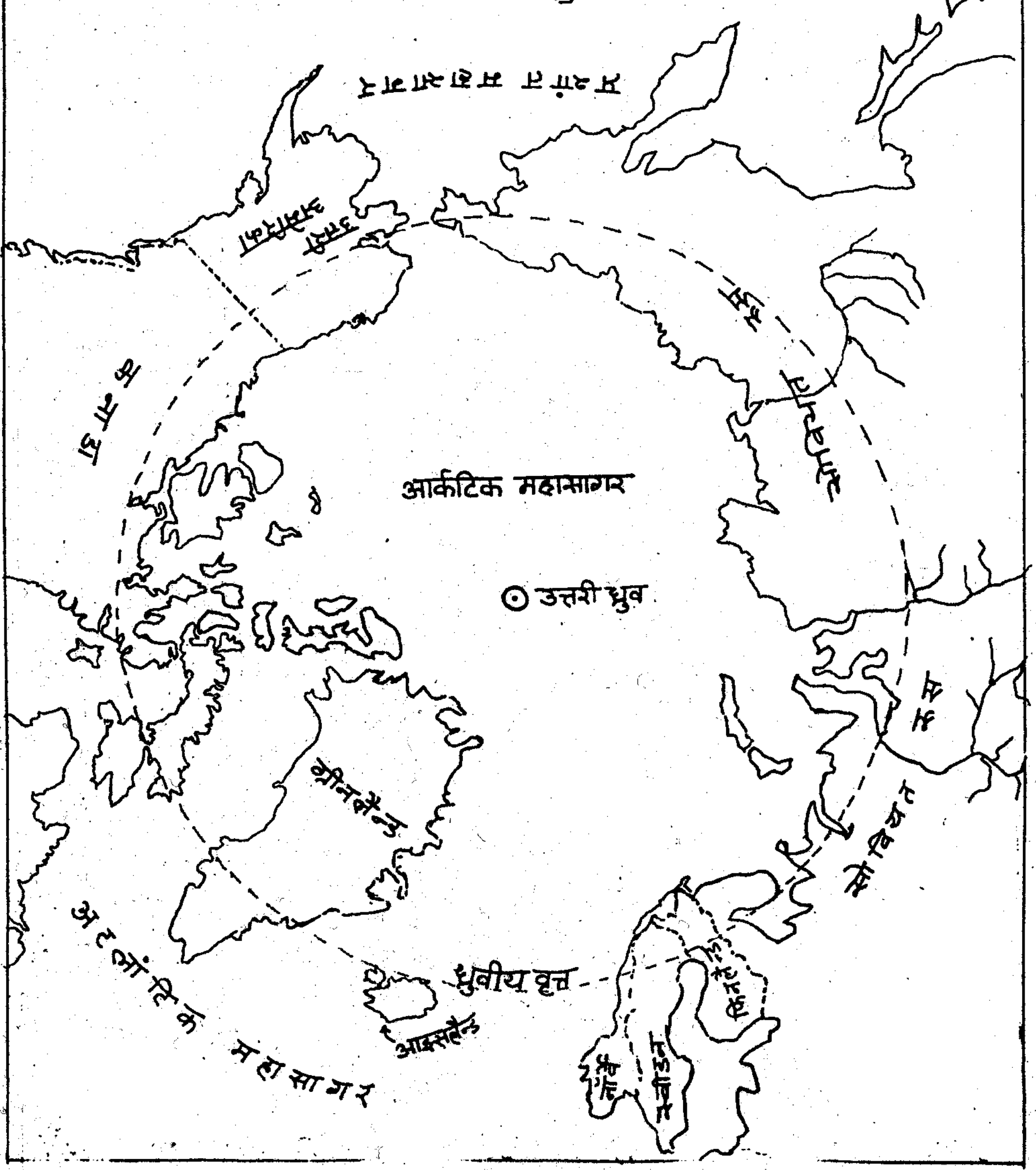

चित्र (8·3) में इस महासागर की बर्फ की चट्टानों को देखो - जहाज उससे घिरा हुआ है । क्या यह यहां से निकल पायेगा ?

● मानचित्र(8·2) से पता करो कि आर्कटिक महासागर के आसपास कौन से देश हैं ? इनके नाम अपनी कापी में लिख लो ।

इन सभी देशों का उत्तरी हिस्सा जहां अधिक ठंड होती है, टुंड्रा प्रदेश कहलाता है ।

● क्या टुंड्रा प्रदेश कोई अलग देश है ? अगर नहीं तो उस प्रदेश में किस-किस देशों का हिस्सा शामिल है ?

एशिया का जो हिस्सा टुंड्रा प्रदेश में शामिल है, उसे मानचित्र(8·4) में दिखाया गया है ।

मानचित्र 8·4 एशिया के ध्रुवीय प्रदेश

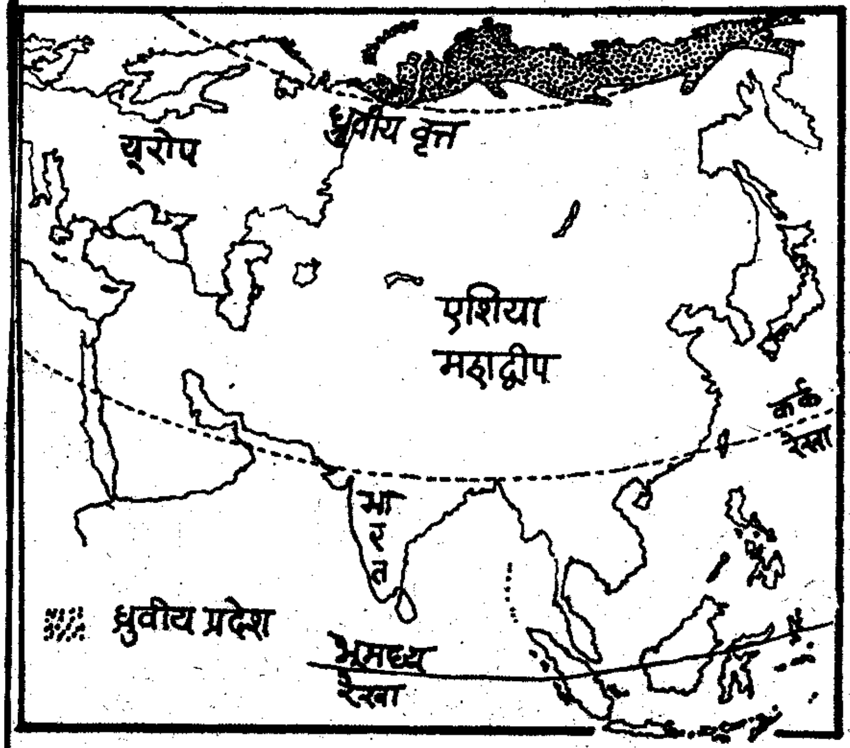

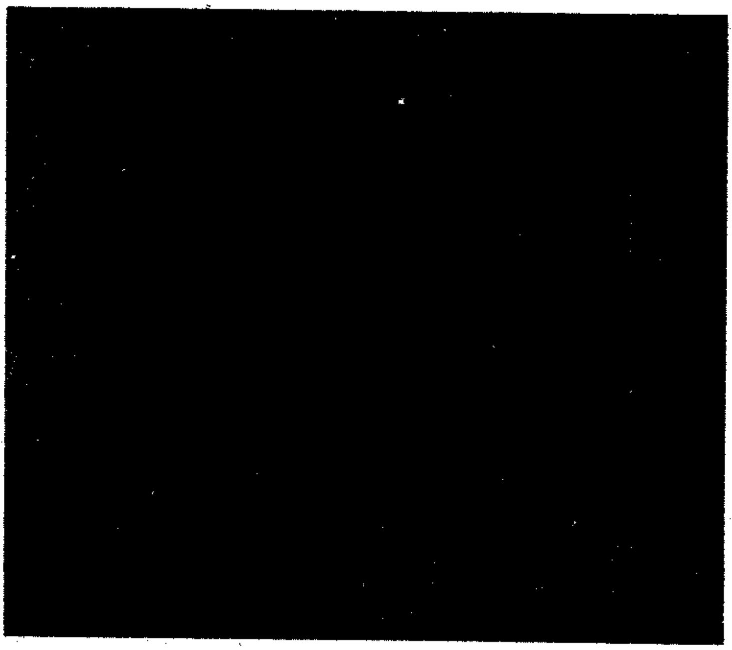

चित्र 8·3

● यह हिस्सा कौन से देश में है ? अपनी कापी पर उस देश का नाम लिखो ।

नक्शे में इंडोनेशिया, भारत और जापान भी पहचानो और देखो कि टुंड्रा प्रदेश इन सब से ज्यादा उत्तर में है । भूमध्य रेखा से बहुत दूर, बिलकुल ध्रुव के पास । इसीलिए इस इलाके को ध्रुवीय प्रदेश भी कहते हैं ।

जलवायु और वनस्पति

टुंड्रा प्रदेश की सबसे प्रमुख बात है यहां की ठंड । यहां इतनी ठंड होती है जिसका अंदाजा लगाना कठिन है । जापान की ठंड टुंड्रा की ठंड के मुकाबले में कुछ भी नहीं है ।

यहां सिर्फ तीन महीने मौसम कुछ गर्म रहता है । नौ महिने सूर्य आसमान में ही नहीं दिखता और कठिन जाड़ा पड़ता है ।

इस ठंड का मुख्य कारण है यहां के दिन-रात का एक अजीब चक्कर । अपने यहां रोज सुबह सूरज उगता है और शाम को डूब जाता है । मगर टुंड्रा प्रदेश में ऐसा नहीं होता ।

यहां लगभग तीन महीने लगातार रात होती है । तब सूरज की रोशनी यहां बिल्कुल नहीं रहती । फिर अगले तीन महीनों में भी सूरज तो दिखता नहीं है मगर सूर्योदय से पहले हमारे यहां जैसा उजाला रहता है, वैसा उजाला लगातार बना रहता है । उसके बाद अगले तीन महीनों तक टुंड्रा प्रदेश में सूरज आसमान में दिखता रहता है, डूबता ही नहीं । लगातार तीन महीने "दिन" रहता है ।

पर कैसा दिन ?

अपने यहां सूरज आसमान के एक छोर (क्षितिज) से उदय होता है और धीरे-धीरे आसमान में ऊपर चढ़ता दिखता है, फिर शाम को दूसरी तरफ (पश्चिम दिशा में) उतरता दिखता है । ऐसा कुछ टुंड्रा प्रदेश में नहीं होता है । वहां सूरज दिन भर आसमान के छोर (क्षितिज) के पास ही मंडराता रहता है । न ऊपर चढ़ता है न अस्त होता है । इस कारण इस समय बहुत हल्की गर्मी पड़ती है । यही तीन महीने वहां का गर्मी का मौसम है ।

इसके बाद तीन महीने फिर सूरज नहीं दिखता, पर लगातार शामसी रोशनी बनी रहती है । और इसके बाद फिर से तीन महीने रात रहती है ।

ऐसा क्यों होता है यह समझने के लिए तुम चाहो तो ग्लोब और मोमबत्ती से प्रयोग करके देखो ।

टुंड्रा प्रदेश में गर्मी के तीन महीनों में भी बहुत ठंड रहती है । जाड़े के नौ महीनों की तुलना में जरूर ठंड कम हो जाती है । सूरज की हल्की किरणों के कारण गर्मी के महीनों में कुछ हिम पिघल जाती है, झीलें भर जाती हैं । परन्तु सतह के नीचे मिट्टी जमी रहती है । मिट्टी पानी को सोखती नहीं है । धूप की कमी के कारण पानी भाप भी नहीं बन पाता है । इसी कारण जगह-जगह दलदल बन जाते हैं । नदियां जो सर्दी में जम जाती हैं, अब पिघलकर बहने लगती हैं । निकट के सागर का हिम भी पिघल जाता है ।

गर्मी के इन दो-तीन महीनों में अनेक पौधे, काई, लाइकेन नाम के घास (चित्र 8•5), छोटी झाड़ियां, बेरियां, सेज, बौने वृक्ष आदि उग आते हैं ।

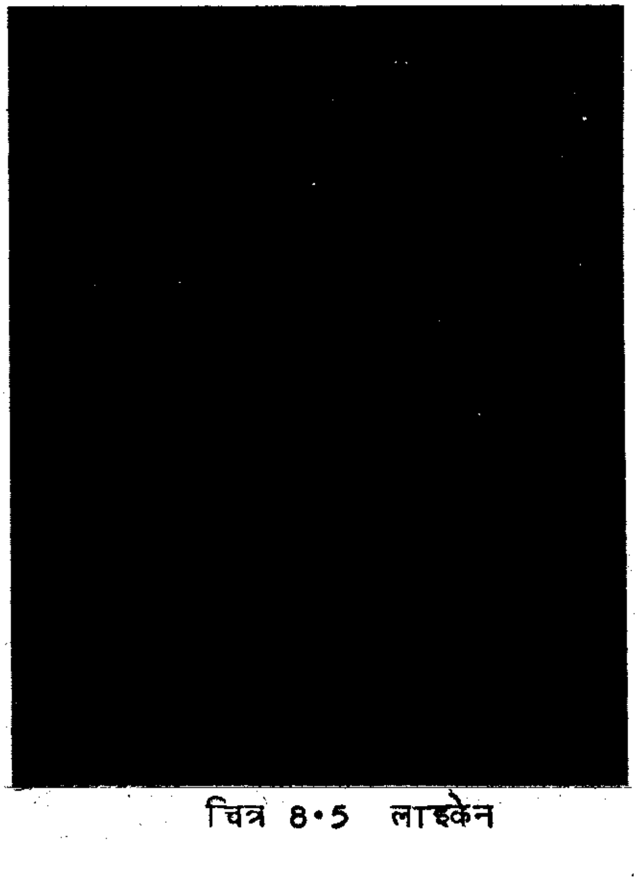

चित्र 8•5 लाइकेन

● बताओ यहां केवल गर्मी के महीनों में ही क्यों पेड़-पौधे उगते हैं ?

चट्टानी सतह के बीच-बीच में जहां भी मिट्टी इकट्ठी हो जाती है यह वनस्पति उग आती है । तेज तूफानी हवा के कारण यहां बड़े वृक्ष हो ही नहीं पाते - टूट जाते हैं । इसीलिए यह अधिकतर वृक्ष विहीन प्रदेश है ।

यह वनस्पति यहां के जानवरों के लिए भोजन के काम आती है । गर्मी के महीनों में इन्हें खाने के लिए तरह-तरह के जानवर यहां आते हैं ।

जिन नौ महीनों में सूरज नहीं चमकता है, कड़ाके की ठंड पड़ती है । तुम जानते होगे कि जब खूब ठंड पड़ती है तो पानी जमकर बर्फ बन जाता है । जिस ठंड में पानी बर्फ बन जाता है उससे भी 50 डिग्री अधिक ठंड टुंड्रा प्रदेश में पड़ती है ।

जब ऐसी ठंड पड़ती है नदियां, झील, समुद्र सब जम जाते हैं । तेज बर्फीली हवाएं चलती रहती हैं ।

● तुम सोचो कई महीने यदि सूर्य न दिखे और बर्फ पड़े तो क्या पेड़ पौधे जिन्दा रह सकते हैं ?

सर्दी के महीनों में यहां सभी वनस्पति मर जाती है, चारों ओर अंधेरा, वीरान, उजाड़ प्रदेश हो जाता है । जानवर भी इस प्रदेश को छोड़ जाते हैं । चिड़ियां तक यहां से उड़ जाती हैं ।

● अगर तुम अपने आप को ऐसी जगह पर पाओ जहां तीन महीने रात और तीन महीने दिन हो और भयंकर ठंड हो तो तुम क्या करोगे, कैसे रहोगे ? आगे पढ़ने से पहले अपनी कल्पना से इस विषय पर एक कहानी लिखो ।

तुम्हें शायद लगता होगा कि ऐसी जगह लोग नहीं रह सकते हैं । आश्चर्य की बात है कि ऐसी जगह भी हम जैसे लोग रहते हैं । एशिया के इस प्रदेश के लोग याकुत, तुकची और सेमीयाड नाम से जाने जाते हैं । वैसे टुंड्रा प्रदेश अधिकतर खाली है - यहां रहने वाले लोगों की संख्या बहुत कम है ।

ध्रुवीय प्रदेश के जानवर भी हमारे गाय, भैंस, हाथी, घोड़ों से कितने अलग हैं । और नाम भी अजीब-अजीब । चलो इनमें से कुछ से परिचित हो जाएं ।

रेनडियर : चित्र 8·6 देखो। यह यहां का एक प्रमुख जानवर है । वास्तव में यह हिरण परिवार का ही सदस्य है । अन्तर यह है कि इसका सिर बहुत बड़ा होता है और दोनों नर और मादा में बारह-सींगा जैसे बड़े-बड़े सींग होते हैं ।

चित्र 8·6 रेनडियर

करेबो : यह जानवर रेनडियर का ही एक किस्म है । इसकी रोएंदार खाल (समूर) से लोग कोट बनाते हैं ।

ये लोग यहां कैसे रहते होंगे -क्या खाते पीते होंगे ?

इतने ठंडे और बर्फीले प्रदेश में खेती करना तो असंभव है । पेड़ - पौधे यहां बहुत कम उगते हैं और वह भी दो तीन महीनों के लिए ।

अपने यहां हम पेड़- पौधों पर ज्यादा और जानवरों पर कम निर्भर हैं । हमारा मुख्य भोजन पौधों से आता है । जलाने के लिए पेड़ों से लकड़ी तोड़ लाते हैं । झोंपड़ी,घर बनाने में भी लकड़ी का इस्तेमाल करते हैं । पहनने के लिए कपास का उपयोग करते हैं । मगर टुंड्रा प्रदेश में इसके विपरीत है । वहां के लोगों का जीवन जानवरों पर ही निर्भर है । यह कैसे,आगे देखते हैं।

टुंड्रा प्रदेश के लोगों का मुख्य धंधा शिकार, मछली मारना और पशुपालन है। इनका मुख्य भोजन मांस है ।अनाज सब्जी, फल आदि इन्हें बहुत कम मिलता है । ये लोग ध्रुवीय भालू, रेनडियर, केरबू, खरगोश, लोमड़ी आदि जानवरों का शिकार करते हैं । चित्र 8•10 व 8•11 को देखो, वहां के कुछ लोगों को शिकार करते हुए दिखाया गया है ।

चित्र 8•10 तीर कमान से शिकार ।

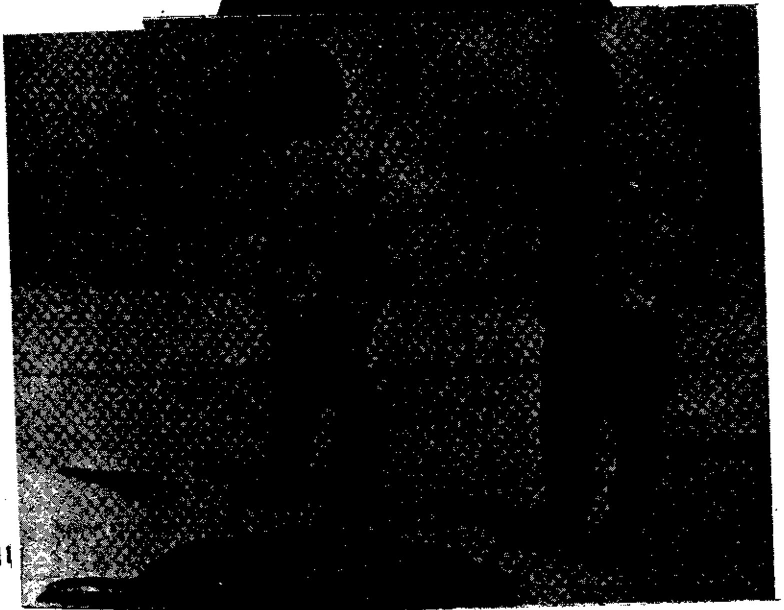

चित्र 8•11 "हारपून" से सील का शिकार ।

चित्र 8•7 ध्रुवीय भालू

चित्र 8•8 सील

<u>ध्रुवीय भालू</u> : चित्र (8•7) बर्फ पर रहने वाला यह भालू बिलकुल सफेद खाल का होता है और बहुत ही खतरनाक होता है । इसकी खाल के लिए इसका खूब शिकार किया जाता है ।

<u>सील</u> : (चित्र 8•8) तैरने वाले इस जानवर का खूब शिकार होता है । इसकी खाल से कोट बनाए जाते हैं । इस की खाल बहुत मुलायम व गरम होती है । सील से चमड़ा तथा तेल बरामद किया जाता है ।

चित्र 8•12 "कयाक" नाव।

नदियों झीलों और सागर में अनेक जानवर, जैसे सील मछली, वालरस, व्हेल मछली मिलती हैं । ऐसे जानवरों का ये कैसे शिकार करते हैं ? गर्मी के मौसम में जब नदी, झील व सागर में पानी होता है तब वे नावों में जाकर उनका शिकार करते हैं । पर कैसी होती है इनकी नाव ?

जानवरों की खाल को हड्डी या लकड़ी के ढांचे पर मढ़कर यह लोग नाव बनाते हैं । ऐसी नाव को 'कयाक' कहते हैं ।

सर्दी में जब पानी पर बर्फ जम जाती है यह लोग बर्फ में छेद करके हारपून से सील मछली का शिकार करते हैं ।

हथियारों में तीर कमान का इस्तेमाल अभी भी यहां होता है । इसके अलावा बड़े-बड़े जानवरों की लंबी हड्डियों से यह लोग एक नुकीला हथियार बनाते हैं, जिसे हारपून कहते हैं । चित्र (8•11) में हारपून को देखो । आजकल तो कई जगहों पर बन्दूक आदि आधुनिक हथियार भी पहुंच गए हैं ।

चित्र 8•9 वालरस

वालरस :(चित्र8•9) यह भी एक तैरने वाला जानवर है और इसका संबंध सील परिवार से है । लेकिन यह सील से बहुत अलग दिखता है । हाथी की तरह इस के दो बड़े-बड़े दांत होते हैं, और लंबी-लंबी मूंछ होती है । एक नर वालरस का वजन 1000 किलो से भी अधिक होता है । इतना भारी भरकम होने के बावजूद भी यह जानवर चतुराई से तैरता है । अपनी मूंछ से यह कीचड़ को छानकर पानी में रहने वाली अनेक मछलियों को खाता है । वालरस बड़े-बड़े झुंडों में इकट्ठे रहते हैं ।

इन जानवरों के अलावा टुंड्रा प्रदेश में खरगोश, लोमड़ी जैसे जानवर भी पाए जाते हैं और कुछ पक्षी भी ।

पशुपालन : सोवियत रूस के टुंड्रावासियों की विशेषता यह है कि इन्होंने रेनडियर को पालतू बना लिया है । रेनडियर इन लोगों के जीवन का एक प्रमुख साधन है । यह वहां की गाड़ी खींचता है, इस पर सवारी की जाती है और इसका मांस खाया जाता है । इसकी खाल से तम्बू व नाव बनती हैं और इसकी हड्डियों से औजार भी । अधिकतर रेनडियर-पालक 20-25 रेनडियर रखते हैं । मगर कुछ कबीलों के पास सैकड़ों रेनडियर भी होते हैं ।

तुम्हें अब तक स्पष्ट हो गया होगा कि इनका जीवन इनके जानवरों पर ही निर्भर है । इन लोगों का कपड़ा भी इन्हीं जानवरों की देन है । रेनडियर, करेबू व अन्य जानवरों की रोयेंदार खाल से इन लोगों के कपड़े बनते हैं ।

चित्र 8•13

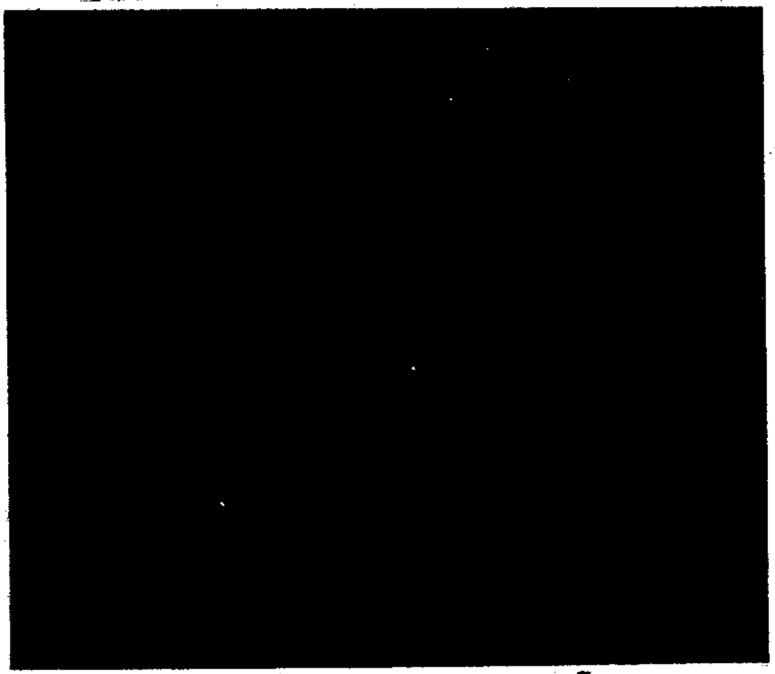

चित्र 8•14

इन दो चित्रों को देखकर तुम अंदाज लगा सकते हो, कि टुंड्रा प्रदेश के लोगों के कपड़े कैसे होंगे । उनके कपड़े जूते, मोजे, टोपी सब रोयेंदार खाल के ही होते हैं ।

तुमने देखा कि टुंड्रा के लोग जानवरों का शिकार करते हैं और कुछ पशु भी पालते हैं । इस कारण वे एक ही जगह बसकर नहीं रह पाते । शिकार की तलाश में और चारे की तलाश में घूमते रहते हैं । वे गर्मी के मौसम में टुंड्रा प्रदेश में रहते हैं । उस समय वहां छोटे पौधे उग आते हैं । इन पर उनके रेन्डियर चरते हैं । फिर अन्य कई जानवर यहां इस समय शिकार के लिए मिलते हैं । जाड़ा आने पर पूरे प्रदेश में वनस्पति मर जाती है, बर्फ जम जाती है और अंधेरा ही अंधेरा रहता है । जानवर भी इस प्रदेश को छोड़ जाते हैं । यहां के लोग भी अपना घर बार बांधकर, जानवरों को साथ लेकर दक्षिण के वनों की ओर चल पड़ते हैं ।

दक्षिण के वनों में भी खूब ठंड पड़ती है, पर टुंड्रा प्रदेश से कम । यहाँ सूरज भी आसमान में चमकता है । इस तरह दक्षिण के वनों में फिर भी जलाऊ लकड़ी, चारा और शिकार मिल जाता है । गर्मी के दिनों में ये लोग फिर टुंड्रा प्रदेश में लौट आते हैं ।

इन लोगों का साल का बहुत सा समय एक जगह से दूसरी जगह घूमने में निकल जाता है ।

घूमते रहने के कारण यह लोग अधिकतर तंबुओं में ही रहते हैं । चित्र 8·15 को देखो ।

ये तम्बू लकड़ी या हड्डियों के ढाँचे पर खाल को फैलाकर बनाए जाते हैं । ठंड के मौसम में तम्बू पर बर्फ और मिट्टी बिछा देते हैं ताकि तम्बू के अंदर की गर्मी बाहर न निकले । तम्बू के अंदर चर्बी या लकड़ी जलायी जाती है । एक और प्रकार का घर तो पत्थर और

चित्र 8·15 खाल का तम्बू ।

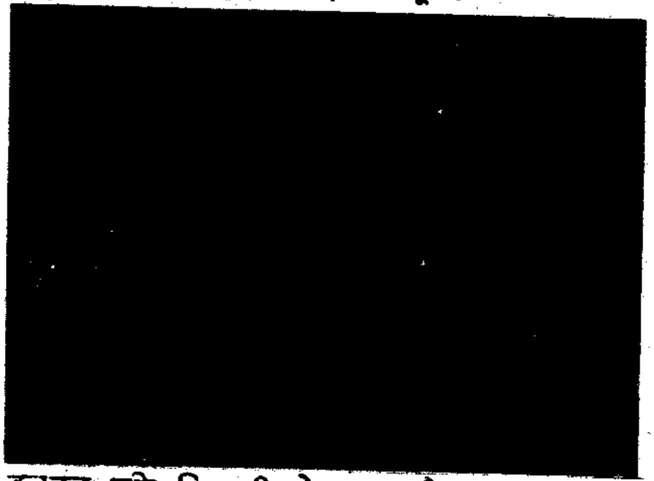

दलदल की मिट्टी से बना है, चित्र 8·16 में देखो ।

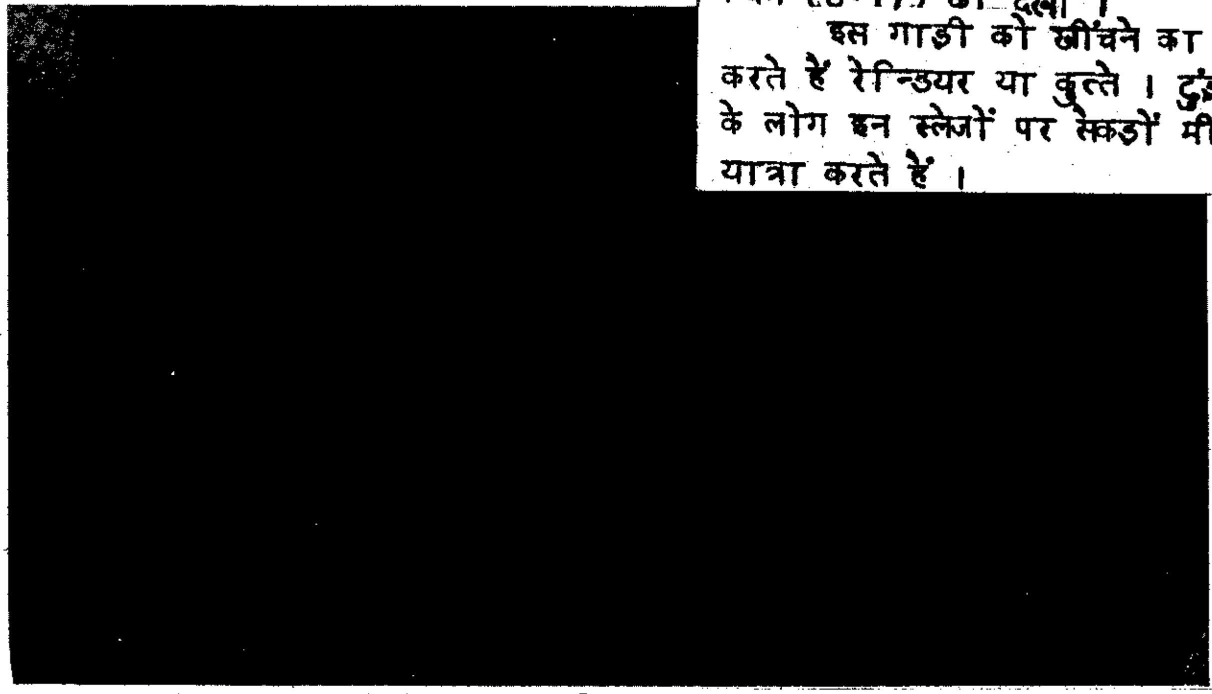

चित्र 8·16 दलदल की मिट्टी से ढंका घर ।

हमने देखा कि ये लोग लगातार एक जगह से दूसरी जगह चलते रहते हैं । तो अपना सामान कैसे ढोते होंगे?

इसके लिए यह लोग बर्फ पर चलने वाली एक गाड़ी इस्तेमाल करते हैं, जिसे स्लेज कहते हैं । यह जानवरों की हड्डियों से बनी होती है । इसमें पहिए होते ही नहीं हैं क्योंकि इसे तो आमतौर पर बर्फ पर ही खींचना होता है। स्लेज बर्फ पर फिसलती हुयी चलती है । चित्र (8·17) को देखो ।

इस गाड़ी को खींचने का काम करते हैं रेन्डियर या कुत्ते । टुंड्रा प्रदेश के लोग इन स्लेजों पर सैकड़ों मील की यात्रा करते हैं ।

चित्र 8•17 स्लेज गाडी । इसके पहिए क्यों नहीं हैं ?

रहन सहन में बदलाव : समय के साथ-साथ टुंड्रा प्रदेश के लोगों के रहन-सहन में बदलाव आने लगे हैं । सोवियत रूस की सरकार इस प्रयत्न में है कि यहां के लोग एक जगह पर बसकर रहें और एक ही जगह रेन्डियर के विशाल झुण्ड पाले जाने का इंतजाम हो ।

लकड़ी के घर, बिजली, मोटर से चलने वाली "कयाक" व स्लेज, बंदूक आदि चीजें यहां पहुंचने लगी हैं । इस प्रदेश में अनेकों जगह खनिज तेल, हीरे, सोना आदि मिलता है । इस कारण अन्य प्रदेश के लोग अधिक मात्रा में वहां जाने लगे हैं । टुंड्रा प्रदेश तक हवाई - जहाज का सफर भी शुरू हो गया है। चित्र 8•18 को देखो ।

- क्या तुम टुंड्रा प्रदेश जाना चाहोगे? क्यों ? ऊपर दिए पाठ से कुछ कारण बताओ ।

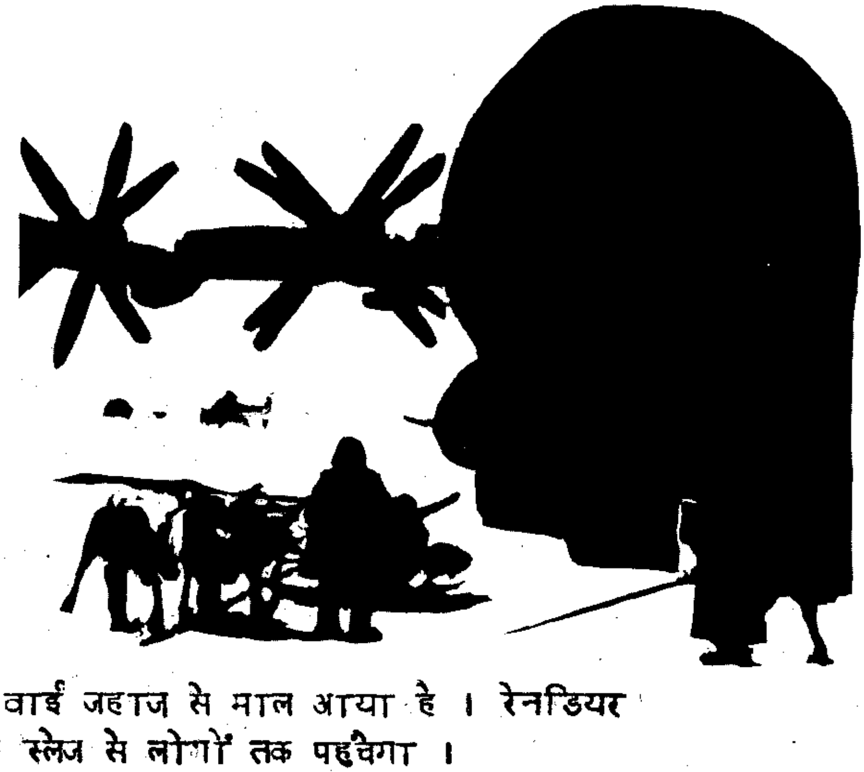

चित्र 8•18 हवाई जहाज से माल आया है । रेनडियर के स्लेज से लोगों तक पहुंचेगा ।

अभ्यास के लिए प्रश्न -

1. टुंड्रा प्रदेश में दिन रात का चक्र कैसा होता है ? लिखो ।

2. इंडोनेशिया तथा टुंड्रा प्रदेश में तुलना कर के बताओ कि दोनों जगहों पर रोज़ आकाश में सूर्य के पथ में क्या अन्तर है ?

3. टुंड्रा प्रदेश में कैसी वनस्पति होती है ? यह प्रदेश वृक्ष विहीन प्रदेश क्यों कहलाता है ?

4. टुंड्रा प्रदेश में गर्मी का मौसम कैसा होता है ? बताओ ।

5. यहां के लोग खेती क्यों नहीं करते ?

6. टुंड्रा प्रदेश के लोग जाड़े में कहां चले जाते हैं, और क्यों ? वे गर्मी में फिर टुंड्रा प्रदेश क्यों लौट आते हैं ?

7. यहां के लोग बिना पहिए की गाड़ी क्यों बनाते हैं ?

8. यहां के लोग अपने घर कैसे बनाते हैं ?

9. टुंड्रा प्रदेश में बहुत कम लोग क्यों रहते हैं जबकि अपने देश में बहुत लोग रहते हैं ?

10. तुमने अब तक तीन जगहों के लोगों के बारे में पढ़ा है - इंडोनेशिया, जापान और टुंड्रा । इनमें से कहां के लोग मुख्य रूप से कारखानों पर निर्भर करते हैं, कहां के लोग वनस्पति पर अधिक निर्भर रहते हैं और कहां के लोग जानवरों पर ?

****

पाठ - ९ ईरान

भारत के पश्चिम में देश है ईरान। एशिया के मानचित्र में देखो वह कहाँ स्थित है।

● भारत से यदि हम जमीन के रास्ते ईरान जाना चाहें तो हमें कौन से अन्य देश पार करने होंगे ?

यदि बम्बई से जलयान में बैठकर हम ईरान जाना चाहें तो किन खाड़ियों व सागरों को पार करना होगा ?

● ईरान के पड़ोस में और कौन से देश हैं ?

ईरान के उत्तर में "केस्पियन सागर" नाम की एक बड़ी झील है। इसे भी एशिया के नक्शे में देखो।

ईरान भूमध्य रेखा से कितनी दूर है - ग्लोब में देखो।

यह रहा ईरान देश का नक्शा। (९·१)

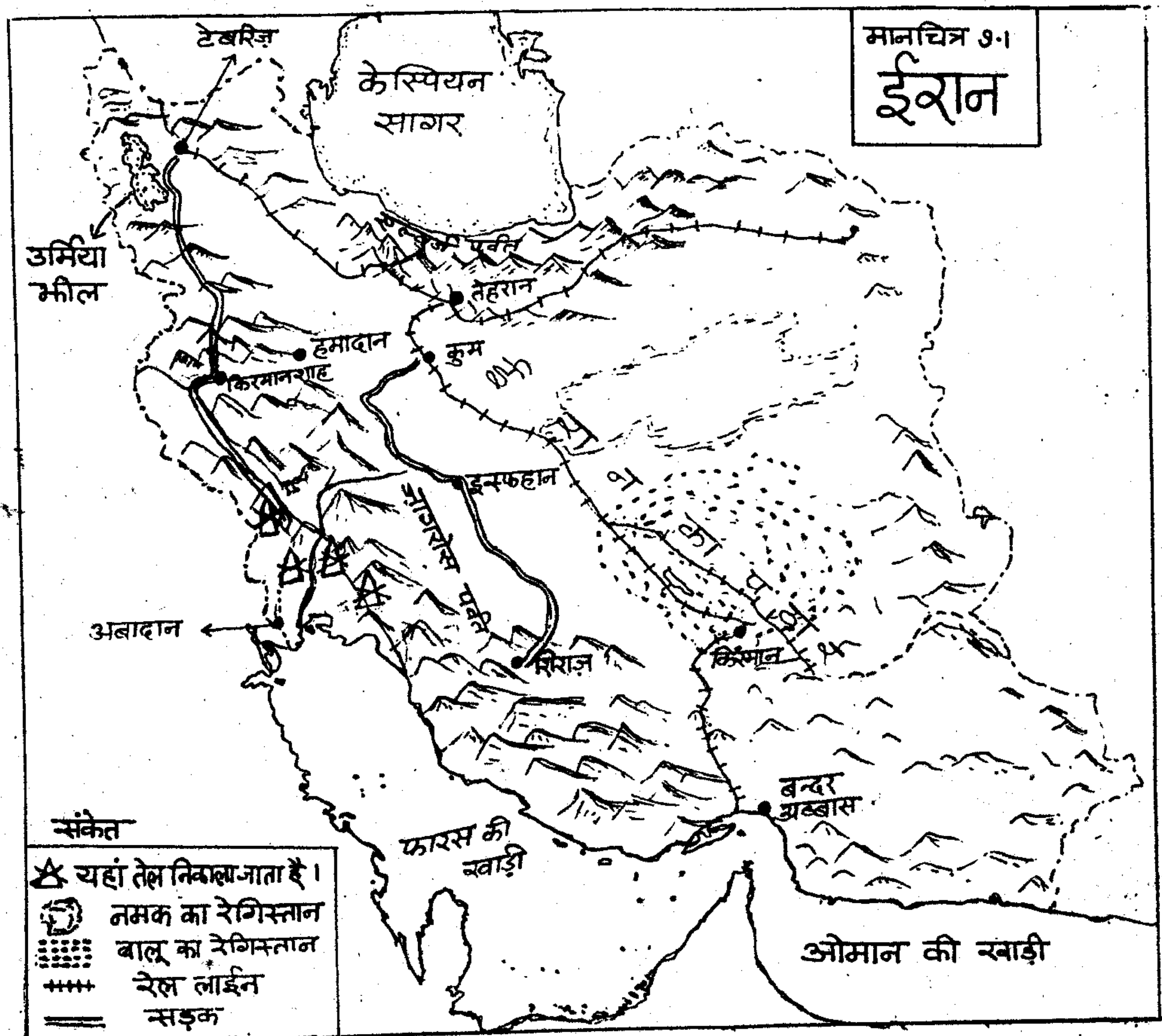

इसे ध्यान से देखोगे तो पाओगे कि ईरान देश का आकार कटोरे जैसा है ।

- ईरान देश के किनारे-किनारे पर चारों ओर क्या हैं ? उनके नाम नक्शे में से जानो ।

किनारों से हट कर अब ईरान देश के बीच में आओ ।

- यह इलाका कैसा है - नक्शा देखकर वर्णन करो ।

ईरान में समुद्र तट के इलाके कौन से हैं - पहचान कर अपने पेन से उन पर लकीर फेर दो ।

ईरान में कोई बड़ी नदी नहीं बहती । जैसे उसके पड़ोसी देश ईराक में दजला और फरात नाम की दो बड़ी नदियों के मैदान हैं, वैसे मैदान ईरान में नहीं हैं ।

अब चलो, बारी-बारी, ईरान के बीच के पठार, फिर उसके पहाड़, फिर उसके समुद्र तट को देखें - वहां के लोगों के जीवन को समझें ।

ईरान का अधिकतर भाग पठार है । (पठार क्या होता है - अगर तुम नहीं जानते हो तो गुरूजी से पूछ कर समझो ।)

ईरान का पठार बिलकुल सूखा इलाका है । यहां बहुत ही कम वर्षा होती है । तुम्हें पठार में कुछ रेगिस्तान भी दिखे होंगे । बहुत ही कम वर्षा के कारण नदियों में पानी भी कम बहता है । चारों ओर के पहाड़ों से बह कर आई छोटी-छोटी नदियां बीच के पठार में आकर सूख जाती हैं ।

तुम जानते हो कि जब अपने यहां भी खूब गर्मी पड़ती है तो पेड़-पौधे सूख जाते हैं, नदियों, नालों में पानी कम हो जाता है । ऐसे में पानी न गिरे तो हालत और भी खराब हो जाती है ।

ईरान के पठार में लगभग पूरे साल ऐसी सूखे की स्थिति बनी रहती है । यहां तक कि दक्षिण और पूर्व में जो पहाड़ हैं और दक्षिण में पहाड़ों के नीचे जो समुद्र तट है, वहां भी बहुत कम वर्षा होती है । ईरान के और भागों में इतना सूखा मौसम नहीं होता । पश्चिमी और उत्तरी भागों में तो अच्छी खासी वर्षा हो जाती है । इस लिए वहां नदी नाले बहते हैं । उनके किनारे उपजाऊ मिट्टी के मैदान होते हैं, जहां खेती भी की जाती है । इन इलाकों में जाड़े के मौसम में वर्षा होती है । पहाड़ों पर बर्फ गिरती है, जो पिघल कर नदियों में बहती है ।

ईरान में जाड़े में खूब ठंडा मौसम रहता है । जैसा पंजाब या कश्मीर में । लेकिन गर्मी में गर्मी भी बेहद होती है । जैसे अपने यहां गर्मी का मौसम होता है, उससे भी कुछ अधिक ।

तुम जानते हो कि जब तक वर्षा नहीं होती मई, जून में कितनी गर्मी होती है । ईरान के पठार में तो वर्षा ही बहुत कम होती है, तो सोचो गर्मी कितनी ज्यादा होती होगी ?

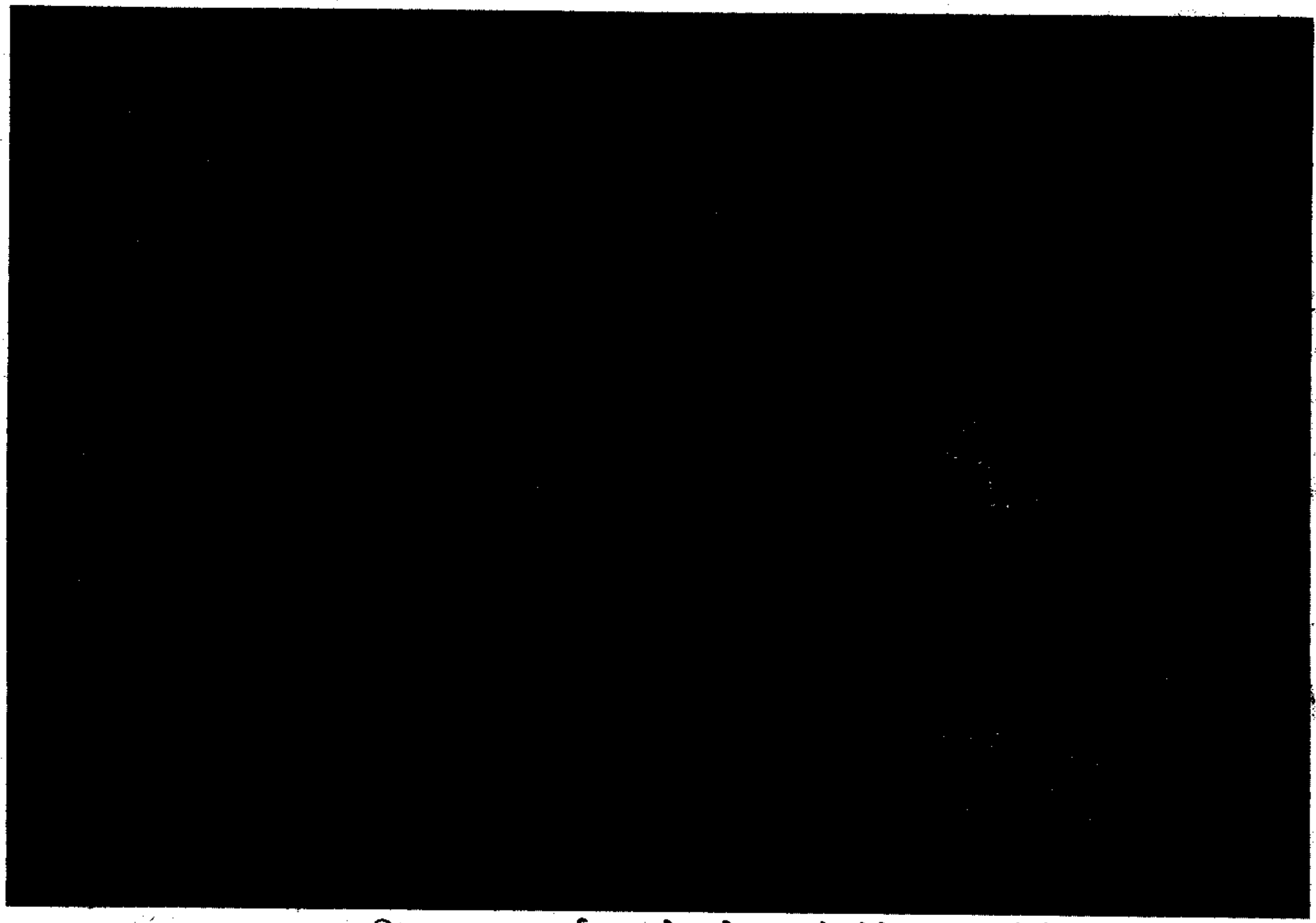

चित्र 9•2 ईरान के सूखे इलाके ऐसे दिखते हैं -

ईरान के सूखे इलाके

ऐसे सूखे इलाके में क्या पेड़ उगेंगे ? थोड़ी वर्षा में जंगल तो हो नहीं सकते- सिर्फ कुछ घास व झाड़ियां उग पाती हैं । चित्र (9•2) देखो

- क्या पहाड़ों पर कुछ वनस्पति है ? पहाड़ों के नीचे क्या उगा दिखता है ? इन चित्रों से वहां के लोगों के बारे में तुम क्या जान रहे हो, 5-6 वाक्यों में लिखो ।

  यहां की सूखी और तेज गर्मी की जलवायु में क्या खेती हो सकती है ? क्या ऐसे क्षेत्र में बहुत ज्यादा लोग रह सकते हैं ? यदि लोग हों तो उन्हें क्या भोजन मिलेगा ?

ईरान के सूखे इलाकों में रहने वाले लोगों का मुख्य धंधा पशुपालन ही है । पशुपालन के सहारे कई हजार लोग रहते हैं । यहां कई पशुपालक जातियां हैं जिन्हें लुर, बख्तियार, बलूची, काश्काई आदि नामों से जाना जाता है । ये कबीले झाड़ियों और घासों पर अपने भेड़-बकरी चराते फिरते हैं ।

- ऊपर दिए चित्रों में और कौन सा जानवर है ? यह किस काम आता होगा ?
  क्या तुम सोच सकते हो कि ये लोग भेड़-बकरी की जगह गाय भैंस क्यों नहीं पालते ?

ये पशुपालक कबीले दोनों तरफ पहाड़ की तलहटी में रहते हैं । जाड़े में पहाड़ पर तो ठंड खूब रहती है, इसलिए नीचे एक तरफ पठार पर व दूसरी तरफ समुद्र के तट पर, वे अपने जानवर चराते फिरते हैं (चित्र 9·3)।

गर्मी आते-आते जब नीचे का चारा भी खत्म होने लगता है, ये लोग पहाड़ों पर अपने जानवरों को चराने चल पड़ते हैं । गर्मी में पहाड़ों पर बर्फ के पिघलने से कुछ हरियाली हो जाती है, नई मुलायम घास उग आती है।जबकि नीचे पठार पर तो गर्मी के मौसम में कुछ उगता ही नहीं । बताओ घास के अलावा जानवरों को और किस चीज की जरूरत होती है ? तो ये कबीले ऐसे भागों से होकर जाते हैं जहां उन्हें और उनके पशुओं को पानी मिल सके ।

जानवरों को लेकर घूमने वाले ये लोग अपना सामान लादने के लिए गधे और घोड़े भी पालते हैं । बहुत सूखे भागों में इस काम के लिए ऊंट भी पालते हैं ।

- बहुत सूखे भागों में ऊंट ज्यादा काम क्यों देता है - बता सकते हो ?

अपने भेड़ों को चराते फिरते ये लोग क्या एक जगह मकान बनाकर रह सकते हैं ? तुम ध्रुवीय प्रदेश के पशुपालक लोगों के बारे में भी पढ़ चुके हो । वे लोग अपने घर रेन्डियर की खाल के बनाते हैं ।

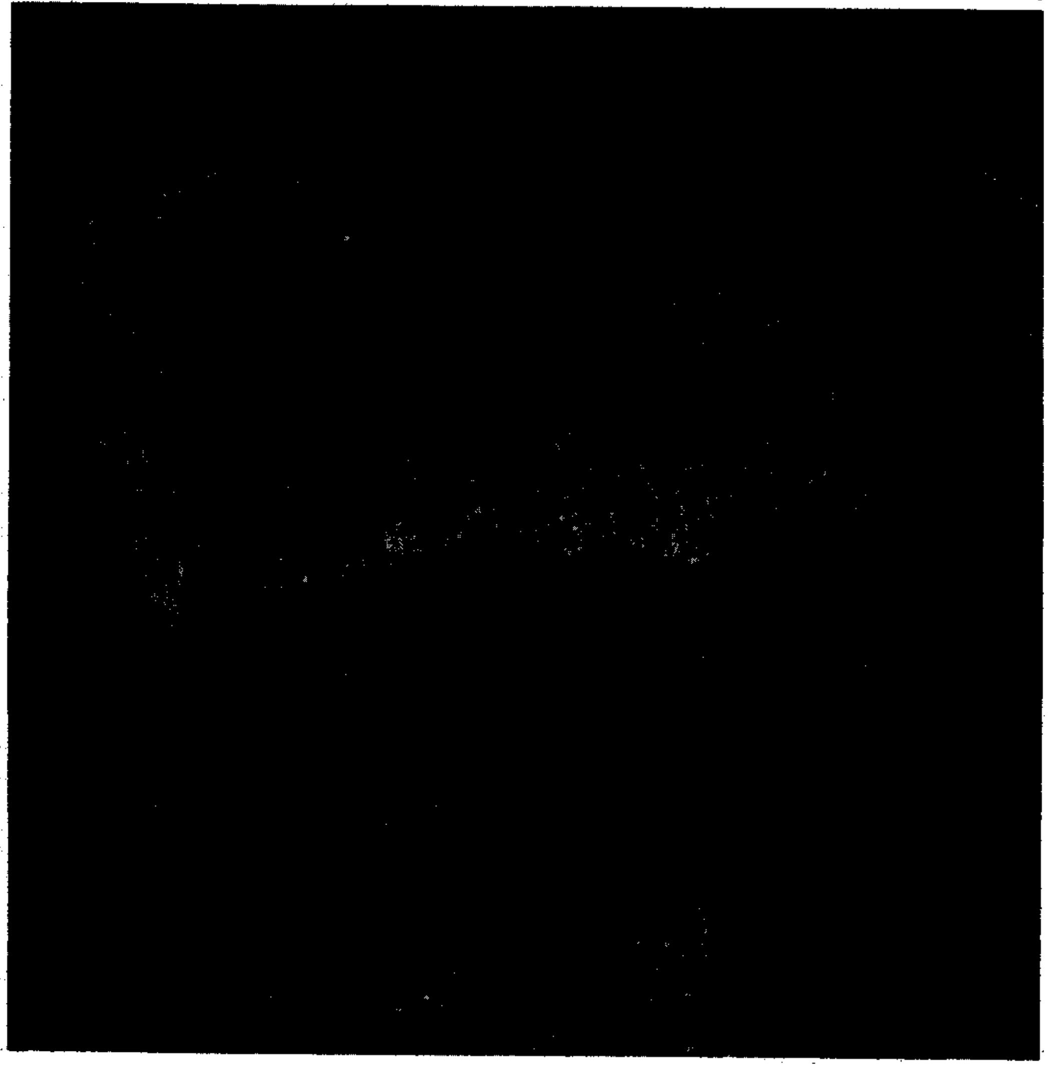

चित्र 9·3

एक बूढ़ा काश्काई चरवाहा अपनी भेड़ों को ऊंचे पहाड़ों पर गर्मी में उगी मुलायम घास चराते हुए । वह एक महीने पहले फारस की खाड़ी के पास के तट से चला था और 200 मील लंबी यात्रा पूरी कर यहां पहाड़ों के चारागाहों पर पहुंचा है ।

चित्र 9.4

एक पशुपालक कबीले का केम्प ।

चित्र 9.4 में देखो ईरान के पशुपालक लोगों का एक केम्प ।
उनके तम्बू किस चीज के बने होंगे ?

भेड़ों से इन्हें बहुत ऊन मिलता है । ऊन का कपड़ा या नमदा बनाकर उसे लकड़ी के ढाँचे पर तान कर तम्बू बनाए जाते हैं ।

लोग कुछ दिन इन तम्बुओं में रहते हैं, फिर चारे की तलाश में आगे बढ़ना होता है तो तम्बू उखाड़कर, जानवरों पर लादकर दूसरी जगह चल देते हैं ।

चित्र 9.5 नखलिस्तान

इन लोगों को बहुत सा भोजन भी अपने पशुओं से मिल जाता है, जैसे-दूध व माँस । जरूरत की अन्य चीजें ये लोग दूसरे लोगों से खरीद लेते हैं । बदले में उन्हें चमड़े व ऊन की बनी चीजें दे देते हैं ।

नखलिस्तान

पठार के बीच में बहुत सूखे भाग में रेगिस्तान हैं - जहाँ सिर्फ रेत ही रेत मिलती है । जैसे अपने देश में राजस्थान में थार रेगिस्तान है । ईरान में भी रेगिस्तानी इलाकों में केवल वहीं लोग रहते हैं जहाँ पानी के लिए कुंए या फिर सोते हैं या जहाँ जमीन के नीचे पानी मिल जाता है । ऐसी जगहों को नखलिस्तान कहा जाता है ।

चित्र (9.5) में देखो एक नखलिस्तान का दृश्य । पानी के कारण यहाँ पेड़-पौधे दिख रहे हैं । यह किस चीज के

पेड़ हैं? खजूर ऐसे प्रदेशों में बहुतायत से होता है ।

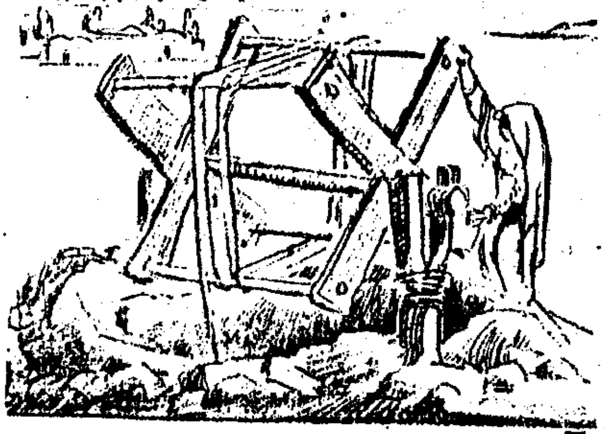

अधिक पानी मिलने पर नखलिस्तान में रहने वाले लोग सिंचाई कर के कुछ अनाज भी उगा लेते हैं ।
कई जगहों पर तो पानी के लिए जमीन के नीचे नालियां बना ली गई हैं । ये कई मील लम्बी होती हैं । चित्र 9·6 देखो । पानी के लिए इन लोगों को कितना प्रबन्ध करना होता है ।

चित्र 9·6 भूमिगत नालियां ।

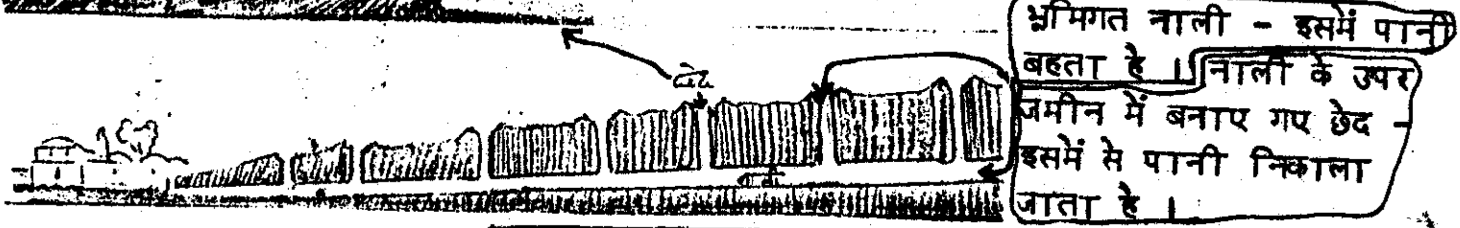

उत्तर और पश्चिम के पहाड़

बीच के पठार और रेगिस्तान से निकलकर चलो ईरान के पश्चिम और उत्तर क पहाड़ों पर पहुंचे । तुम जान चुके हो कि यहां काफी वर्षा होती है । यहां पहाड़ों पर जंगल भी मिलते हैं । चित्र 9·7 देखो । चित्र देखकर लगता है न कि यहां कुछ वर्षा होती होगी ।

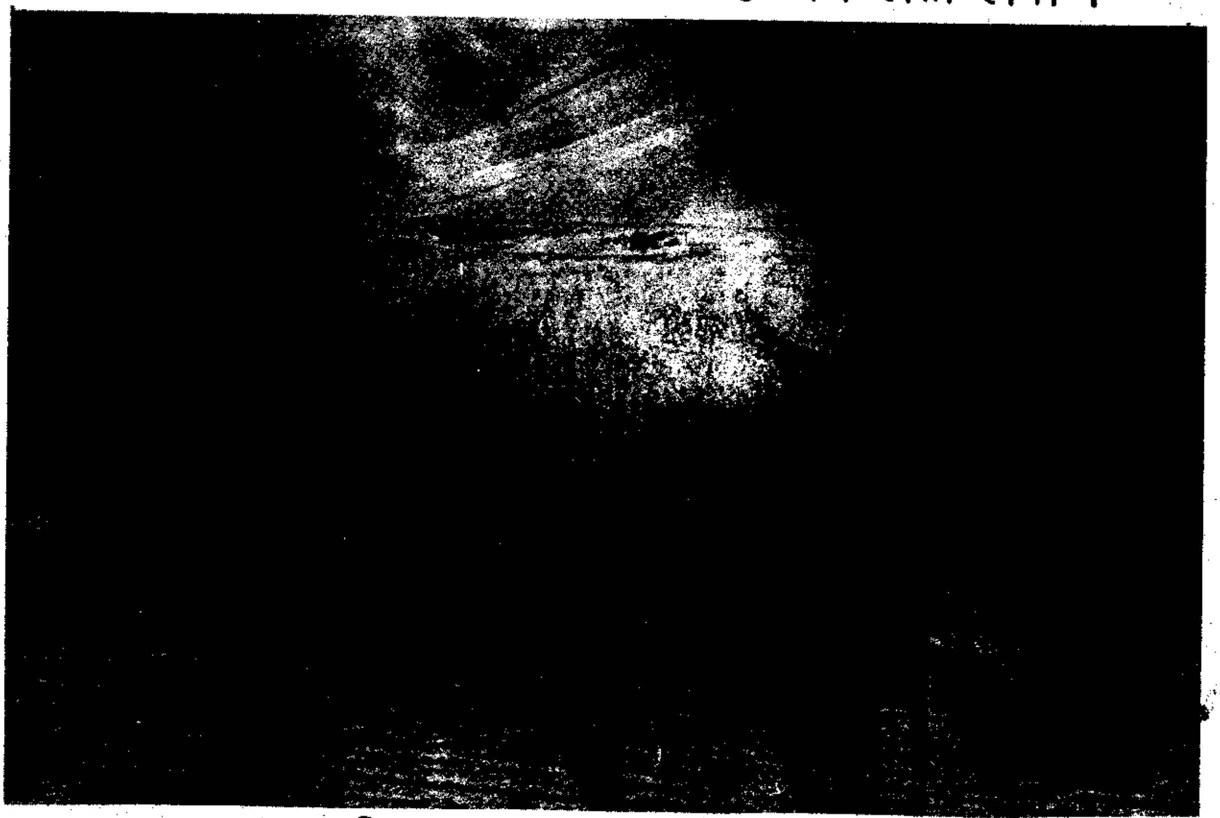

चित्र 9·7 पहाड़, जंगल व खेत ।

- इस जंगल में कैसे वृक्ष हैं ? नुकीली पत्ती वाले या चौड़ी पत्ती वाले ?

बहुत ऊंचे पहाड़ों पर जहां बर्फ जमी रहती है, नुकीली पत्ती के कोण-धारी पेड़ भी मिलते हैं ।

जहां भी पहाड़ों के बीच थोड़ी भी खेती के लिए जमीन मिल गई है, लोग गांव बसाकर रहने लगे हैं । तुमने जापान और इंडोनेशिया में भी देखा था कि पहाड़ों पर बहुत ज्यादा लोग नहीं रहते - बस, कहीं-कहीं छोटी बस्तियां होती हैं । ईरान की इन पहाड़ी बस्तियों के लोग अपने खेतों पर गेंहू, कपास, तम्बाकू, जौ, चुकन्दर और तरह तरह के फल पैदा कर लेते हैं ।

इन खेती किसानी करने वाली बस्तियों को घुमक्कड़ कबीलों के हमले का डर बना रहता है । तो ये लोग ऊंची दीवारों के घर बनाते हैं । हमले से बचाव के लिए शहर के चारों ओर दीवार व मजबूत दरवाजे भी बनते हैं । ये लोग मुख्य रूप से रोटी और मांस खाते हैं । फल व सब्जी भी खाते हैं ।

केस्पियन सागर के तट का मैदान

अब चलो पहाड़ों से उतरकर ईरान के बिलकुल उत्तर में पहुंचें । यह केस्पियन सागर के तट का मैदानी भाग है । यहां खूब वर्षा होती है । अच्छी खेती होती है । तरह-तरह की फसलें, यहां तक कि चावल भी उगाया जाता है ।

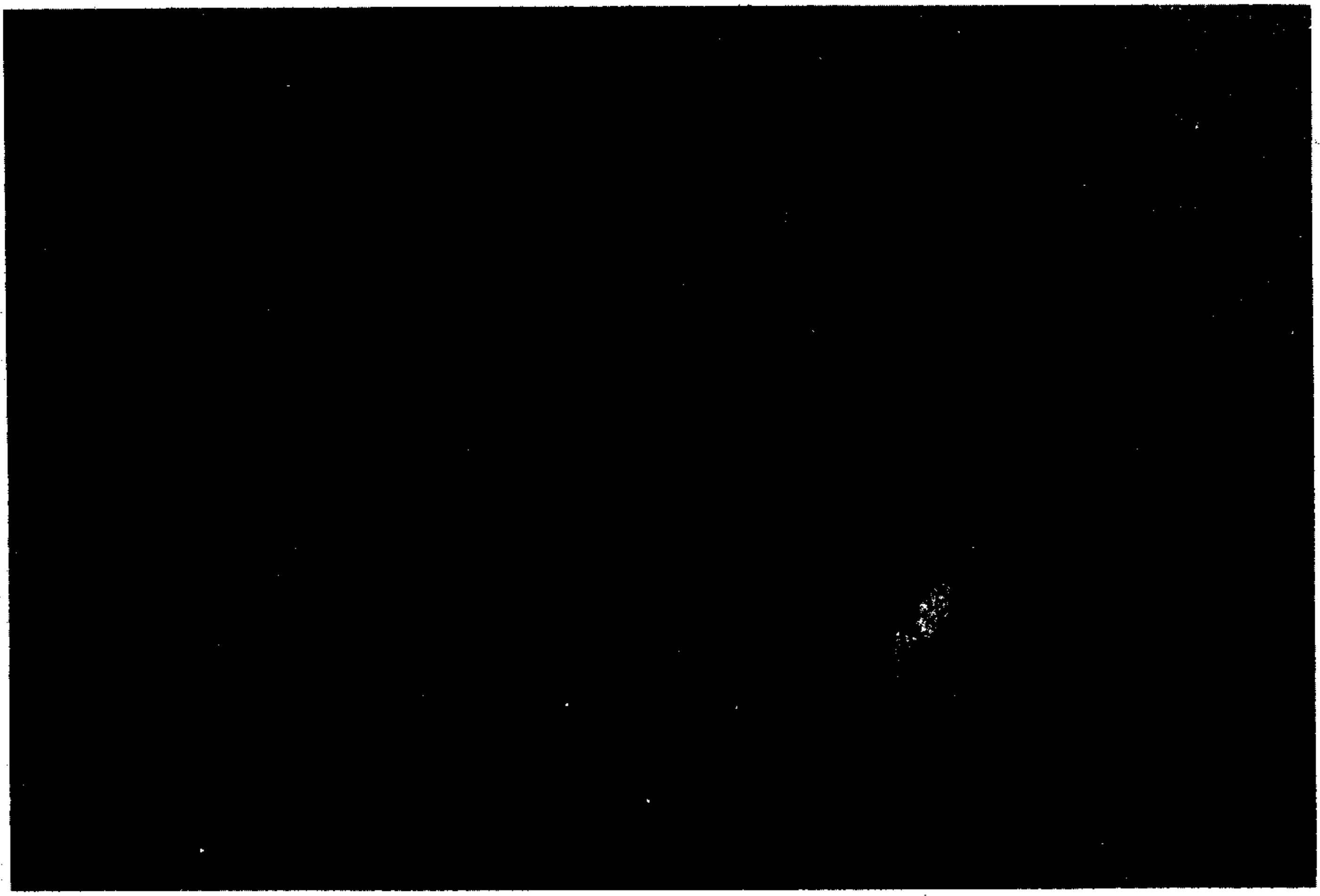

चित्र 9•8 केस्पियन सागर के तट के मैदान

इस इलाके के लोग रोटी के बजाय चावल ज्यादा खाते हैं । यहां फल और मेवे भी खूब होते हैं । यहां का एक चित्र देखो (9•8) पहाड़ों के नीचे पेड़ और फिर हरे भरे खेत दिखते हैं ।

इस चित्र में तुम वहां के लोगों का पहनावा भी देख सकते हो । औरतें ढीला पजामा और कुर्ता पहनती हैं और सिर पर कपड़ा बांधती हैं । ईरान में आदमी कमीज और ढीला पजामा पहनते हैं । जाड़े में लम्बा कोट भी पहनते हैं ।

ईरान के नगर

ईरान जैसे सूखे देश में पानी का बहुत इंतजाम करना होता है । ईरान के नगर उन्हीं स्थानों पर बसे हैं जहां लोगों को पानी मिलता है ।
पर्वतों के बीच जहां पानी मिलता है, भूमिगत नालियों या सुरंगों से पानी नगरों तक लाया जाता है । परंपरागत व पुराने नगरों के बीच छोटी नहरें भी मिलती हैं ।

इस तरीके से आसपास की भूमि की सिंचाई कर के खेती भी होती है । कई जगह जमीन के नीचे टंकियां बना कर उनमें भी पानी इकट्ठा करके रखा जाता है ।

ईरान की राजधानी तेहरान है । तेहरान का चित्र देखो (9•9) । वह पर्वतों के नीचे बसा है ।

- ईरान का मानचित्र देखकर बताओ कि तेहरान के पास कौन से पर्वत हैं ?

ईरान के अन्य प्रमुख नगर इस्फहान शिराज, अबादान, किरमानशाह आदि हैं । मानचित्र में इन नगरों को ढूंढो ।

चित्र 9•9. तेहरान

ईरान में आबादी भारत से बहुत कम है । पानी की प्राप्ति व भूमि के अनुरूप ही लोग बस गए हैं । जहां खेतिहर भूमि है वहां अधिक लोग बसे हैं ।

पर, एक अन्य बहुमूल्य चीज ने ईरान को बहुत धन दिया है । वह है, खनिज तेल ।

ईरान में खनिज तेल

इंडोनेशिया में खनिज तेल निकालने और उसके उपयोग की बात तुमने पढ़ी थी । ईरान में खनिज तेल पुराने समय से थोड़ा बहुत जलाने के काम आता था । उस समय खनिज तेल रिस कर धरती के उपर बहने लगता था । उसको लोग इकट्ठा कर के जलाते थे ।

पिछले सौ-डेढ़ सौ सालों से खनिज तेल मशीनों, वाहनों, हवाई जहाज आदि चलाने के काम में बहुत आने लगा। तब से इसकी मांग बढ़ी ।

खोज के बाद ईरान के पश्चिमी भागों में खनिज तेल के कई क्षेत्र मिले । इनमें तेल का भंडार भी बहुत था । मांग के कारण नलकूपों द्वारा बड़े पैमाने पर तेल निकाला जाने लगा । (चित्र 9•10)

तेल निकालकर, पाईप लाईनों द्वारा फारस की खाड़ी तक लाया जाता है। आमतौर पर कच्चा तेल ही विदेशों को भेज दिया जाता है। चित्र (9•11) में तेल ले जाने वाली पाईप लाईनें देखो। कुछ तेल अबादान शहर के तेल शोधक कारखाने में साफ किया जाता है।

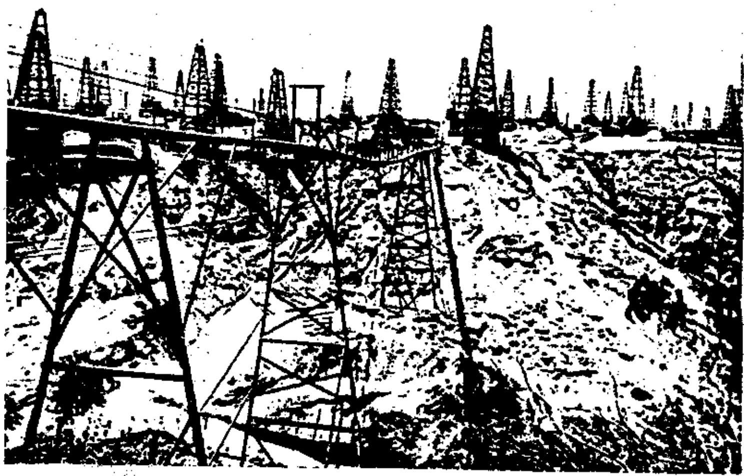

चित्र 9•10 जमीन में से खनिज तेल निकाला जा रहा है।

ईरान से बहुत सारे देश तेल खरीदते हैं, उनमें से प्रमुख हैं -

1• जापान	2• जर्मनी
3• युगोस्लाविया	4• रोमानिया
5• चेकोस्लोवाकिया	6• अमेरिका
7• इंग्लैंड (ग्रेट ब्रिटेन)	8• फ्रांस
9• नीदरलैंड	10• इटली

● इन देशों को संसार के मानचित्र में पहचानो। बताओ, तेल इन देशों को किस वाहन से भेजा जाता होगा?

तेल बेचने से ईरान को बहुत धन मिला है। इस धन से ईरान के लोगों ने सुख सुविधा के बहुत से साधन जुटा लिए हैं, जैसे- स्कूल, अस्पताल, सड़कें, वाहन और रोज काम की अनेक चीजें।

● क्या तुम पता लगा सकते हो कि अपने देश को खनिज तेल बेच कर धन मिलता है, या भारत ईरान व अन्य देशों से तेल खरीदता है?

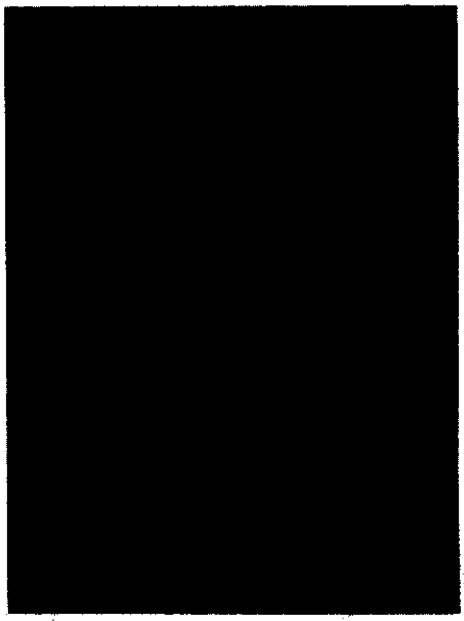

चित्र 9•11 तेल ले जाने की पाईप लाईनें।

अब ईरान में बहुत सी चीजों के कारखाने भी स्थापित हो गए हैं। ईरान में अब मोटर गाड़ियाँ, बिजली का सामान, कपड़ा, चमड़े व ऊन की चीजें बनने लगी हैं।

ईरान संसार भर में कालीनों के लिए प्रसिद्ध है । यहां ऊन की कालीनें बनाने का बहुत पुराना धंधा है । चित्र (9•12) देखो ।

प्राचीन काल से ईरान में धातु तराश और ढाल कर और लकड़ी को तराशकर सुन्दर वस्तुएं बनाने की कला भी विकसित है । पत्थर व मिट्टी के सुन्दर बर्तन भी यहां बहुत पुराने समय से बनाए जाते रहे हैं ।

चित्र 9•13 मिट्टी के बर्तन बनाते हुए ।

चित्र 9•12 कालीनें बनाकर सुखाई जा जा रही हैं ।

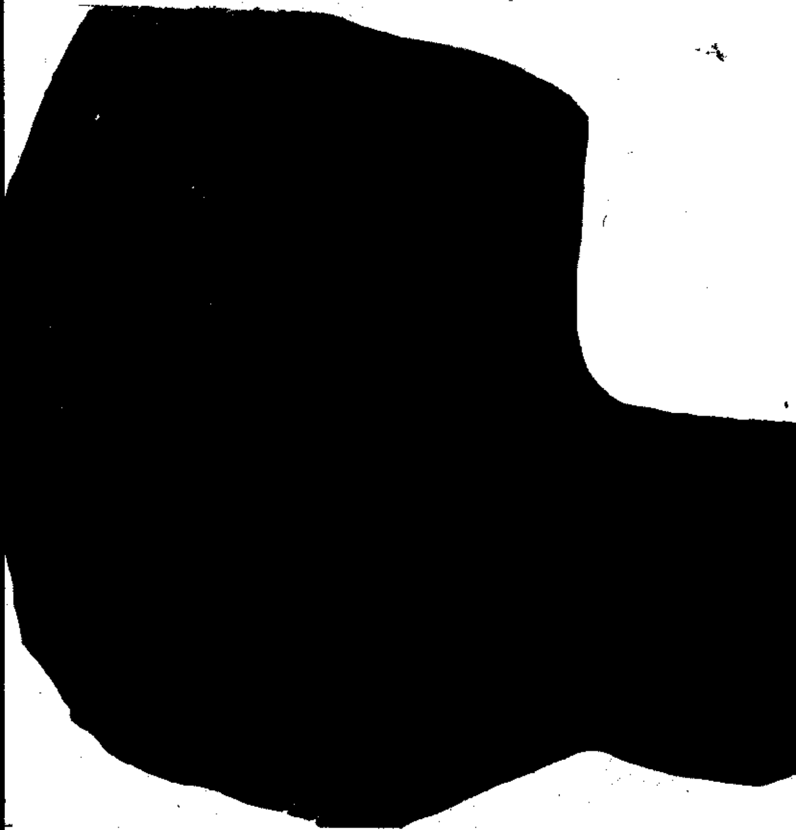

चित्र 9•14 बहुत ध्यान से बर्तन पर चित्रकारी करते हुए एक छोटा ईरानी लड़का ।

ईरान के कारीगरों द्वारा बनाई ये सुन्दर चीजें विदेशों में भी बेची जाती हैं ।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1• ईरान की भौगोलिक बनावट कटोरे जैसी क्यों बताई गई है ?

2• ईरान के बहुत से लोग पशु क्यों पालते हैं ? वे खेती क्यों नहीं करते ?

3• नखलिस्तान किसे कहते हैं ? यहां लोगों को बसने के लिए क्या मिलता है ?

4• ईरान के किस भाग में वन होते हैं और क्यों ?

5• उत्तरी ईरान में लोग खेती क्यों करते हैं ? वहां क्या पैदा होता है ?

6• खनिज तेल बेचने से ईरान को जो धन मिलता है उससे वहां किन सुविधाओं का इंतजाम किया गया है ?

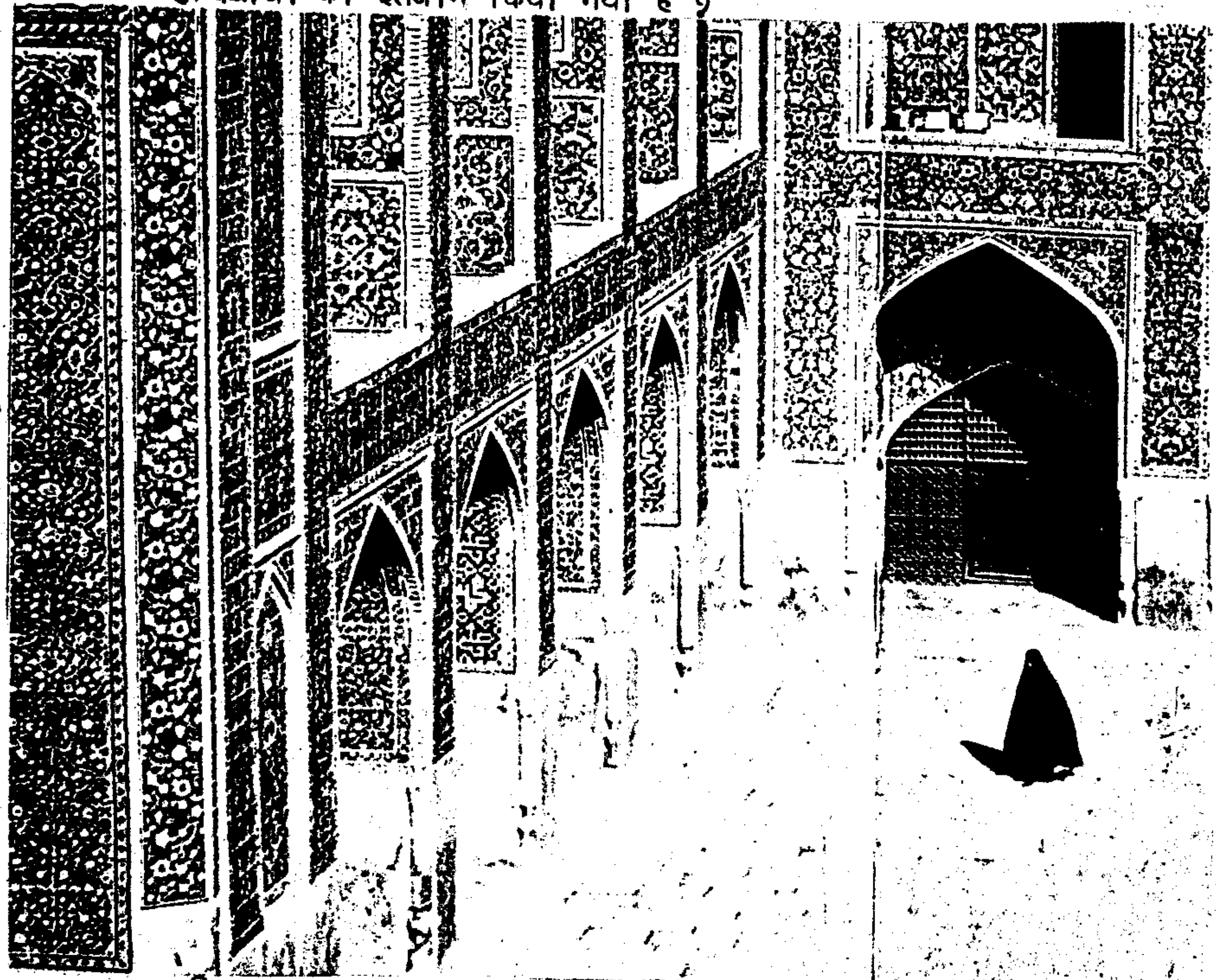

चित्र 9•5 खूबसूरत नक्काशी की गई एक ईरानी इमारत

पाठ - 10
एशिया : प्राकृतिक बनावट, वनस्पति तथा जलवायु

तुमने एशिया के कई हिस्सों के बारे में पढ़ा । क्या तुमने सोचा एशिया के और भागों की बनावट कैसी है ? वहां के पेड़ पोधे केसे हें और उनका वहां के जाड़े गर्मी व बरसात से क्या संबंध है ? इस पाठ में पूरे एशिया महाद्वीप की बनावट और उसमें पाये जाने वाले पेड़-पोधों के बारे में हम पढ़ेंगे ।

चित्र 10•1 सपाट समतल मेदान.

मेदान तथा नदियां : तुमने अपने चारों ओर समतल मेदान देखे होंगे । मेदानों में बहुत दूर तक चलते जाओ तब भी न कहीं जमीन अधिक उंची होती है और न नीची । यहां बहने वाली नदियों को देखो तभी पता चलता है कि यहां जमीन का ढाल किधर है । मेदान और इसमें बहने वाली नदी को रेखाचित्र 10•2 में देखो ।

- इस मेदान में ढाल किस तरफ है, पहचानो और तीर के निशान से दिखाओ ।

चित्र 10•2 मेदान और उसमें बहती नदी.

- क्या तुम्हारे आसपास का क्षेत्र मेदानी है ? उसका ढ़ाल किस दिशा में है ?

चित्र में देखो मेदान में क्या दिखता है ? बता सकते हो - अधिकतर मेदान खेतिहर प्रदेश क्यों हें ? यह इसलिए कि नदियां अपने साथ पहाड़ों से उपजाऊ मिट्टी बहाकर लाती हैं और अपने चारों ओर के मेदान में बिछाती रहती हैं ।

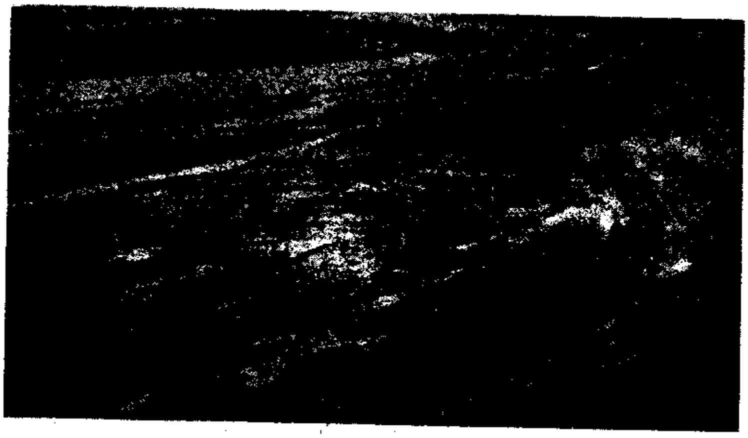

चित्र 10•3 मेदान में बहती नदी

● एशिया में ऐसे सपाट समतल मैदान कहाँ-कहाँ हैं ? उनमें कौन सी नदियाँ बहती हैं ?

यह तुम नक्शे (10•5) में देखकर पता करो और नीचे दी गई तालिकाएं भरो ।

एशिया की नदियों के नाम देखो और बताओ कि वे किन सागरों में गिर रही हैं ? क्या तुम कुछ अंदाज लगा सकते हो कि वे एशिया के मध्य से सागरों की ओर क्यों बह रहीं हैं ?

महासागर/सागर	इनमें ये नदियाँ गिरती हैं
प्रशान्त महासागर	
हिन्द महासागर	
अरल सागर	
आर्कटिक महासागर	
फारस की खाड़ी	

मानचित्र 10•6 में इन नदियों के मैदान देखो, कितने बड़े हैं ।
मानचित्र 10•6 में मैदानों को ढूंढो और उनके नामों की सूची बनाओ ।

मैदान	नदियों के नाम

इस वर्ष के पाठों में तुमने इनमें से किसी नदी के मैदान के बारे में नहीं पढ़ा । पर तुमने कक्षा पांच में भारत का भूगोल पढ़ते समय एक बड़े मैदान के बारे में पढ़ा था । कौन सा - याद है ?

<u>पर्वत तथा पठार</u> : इस वर्ष तुमने पर्वतों और पठार वाले देशों के बारे में जरूर पढ़ा है । शायद तुम खुद विन्ध्याचल या सतपुड़ा पर्वत पर गए हो । तुमने हिमालय पर्वत का चित्र भी अपनी-अपनी पुस्तकों में देखा होगा । पर्वत का चित्र 10•4 देखो और उसकी तुलना मैदान से करो ।

क्या पर्वत मैदान से अधिक ऊँचे हैं ? क्या पर्वतों पर कहीं समतल भूमि दिखती

चित्र 10•4 पहाड़

10·5 एशिया की नदियां

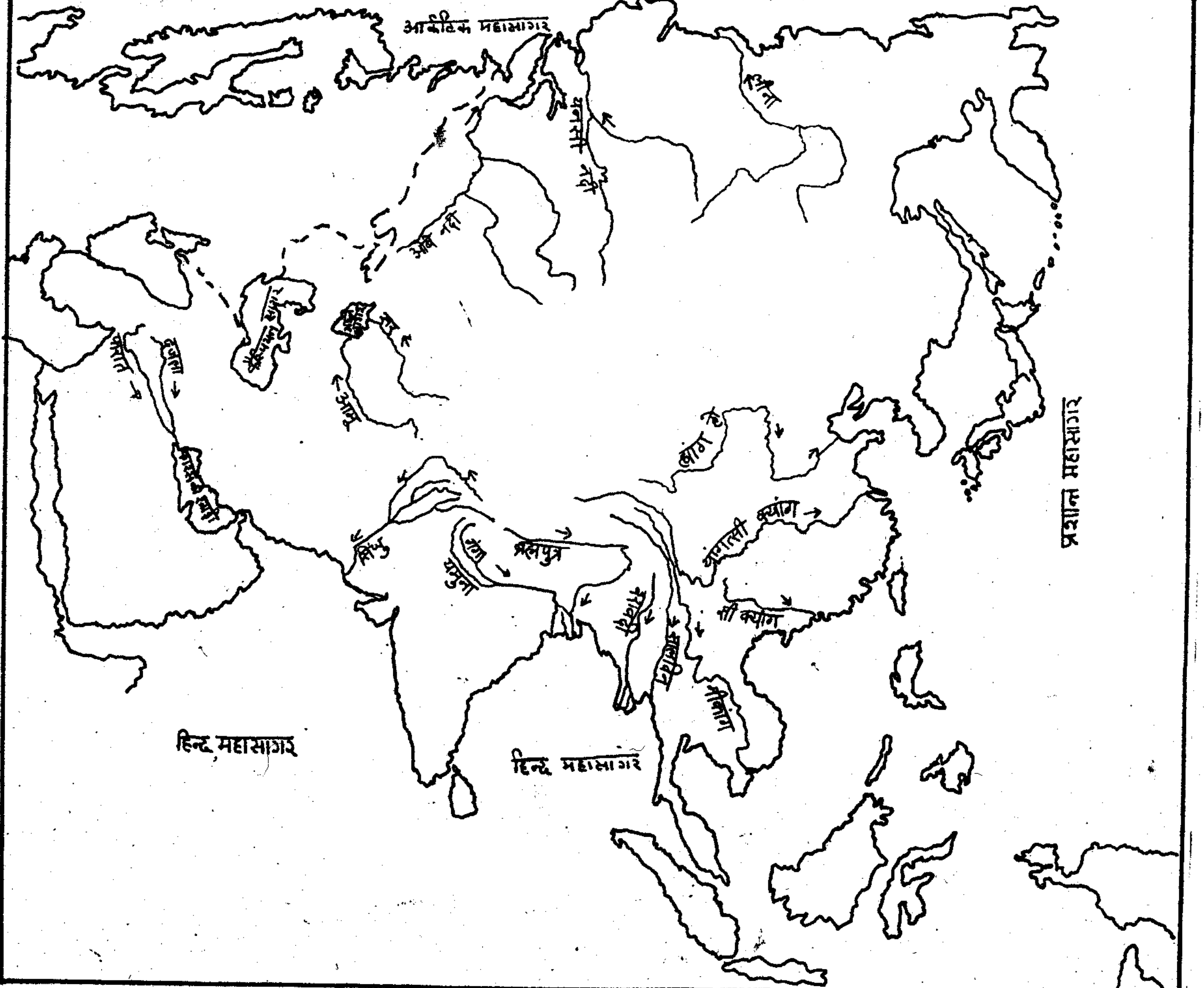
आर्कटिक महासागर
यनसी नदी
लीना
ओब नदी
सर
आमू
दजला
फरात
फारस की खाड़ी
सिंधु
गंगा
यमुना
ब्रह्मपुत्र
इरावदी
सालविन
मीकांग
यांगसी क्यांग
सी क्यांग
ह्वांग हो
हिन्द महासागर
हिन्द महासागर
प्रशान्त महासागर

10·6 एशिया की प्राकृतिक बनावट

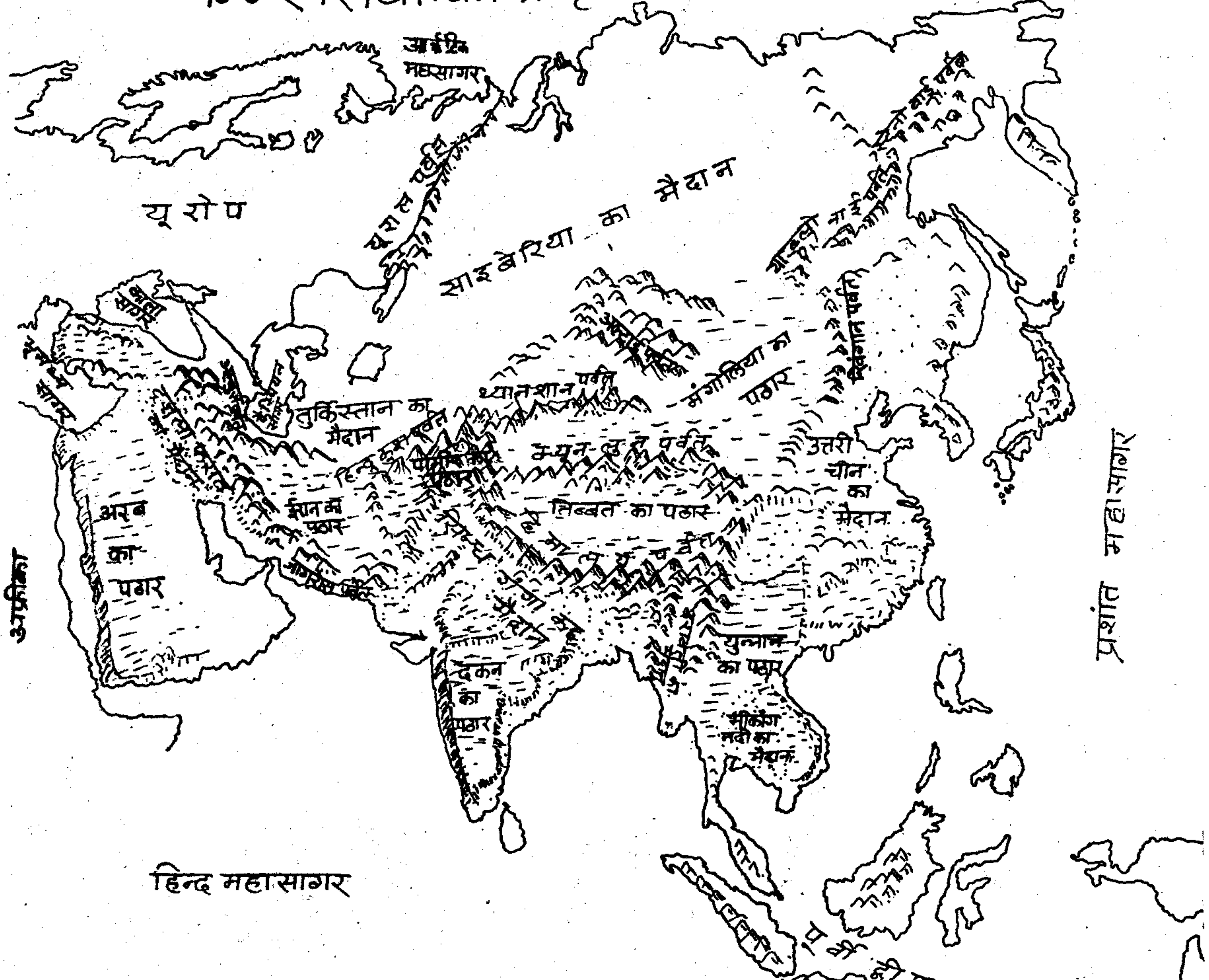

है ? पर्वत की चोटी से सब ओर ढाल है । ऐसे ढलान पर चढ़ना उतरना कठिन हो जाता है । इन पर रास्ते बनाना, रेलमार्ग डालना और भी कठिन है । पहाड़ों पर से बहती हुई नदी की घाटी की तुलना मैदान की नदी से करो।

- क्या पहाड़ पर भी नदी समतल चौड़ा मैदान बना रही है ?

तुम यदि पहाड़ पर जाओगे तो नदियां खूब तेज कलकल करती बहती मिलेंगी ।

- क्या मैदान में नदी ऐसे बहती है ?

भारत के उत्तर में हिमालय पर्वत है, यह तुम जानते हो । यह इतना ऊंचा है कि उसकी ढलानें बर्फ से ढकी रहती हैं । जाड़े में वर्षा की जगह बर्फ (हिम) गिरती है । एशिया में हिमालय के उत्तर में देखो(मानचित्र 10·6), कितनी पर्वत श्रेणियां हैं ?

- देखो पहाड़ एशिया में कहां-कहां हैं ? एशिया की 8 प्रमुख पर्वत मालाओं के नाम नक्शे में से देखकर लिखो।

पठार : कई जगह पर्वत मालाओं के बीच के भाग ऊंचे होते हैं, लेकिन पर्वतों के समान उनमें ऊंची-ऊंची चोटियां नहीं होतीं, बस जमीन में हल्के ऊंचे-नीचे ढाल रहते हैं और बीच-बीच में छोटी-छोटी पहाड़ियां या नदियों की घाटियां भी होती हैं । ऐसे इलाके में पथरीले हिस्से भी दिखाई देते हैं । हम ऐसे इलाकों को पठार कहते हैं । तुमने पढ़ा था कि ईरान का पठार पर्वतों से घिरा है । एशिया के मध्य में देखो पर्वतों से घिरे तीन पठार हैं ।

चित्र 10·7 पहाड़ों में बहती नदी.

- ढूंढ कर उनके नाम लिखो । यह भी लिखो कि वे पठार किन पर्वतों से घिरे हैं ।

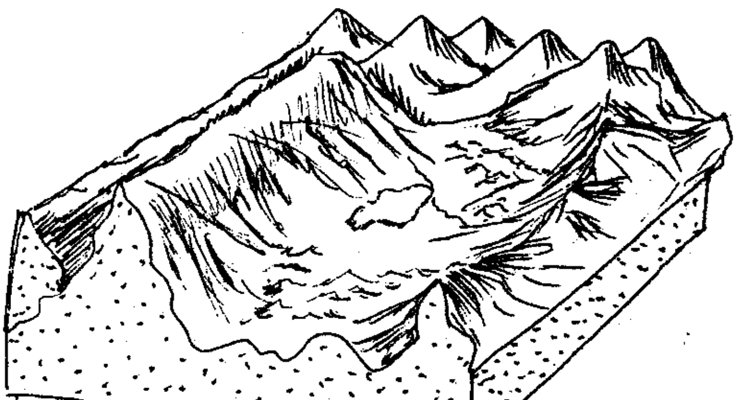

रेखाचित्र 10·8 पर्वतों से घिरा पठार

लेकिन सभी पठार पर्वतों से घिरे नहीं होते। उनके किनारे कगार होते हैं, रेखाचित्र में देखो। एक बार कगार पर चढ़कर पठार के ऊपर आ जाएं तो ऐसा लगता है जैसे मैदान हो। बम्बई से हमें जब दक्न के पठार पर आना होता है तो ऐसे ही कगार पर चढ़कर ऊपर पहुंचते हैं। गंगा की घाटी से जब रीवां के पठार पर आते हैं तो कगार पर चढ़ना होता है।

● एशिया के दक्षिण में ऐसे दो पठार हैं। ढूंढ कर उनके नाम लिखो।
एशिया के पश्चिम में भी एक कगार वाला पठार है। उसका नाम क्या है ?

रेखा चित्र देखकर मिट्टी से पठार, पहाड़ और मैदान बनाओ। जो दिखता है सो लिखो -

● पहाड़, पठार से कैसे पर्क दिखता है ?
मैदान और पठार में क्या अंतर है ?
मैदान पहाड़ से कैसे भिन्न दिखता है ?

द्वीप समूह : एशिया के देशों को जब तुमने पढ़ा था तब जान गए थे कि उसके दक्षिण पूर्व में अनेक द्वीप हैं। छोटे बड़े हजारों द्वीप, इन्हें सामूहिक रूप से पूर्वी द्वीप समूह कहते हैं। इनमें कई देश हैं। अधिकतर द्वीपों में पर्वत हैं। तुम जानते हो कि यहां कई ज्वालामुखी भी हैं।

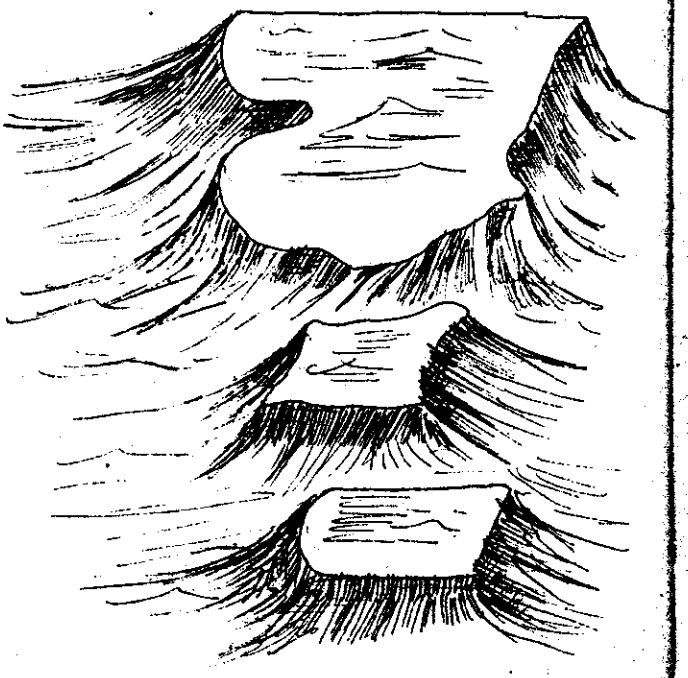

रेखाचित्र 10·9 पठार और उसके कगार.

एशिया में जलवायु के अनुसार वनस्पति

एशिया महाद्वीप में भूमि कैसी-कैसी है, यह तुमने देखा। अब आओ देखें कि उस भूमि पर कहां क्या उगता है। हर इलाके में वही पेड़-पौधे होते हैं जो वहां की जलवायु में हो सकें। जलवायु के अनुसार पेड़-पौधे भी बदल जाते हैं।

1. एशिया के कई भागों में खूब घने जंगल मिलते हैं, जैसे तुमने इंडोनेशिया में देखे थे। ये पेड़ साल भर हरे बने रहते हैं। इनकी पत्तियां चौड़ी होती हैं। इनमें पतझड़ नहीं होता। इन जंगलों को भूमध्य रेखीय वन भी कहते हैं क्योंकि ये भूमध्य रेखा के पास के इलाकों में उगते हैं।

इन पेड़ों को उगने के लिए वैसी ही जलवायु चाहिए जैसी इंडोनेशिया की है। यानी, साल भर गर्मी बनी रहना, साल भर बारिश होते रहना। ध्यान करो कि इंडोनेशिया में जाड़े का मौसम ही नहीं होता।

जहां ऐसे जंगल मिलें, हम अनुमान लगा सकते हैं कि वहां की जलवायु कैसी होगी। एशिया की वनस्पति का नक्शा

चित्र 10·10 भूमध्य रेखीय घने वन.

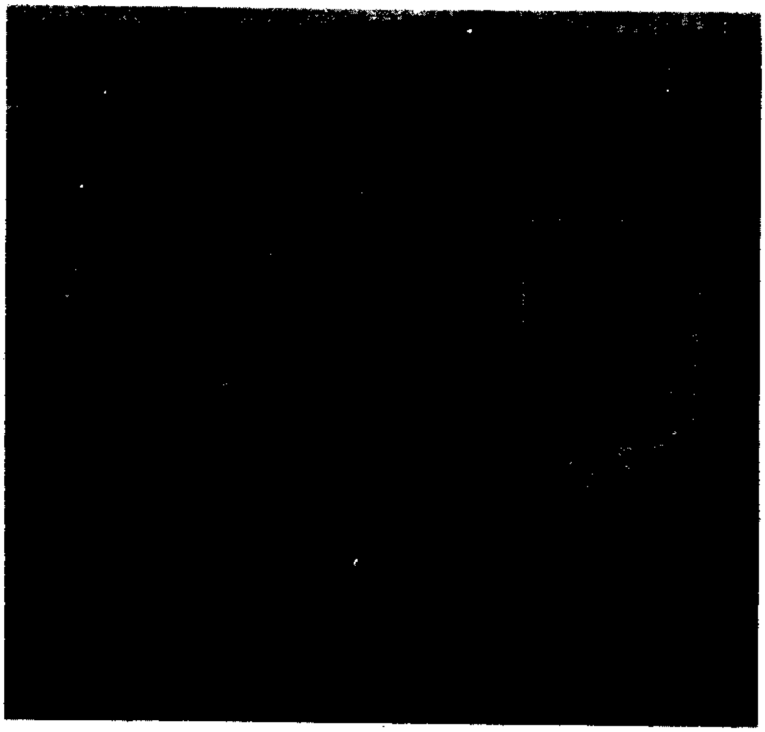

10·11 एशिया की वनस्पति

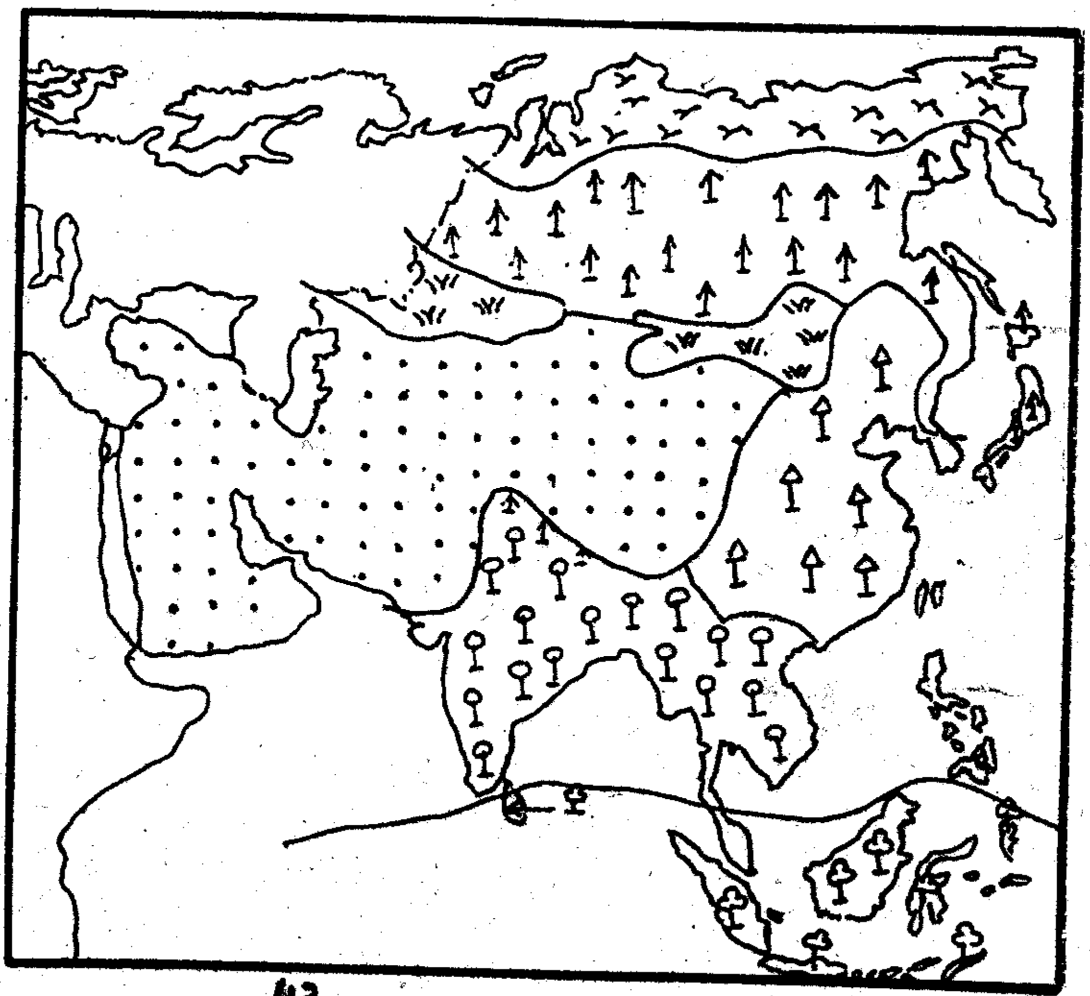

संकेत

- दुन्ड्रा वनस्पति
- रेगिस्तान की वनस्पति
- नुकीली पत्ती के कोणधारी वन
- ठंडे इलाकों के चौड़ी पत्ती के वन
- मानसूनी चौड़ी पत्ती के वन
- भूमध्य रेखीय वन
- घास के मैदान

साथ में दिया गया है। इसमें बताया है कि एशिया महाद्वीप के किन भागों में कैसे पेड़-पौधे होते हैं। इस नक्शे में इंडोनेशिया देश पहचानो। उसमें ऐसा ♀ चिन्ह बना दिखेगा। और कहां-कहां यह चिन्ह बना है ? इस चिन्ह से यह दर्शाया गया है कि यहां भूमध्य रेखीय वन, यानी इंडोनेशिया जैसे घने वन हैं।

तो क्या अब तुम बता सकते हो कि नीचे दिए वाक्य सही हैं या गलत -

- इस क्षेत्र में सिर्फ जून से सितम्बर तक बारिश का मौसम होता है।

  इस क्षेत्र में साल भर गर्मी पड़ती है।

2• चलो अब भूमध्य रेखा से आगे बढ़ें, उत्तर की ओर चलें। ♀ इस चिन्ह से दिखाए गए क्षेत्र को देखो। यह वो क्षेत्र है जहां भारत जैसे पेड़-पौधे होते हैं। जैसे- आम, नीम, पीपल, पलाश, सागोन, अशोक। इनकी भी पत्तियां चौड़ी होती हैं। इनमें से कुछ पेड़ों में पतझड़ होता है। खासकर गर्मी के पहले। इन्हें मानसूनी वन भी कहा जाता है, क्योंकि ये वहां उगते हैं जहां मानसूनी वर्षा हो।

इन पेड़ों को उगने के लिए वैसी ही जलवायु चाहिए जैसी भारत में होती है। यानी ये पेड़ उन इलाकों में उगते हैं, जहां साल में एक बार मानसूनी बारिश होती है। और जहां साल भर में जाड़े की ऋतु भी हो और गर्मी की भी। ये वहां उगते हैं जहां ठंड के बजाय गर्मी ज्यादा पड़ती हो।

भारत की जलवायु ऐसी ही है न ?

तो अब देखो कि इस क्षेत्र की जलवायु के बारे में तुम क्या अनुमान लगा सकते हो।

- इस क्षेत्र साल के कुछ महीने वर्षा होती होगी, या पूरे साल ?

  इस क्षेत्र में जाड़े का मौसम ज्यादा होता होगा या गर्मी का ?

3• अब नक्शे में कुछ और उत्तर की ओर नजर डालो। ♀ इस चिन्ह से भरे इलाके को देखो। यहां भी चौड़ी पत्ती के पेड़ होते हैं - पर, उनमें

चित्र-10•12 नीम का पेड़ और चौड़ी पत्ती

चित्र 10•13 मेपल का पेड़ व चौड़ी पत्ती.

सर्दियों के पहले पतझड़ हो जाता है । ठंड के दिनों में वे सूने खड़े रहते हैं । पेड़ों के नाम हैं ओक, मेपल, बर्च । जाड़े के बाद इनमें नई पत्तियां आती हैं । ये पेड़ कैसी जलवायु में उगते हैं ? ये वहां उगते हैं जहां जाड़े-गर्मी का अलग मौसम हो पर गर्मी कम और जाड़ा अधिक पड़े । और जहां साल के कुछ महीनों में अच्छी बारिश हो । जैसे जापान की जलवायु है ।

इन वाक्यों में से सही-गलत छांटो-

● इस क्षेत्र में गर्मी का मौसम ज्यादा होता है ।

इस क्षेत्र में साल भर बारिश होती है ।

चित्र 10·14·रेगिस्तानी वनस्पति

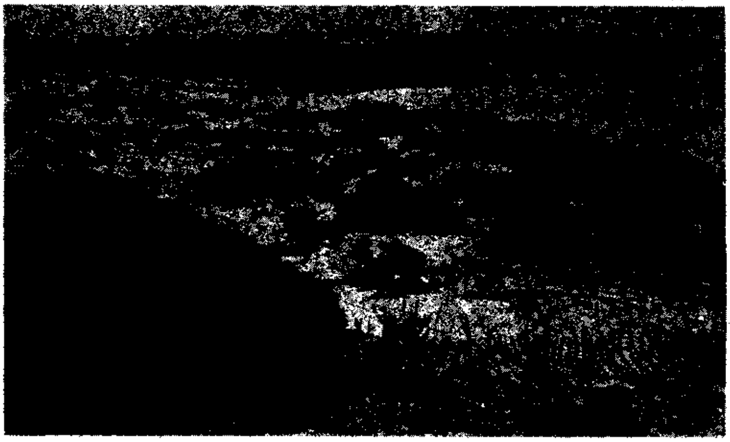

4· अब जरा पूर्व दिशा की ओर ध्यान से देखो। एशिया का एक बड़ा क्षेत्र तुम्हें ::: इस चिन्ह से बिछा मिलेगा । क्या इस इलाके में ऐसा कोई देश आता है जिसके बारे में तुमने अपने पाठ में पढ़ा हो ?

यह बड़ा इलाका सूखा रेगिस्तानी क्षेत्र है । यहां ऐसी वनस्पति मिलती है - कंटीले पौधे, झाड़ियां, खजूर के पेड़ ।

यह वनस्पति बिलकुल सूखे क्षेत्र में भी उग लेती है । इसे खास वर्षा की जरूरत नहीं होती । .:.: इस चिन्ह से दिखाये क्षेत्र में न के बराबर बारिश होती है । यहां ठंड के मौसम में बहुत तेज ठंड और गर्मी के मौसम में बहुत तेज गर्मी पड़ती है ।

अब वनस्पति का चिन्ह देखकर क्या तुम इस क्षेत्र की जलवायु के बारे में अनुमान लगा सकते हो?

इन वाक्यों में से सही गलत छांटो-

● इस क्षेत्र में बारिश न के बराबर होती है ।

इस क्षेत्र में साल भर बर्फ जमी रहती है ।

इन इलाकों में इंडोनेशिया की तरह सघन वन क्यों नहीं उगते ?

5· चलो रेगिस्तानी क्षेत्र के ठीक उत्तर में पहुंचो । यह बहुत सूखा क्षेत्र नहीं है । तभी यहां दूर-दूर घास ही घास दिखती है । पर बहुत कम पेड़ हैं ।

चित्र 10·15 घास के क्षेत्र

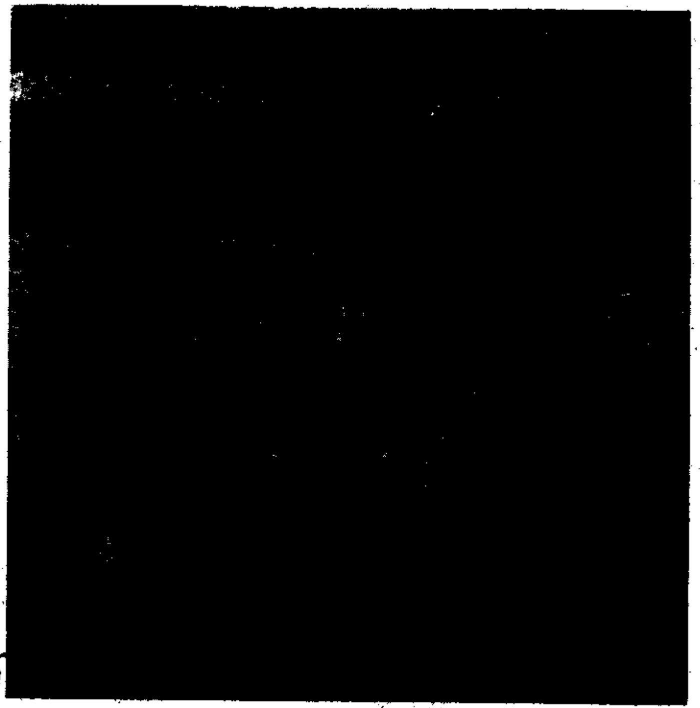

● ऐसा क्यों ? सोचकर बताओ यहां वर्षा अधिक होती होगी या कम। यह घास का क्षेत्र किस देश में आता है ?

रेगिस्तानी क्षेत्र की तरह घास वाले क्षेत्र में भी ठंड में बहुत ठंड और गर्मी में बहुत गर्मी पड़ती है ।

6• अब और भी उत्तर में इस चिन्ह↑ से दिखाए क्षेत्र को देखो । इस क्षेत्र में नुकीली पत्ती वाले कोणधारी पेड़ होते हैं । इनमें साल भर हरियाली बनी रहती है । पतझड़ नहीं होता । अत: हम अनुमान लगा सकते हैं कि यहां कुछ बारिश अवश्य होती होगी ।

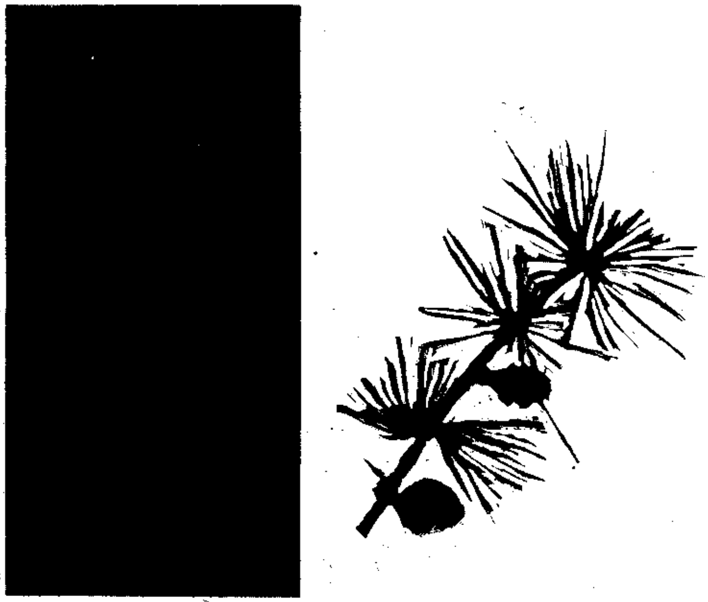

चित्र 10•16 नुकीली पत्ती के पेड़ व पत्तियां

ऐसे पेड़ तुमने जापान व ईरान के ऊंचे पहाड़ों पर देखे थे, जहां मौसम अधिकतर ठंडा रहता है व जाड़े में बर्फ गिरती है ।

● ऐसे पेड़ों की एक चौड़ी पेटी किस देश में है ? अपने देश में भी ये वन मिलते हैं क्या ? कहां ?

तो इन इलाकों की जलवायु कैसी होगी ? सही गलत बताओ -

● यहां गर्मी में खूब गर्मी और जाड़े में खूब ठंड पड़ती होगी ।

यहां गर्मी हल्की होती होगी और मौसम अधिकतर ठंडा रहता होगा ।

यहां हिमपात होता होगा ।

यहां वर्षा न के बराबर होती होगी ।

7• अब बिलकुल उत्तर में पहुंच जाओ, ध्रुव के पास । हम फिर से टुंड्रा प्रदेश में आ गए । तुम जानते हो कि यहां साल भर उगने वाली कोई वनस्पति नहीं होती । सिर्फ 2-3 महीनों के लिए यहां कुछ काई, बेरियां, बौने पेड़, घास, झाड़ियां उग आती हैं ।

टुंड्रा प्रदेश की जलवायु के कारण ऐसा होता है । इस बात को 5-6 वाक्यों में समझा कर लिखो ।

अभ्यास के लिए प्रश्न

खाली स्थान की पूर्ति करो ।

1• क हिमालय पर्वत माला के दक्षिण में ------------ मैदान है और उत्तर में ----------------- पठार है ।

ख साइबेरिया के मैदान के पश्चिम में ------------ पर्वत हैं और पूर्व में -------------------पर्वत हैं ।

ग- तुर्किस्तान का मैदान हिन्दकुश पर्वत की ------------- दिशा में व केस्पियन सागर की ---------- दिशा में है ।

2• सही गलत बताओ -

क- मंगोलिया के पठार पर कगार से चढ़कर पहुंचा जाता है ।

ख- युन्नान का पठार मीकांग नदी के मैदान के उत्तर व पश्चिम में है ।

ग- उत्तरी चीन के मैदान में ओब तथा आमू नदियां बहती हैं ।

घ- थ्यानशान पर्वत माला साइबेरिया के मैदान के दक्षिण में है ।

ङ- सीक्यांग नदी और इरावती नदी एक ही महासागर में गिरती हैं ।

च- लीना नदी और यान्सी नदी एक ही महासागर में गिरती हैं ।

3• एशिया की वनस्पति के चिन्ह तितर-बितर हो गए हैं । इन्हें उत्तर से चलकर दक्षिण तरफ बढ़ते हुए क्रम में जमाओ-

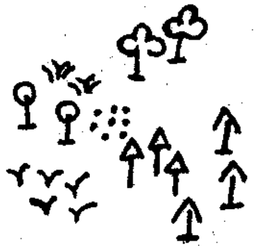

इतिहास

पाठ-7 राजा-महाराजा और शहर

खेती करने वाले आर्यों के समय को तुम देख चुके हो। तब से कुछ तीन चार सौ साल और बीते। जैसे समय बीतता गया, कई सारे नए गांव बसते गए। कई नए जनपद भी बने। अब सोलह बड़े जनपद बन गए थे। नीचे उस समय का एक नक्शा (नं॰ 1) दिया गया है।

नक्शा - 1 सोलह जनपद

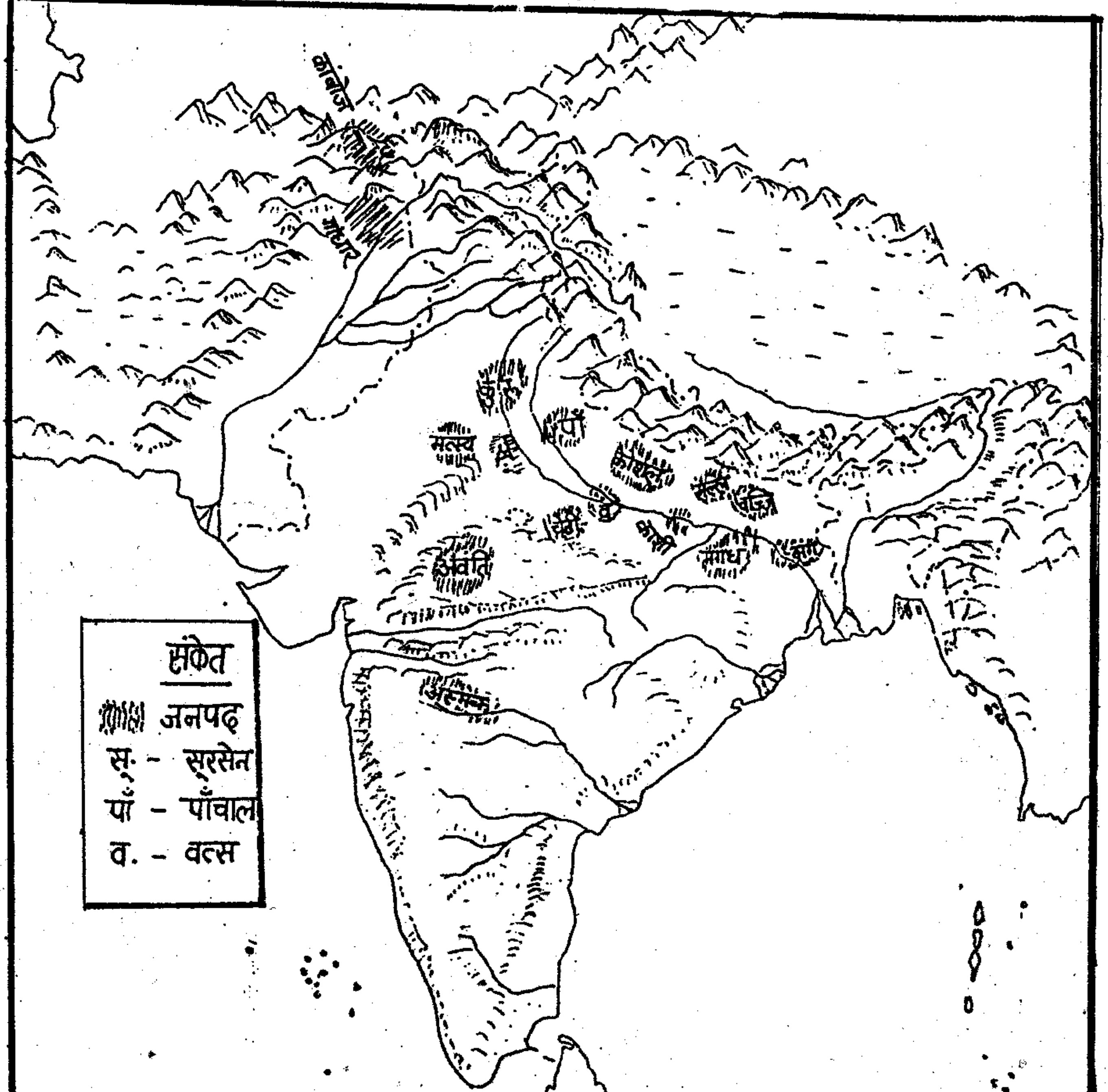

- इन जनपदों में से कौन-कौन से नए जनपद हैं ?
  नए जनपद किन दिशाओं में बने हैं ?
  कुछ जनपद पहाड़ों के बीच बसे, कुछ जनपद नदियों के किनारे मैदानों में बसे, कुछ पठार पर बसे। क्या तुम बता सकते हो कौन से जनपद कहां बसे ?

अधिकतर जनपद गंगा यमुना के मैदान में बने । गंगा और यमुना नदियों के किनारे गांव बसाना आसान काम न था । यहां खूब घने जंगल होते थे । छोटे-छोटे झुण्डों में लोग आकर इन जंगलों को आग लगाकर जलाते और लोहे के कुल्हाड़े से काटते, फिर खेत बनाते थे। यहां मिट्टी बहुत उपजाऊ थी । हर साल बाढ़ के बाद खेतों पर उपजाऊ मिट्टी की एक परत बिछ जाती । इस पर खूब अच्छी धान की फसल होती थी ।

पहले के दिनों की तुलना में अब कहीं ज्यादा अनाज होने लगा । धीरे-धीरे गांवों की संख्या भी बढ़ी ।

इस समय जनपदों में केवल गांव ही गांव नहीं थे । इनमें बड़े-बड़े शहर भी बनने लगे थे । ये शहर कैसे होते थे ? यहां कौन रहता था ? ये सब हम इस पाठ में आगे पढ़ेंगे ।

तो आओ 2500 साल पहले के उन जनपदों और शहरों की कुछ झलकें देखें ।

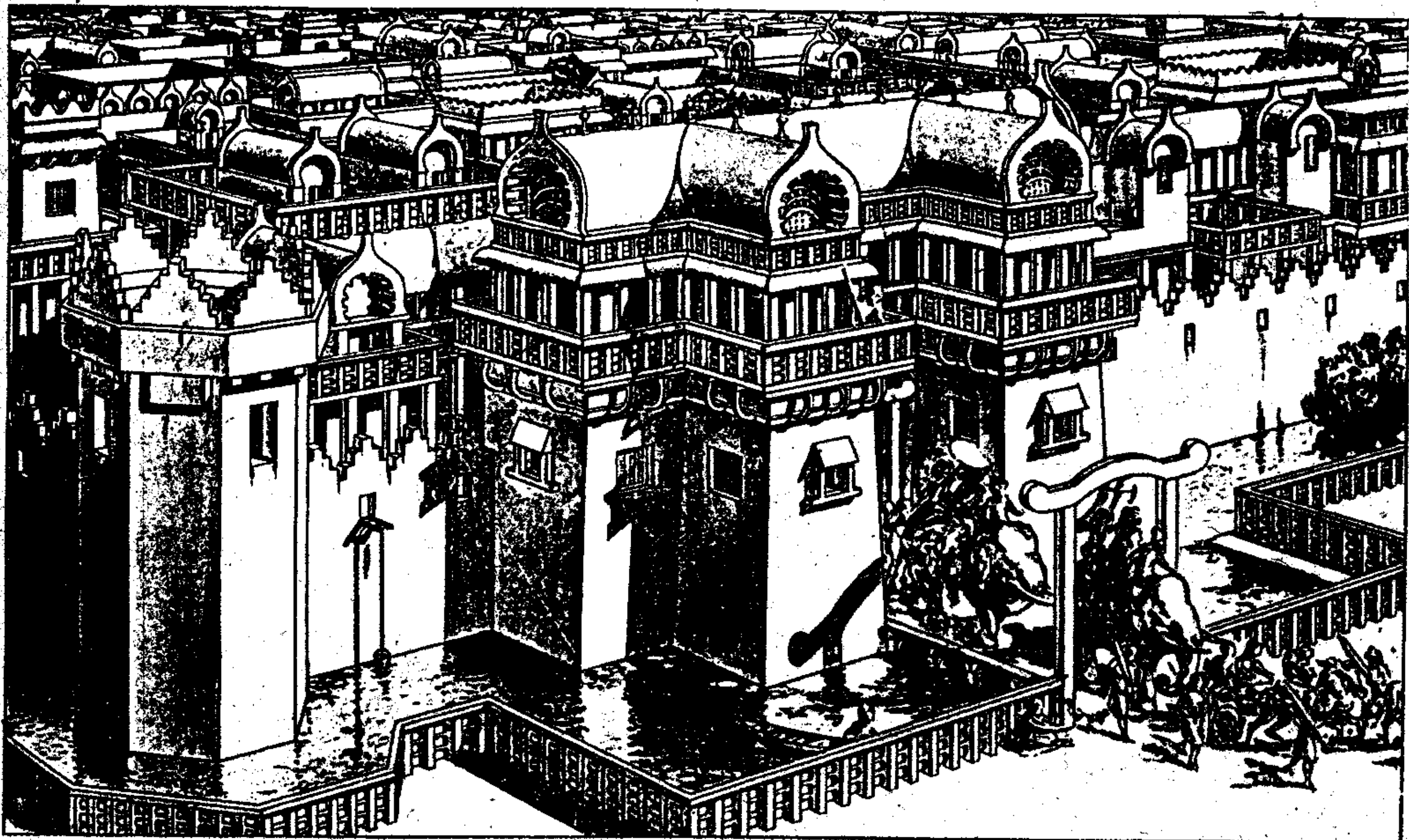

कल्पना करो कि हम 2500 साल पीछे पहुंच गए हैं - पुराने युग में।

हिमालय पहाड़ों के नीचे मैदान में बसा है वज्जि जनपद। यहां लिच्छवि नाम के लोग रहते हैं। चलो उनके शहर वैशाली को देखें। पर इससे पहले मानचित्र 1 व 3 में देख तो लो कि हम कहां पहुंच गए हैं।

कितना बड़ा और खूबसूरत शहर है वैशाली। इसके ऊंचे-ऊंचे घर-महल तो लकड़ी के बने लगते हैं।

वैशाली नगर के घरों से कई सारे पुरूष निकलकर शहर के बीच की तरफ जा रहे हैं। चलो इनके पीछे-पीछे हम भी चलें। ये देखो - वहां का बाजार है। बड़ी-बड़ी दुकानें हैं। कई जनपदों के व्यापारी यहां देश विदेश में बनी चीजें बेचने आते हैं।

सिन्धु घाटी के शहरों के नष्ट होने के बाद अब फिर से लगभग हजार साल बाद अपने इतिहास में बड़े-बड़े भवन व बाजार बने हैं। देश-विदेश से व्यापार होना शुरू हुआ है।

वैशाली शहर के बीच एक सुन्दर तालाब है। जो पुरूष आ रहे हैं वे इस तालाब में नहा रहे हैं। यह एक खास तालाब है। इसमें केवल लिच्छवि जन के लोग नहा सकते हैं, उनके नौकर या दास या फिर व्यापारी इसमें नहीं नहा सकते।

तालाब में नहाकर सब लोग पास में बने एक बड़े सभा-घर के अंदर जा रहे हैं। सुना है आज एक महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा होने वाली है। मगध जनपद के राजा अजातशत्रु ने धमकी दी है कि वह वैशाली पर हमला बोलेगा। लिच्छवि पुरूष इसके बारे में आज चर्चा करेंगे।

लिच्छवि जनपद में कोई राजा नहीं है। लिच्छवि वंश के सब पुरूष अपने आपको राजा कहते हैं। अगर कोई राजा न हों तो जनपद का काम कैसे चलता है? लिच्छवि वंश के सब पुरूष इस सभा मंडप में मिलते हैं, अपने जनपद की समस्याओं के बारे में चर्चा करते हैं, और तय करते हैं।

मगर सभा में महिलाएं या दूसरे जनपद के लोग नहीं आ सकते। लिच्छवियों के खेतों में गुलाम और मजदूर काम करते हैं - अनाज उगाते हैं। वे भी इस सभा में नहीं बैठ सकते।

आज सभा में जोर शोर से चर्चा चल रही है। मगध का राजा हमला करे तो क्या करें? एक नवयुवक बोलता है - "राजा अजातशत्रु के पास बड़ी सेना है, हमारे पास तो कोई सेना नहीं है- हम उनसे कैसे लड़ेंगे?" उसे जवाब देते हुए एक वृद्ध बोलता है - "सेना नहीं है तो क्या- हम हमेशा सब मिलकर युद्ध में जाते रहे हैं -हमारे जन के सब लोग युद्ध

में लड़ेंगी और मगध की सेना को हरायेंगी।" और कोई कहता है - "आपने मगध की सेना को देखा नहीं है - वह बहुत बड़ी है - हजारों सैनिक हैं। घोड़े हैं, हाथी हैं, रथ हैं, और मजबूत लोहे के हथियार हैं। हम अकेले उन से नहीं लड़ सकते हैं। आसपास के जनपदों से मदद माँगनी चाहिए।"

हाँ सचमुच, किसी जनपद के पास युद्ध करने के लिए एक सेना का होना इस समय के लिए एक नई बात है। लिच्छवि लोग मगध की सेना को लेकर जरूर चिन्तित हुए होंगे।

लिच्छवि या वज्जि जनपद के आसपास कई और जनपद हैं जिनमें कोई एक राजा नहीं है। पूरे जन के पुरूष जनपद का कामकाज चलाते हैं। ऐसे जनपदों को गण संघ कहा जाता है। मल्ल जनपद ऐसा ही एक गण संघ है।

अब चलो मगध जनपद की राजधानी, राजगृह की ओर चलें। वैशाली से राजगृह जाने वाली सड़क से चलें।

यह सड़क घने जंगलों से गुजरती है। फिर जब हम मगध राज्य में प्रवेश करते हैं, तो सड़क कई संपन्न गांवों से गुजरती है। तो कल्पना करो कि हम मगध जनपद के एक गांव में पहुंच गए हैं।

यह गंगा नदी के किनारे बसा है। चारों तरफ खेत ही खेत हैं। बोनी के पहले जमीन तैयार की जा रही है। कुछ लोग फावड़ा व कुल्हाड़ी से काम कर रहे हैं व कुछ हल-बैल से। हल का फाल लोहे का बना है।

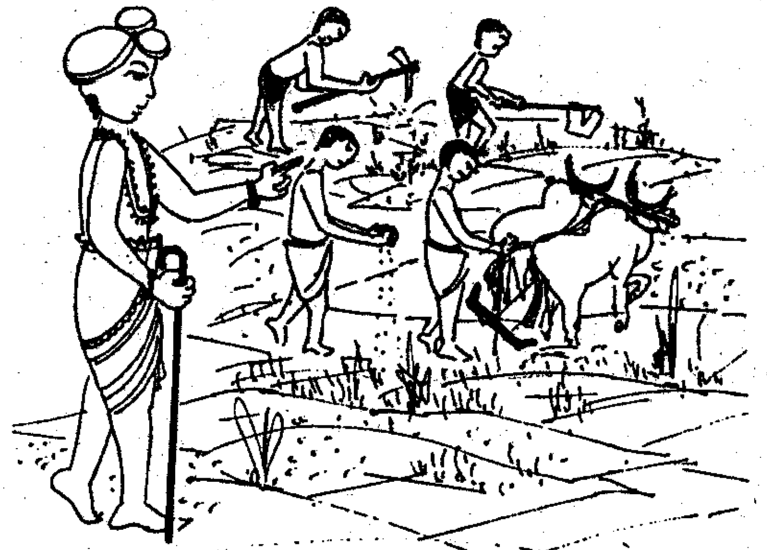

इस गांव में कई सारे किसान हैं, जिन्हें उस समय गृहपति कहा जाता था। ये अपने-अपने खेतों में अनाज उगाते हैं। कुछ बड़े और धनी गृहपति भी हैं। इनके पास खूब सारी खेती है जिसमें वे खुद काम नहीं करते। उनमें गुलाम और मजदूर काम करते हैं।

मगध राज्य में कुछ साल पूर्व नया कानून बना है। इस कानून के अनुसार किसानों को हर फसल में से एक निश्चित हिस्सा राजा को बलि में देना पड़ता है। राजा का एक अधिकारी गांव-गांव जाकर बलि व अनाज वसूल करता है। उसके पास एक हिसाब किताब होता है जिसमें लिखा रहता है कि कौन से गांव में कितने गृहपति हैं और वहां से कितना अनाज बलि में मिला। इकट्ठी

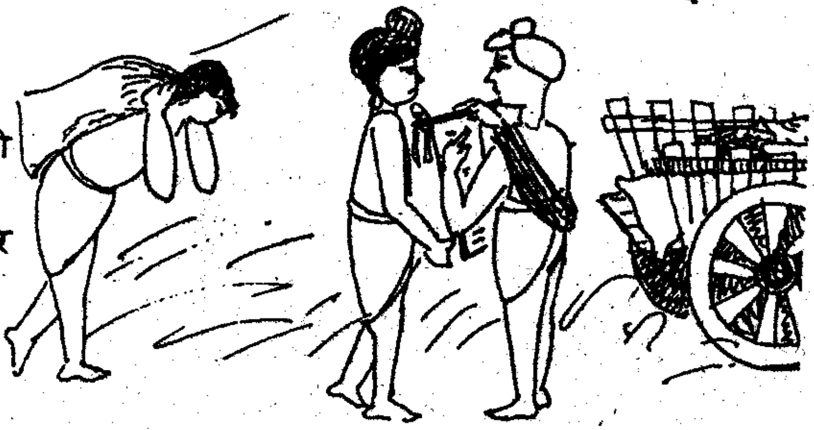

की गई बलि को वह राजा के पास ले जाता है । इस समय से पहले यह सब नहीं हुआ करता था । गण संघों में भी बलि जैसी कोई चीज नहीं है ।

इस समय के लिए यह भी एक नई बात है कि कुछ राजा नियमित रूप से खेतों में उगी फसल का एक हिस्सा वसूल कर रहे हैं । वे हर गांव की खेती का लेखा-जोखा रखने की कोशिश करने लगे हैं । जिन लोगों से वसूली न हो शायद उनको दण्ड भी दिया जाता है । खेती की लगान का हिसाब किताब रखना और उसकी वसूली करना - यह जो आज साधारण बात है - उन दिनों बस शुरू ही हो रही थी ।

चलो राजगृह चलकर देखें, राजा बलि में मिले अनाज का क्या उपयोग करता है ।

एक छोटी पहाड़ी पर बसा है राजगृह शहर । एक के बाद एक, तीन पत्थर के किलों से घिरा है यह शहर । ऐसा लगता है कि कोई भी विरोधी सेना इस पर कब्जा नहीं कर सकती । कितने मजदूर लगे होंगे इसके बनाने में, कितना धन लगा होगा ।

शहर के अंदर कोलाहल मचा है । सड़कों पर खूब शोर शराबा है । घुड़सवार तेजी से इधर-उधर जा रहे हैं । खूब सारे हट्टे कट्टे नौजवान इधर-उधर घूम रहे हैं । एक तरफ लोहारों की सड़क है । वे भट्टी से लोहा उतारकर, उसे पीट-पीट कर हथियार बना रहे हैं - तरह-तरह के हथियार - तलवार, भाला, तीर-कमान छुरी आदि ।

एक तरफ एक खुला मैदान है । उसमें हजारों नौजवान कसरत कर रहे हैं । कुछ लोग एक दूसरे से तलवार भाला लेकर लड़ने का अभ्यास कर रहे हैं । कुछ किसी निशाने पर तीर चला रहे हैं । कुछ लोग घोड़ों व हाथियों पर चढ़कर लड़ने का अभ्यास कर रहे हैं ।

सुना है कि इन लोगों को राजा अजातशत्रु ने भर्ती कर रखा है । उनका काम है उसकी रक्षा करना और जब भी राजा आज्ञा दे युद्ध पर जाकर लड़ना । राजा उन्हें तनख्वाह देता है । इसलिए उन्हें अपने और अपने परिवार के पालन - पोषण के लिए खेती या और कोई काम नहीं करना पड़ता । राजा से मिली तनख्वाह से वे गुजारा करते हैं ।

ऐसे लोगों को सैनिक कहते हैं । ऐसे सैनिक पहले कभी नहीं बने । पहली बार अजातशत्रु के पिता बिंबिसार ने सेना बनायी थी । अब इससे पहले के दिनों की तरह जन के सब लोग लड़ने नहीं जाते हैं । लोग अपने-अपने काम धंधों में लगे रहते हैं । युद्ध करने के लिए अलग से सेना है ।

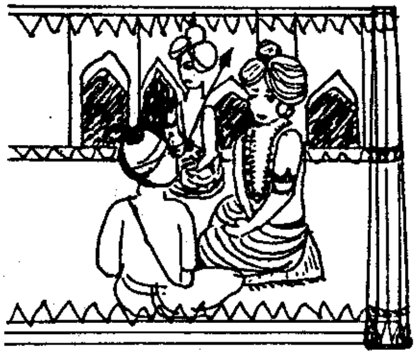

शहर के इस कोलाहल के बीच चलो राजा अजातशत्रु से मिलें । राजा एक बड़े महल के अंदर रहता है । चारों तरफ सैनिकों का पहरा है । अंदर राजा बैठा है । उसके पास 3-4 और लोग बैठे हैं । इनका काम है राज्य के कामकाज में राजा की मदद करना, राजा को सलाह देना । इन्हें भी राजा तंख्वाह देता है। ये राजा के अधिकारी व मंत्री हैं ।

सच तो यह है कि यह भी इस समय हो रही एक नई बात है । इस समय के पहले राजा अपने निकट संबंधियों (जिन्हें राजन्य कहा जाता था - याद है ?) की सलाह व सहायता से काम करता था । पर अब राजा तंख्वाह देकर किसी को भी अपना अधिकारी और मंत्री बना सकता है ।

अजातशत्रु का ऐसा एक मंत्री है, वर्षकार । वह बहुत बुद्धिमान और चतुर है । वह कह रहा है -"राजन, मैं इन लिच्छवियों को अच्छी तरह जानता हूं। वे बहुत शक्तिशाली हैं । उनमें फूट डाले बिना उन्हें युद्ध में हराना मुश्किल है । इससे अच्छा हो कि हम कोशल राज्य पर हमला करें । वहां का राजा हमारा मुकाबला नहीं कर सकता है ।" बाकी सब मंत्रियों ने उसका समर्थन किया । राजा कहता है -"ठीक है । अब हम कोशल पर हमला करेंगे । मगर कभी न कभी वैशाली को अपने राज्य में मिला लेना चाहिए । आप लोग युद्ध की तैयारी करिए ।"

आओ अब 2500 साल पहले के उस पुराने युग की यात्रा समाप्त करें । तुमने उन दिनों की कई झलकें देखीं ।

उस समय कई जनपदों में अजातशत्रु जैसे राजा थे - कोशल, अवंति, वत्स, जनपद आदि ।
उस समय के राजा आपस में खूब लड़ते रहते थे । हर जनपद का राजा चाहता था कि दूसरे जनपद के राजा को हराकर उस जनपद को अपने राज्य में मिला ले । इससे वहां के लोगों पर भी उसका अधिकार होगा । उनसे वह नियमित बलि ले सकता है । जितने ज्यादा गांव उसके राज्य में होंगे उतने ही ज्यादा लोगों से उसे बलि में अनाज मिलेगा । इस अनाज से ही वह अपने लिए कई सारे सैनिक, अधिकारी और मंत्री रख सकेगा। इनकी मदद से राजा अपने राज्य को फैला पाएगा, अपना राज्य चला पाएगा। बलि में मिले धन से ही वह अपने लिए बड़े-बड़े महल बनवाकर उनमें देश-विदेश की चीजें खरीद कर रख सकेगा ।

मगध के राजा बिंबिसार ने कई जनपदों को युद्ध में हराया था । उसका पुत्र था अजातशत्रु । अजातशत्रु ने भी कई जनपदों को अपने राज्य में मिलाया। इस तरह मगध राज्य बहुत बड़ा हो गया था ।

- आगे दिए नक्शे क्र॰2 को देखो। उसमें अजातशत्रु के राज्य की सीमा बतायी गयी है। नक्शा क्र॰1 से तुलना करो और बताओ, कौन-कौन से जनपद मगध राज्य में मिल गए हैं।

कई साल बाद महापदम नंद मगध का राजा बना। उसने और भी जनपदों को मगध राज्य में मिला लिया।

- उसका राज्य कहां से कहां तक फैला था ? नक्शा क्र॰2 में देखो। उसने अजातशत्रु के बाद कौन-कौन से जनपदों पर अपना अधिकार कर लिया ? अब कौन-कौन से जनपद उसके राज्य के बाहर हैं ?

नक्शा-2 अजातशत्रु और महापदम नंद के राज्य

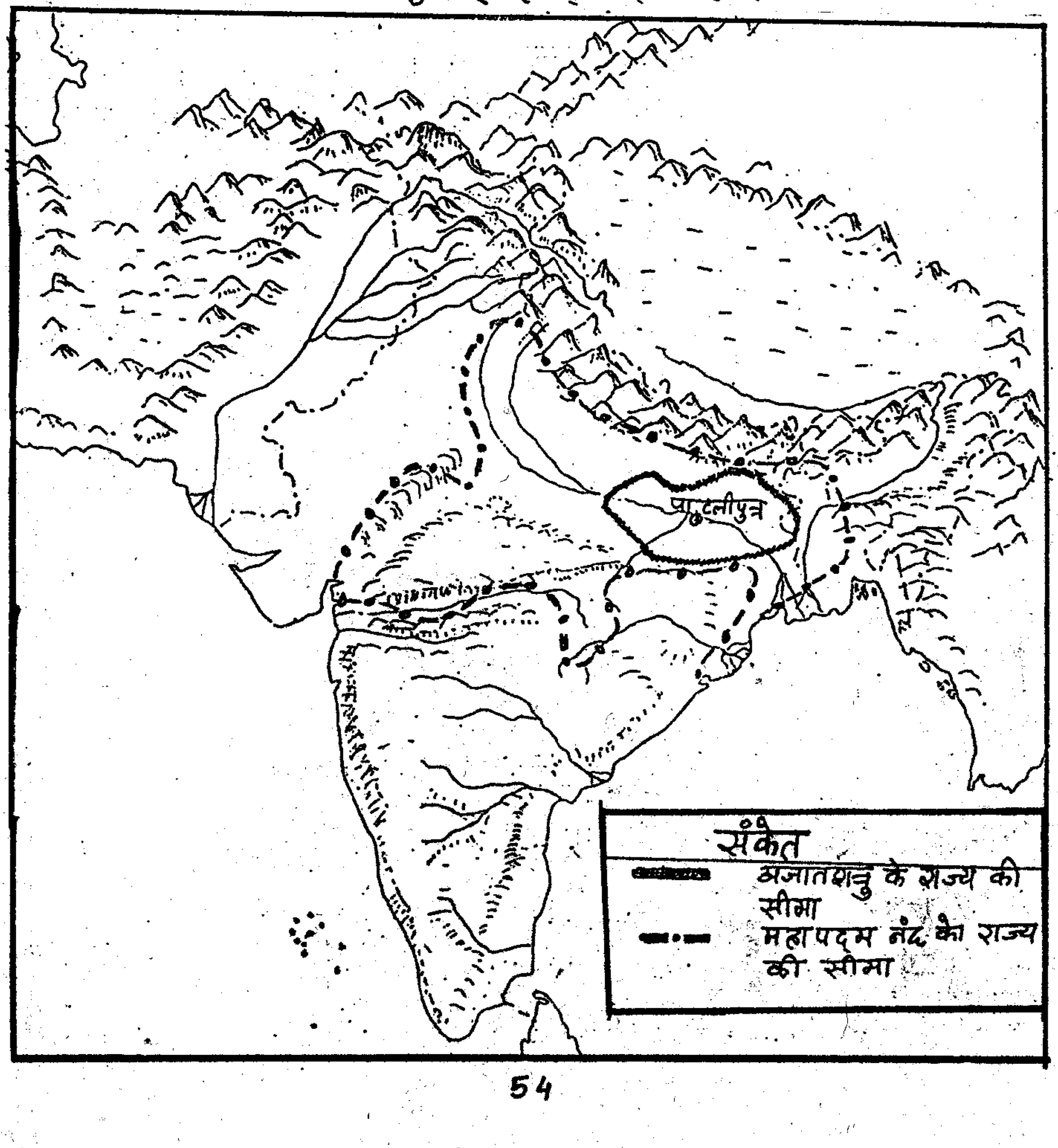

महापदम नंद को इतने सारे गांवों से बलि मिलने लगी कि उसके पास खूब सारा धन जमा हो गया । इस धन से उसने खूब बड़ी सेना तैयार की । कहा जाता है कि उसकी सेना में बीस हजार घुड़सवार, दो लाख पैदल लड़ने वाले सैनिक, दो हजार रथ और तीन हजार हाथी थे । शायद यह सब बढ़ा-चढ़ाकर बताया गया है ।

सिक्के पर बना सिकन्दर का चित्र

नंद राजा की भीमकाय सेना का वर्णन हमें यूनान देश की किताबों से मिलता है । संसार के नक्शे में देखो यूनान देश (उसे ग्रीस भी कहा जाता है) कहां है। इतनी दूर रहने वाले लोगों को मगध के राजा और उसकी सेना के बारे में पता कैसे चला ?

क्या तुमने कभी सिकन्दर के बारे में सुना है ? वह यूनान का एक वीर राजा था । उसने बचपन से तय किया था कि वह पूरी दुनिया को जीतकर अपने राज्य में मिला लेगा । वह एक बड़ी सेना के साथ यूनान से निकला और आसपास के राजाओं को हराता हुआ ईरान पहुंचा । वहां के राजा को भी उसने हराया । फिर वह सिन्धु नदी के किनारे पहुंचा । वहां के अनेक छोटे-छोटे राज्यों और गण संघों को हराया । मगर इन छोटे राज्यों के लोगों ने उसका इतना तगड़ा मुकाबला किया कि सिकन्दर के सैनिक थक गए । तब उन्होंने मगध के राजा महापदम नंद की भीमकाय सेना के बारे में सुना । वे अब और लड़ना नहीं चाहते थे । उन्होंने आगे जाने से मना कर दिया । वे यूनान लौट गए । मगर कई यूनानी पीछे रह गए और वहीं बस गए ।

:: शहर ::

आओ अब राजा महाराजा, सैनिक व अधिकारियों के अलावा उस युग के और लोगों से मिलें । 2500 साल पहले के जिस समय की हम बात कर रहे हैं वो बहुत बड़े-बड़े परिवर्तनों का समय था । कई ऐसे परिवर्तनों को तुम देख चुके हो, जैसे सेना व अधिकारियों का होना और बलि का नियमित लिया जाना ।

पर सबसे नई बात जो इन दिनों दिखती थी वह थे इस समय के नगर । ये वो दिन थे जब एक के बाद एक कई नगर बने । नगर यानी कारीगरों और व्यापारियों के रहने व काम करने की जगह । राजा, अधिकारियों और सैनिकों की जगह। जैसे गांव खेती से जुड़े लोगों की जगह है।

पिछले दो पाठों में तुमने कुछ कारीगरों को देखा था - जैसे लोहार, रथकार, कुम्हार व जुलाहा । उन दिनों बहुत ज्यादा व्यापारी देखने को नहीं मिलते थे । पर, अब तो बात ही कुछ और थी ।

इस समय के जो ग्रंथ और कहानियां हमें पढने को मिलती हैं उनसे लगता है कि इन दिनों न जाने कितनी तरह की चीजें बनाने वाले कारीगर थे, और न जाने कितने सारे छोटे बड़े व्यापारी थे। नगर-नगर में कारीगरों और व्यापारियों की रोनक और चहल - पहल रहने लगी थी।

चलो एक बार फिर अतीत की यात्रा करें। 2500 साल पहले के किसी शहर में पहुचें। मानलो हम श्रावस्ती नाम के शहर में पहुंच गए और रंगू नाम के एक आदमी से मिले। तो उन दिनों ऐसे एक आदमी का जीवन कैसा होगा, कल्पना करते हैं।

सोचो कि श्रावस्ती शहर के एक कोने में एक लकड़ी और मिट्टी की बनी छोटी सी झुपड़िया है। इसी में रंगू और उसकी पत्नी -बासंती रहते हैं। रंगू बाजार की सड़कों पर झाड़ू लगाता है। बासंती मालिन है-वह रोज फूल तोड़कर सुन्दर मालायें बनाती है और शहर के अमीरों के घरों में बेच आती है।

रंगू और बासंती बहुत गरीब हैं। रंगू के पास केवल एक चांदी का सिक्का है जो उसे एक बार सड़क पर झाड़ू लगाते पड़ा हुआ मिला था। रंगू ने उस सिक्के को बचाकर राजमहल की उत्तरी दीवार में एक ईंट के नीचे छुपाकर रखा है। इसके सिवा उनके पास और कुछ धन - दौलत नहीं है।

बाजार की सड़कों पर दिन भर रोनक रहती है। बेल गाड़ियों का आना-जाना लगा रहता है। व्यापारी दूर-दूर से सामान लादकर लाते हैं और यहां बेचते हैं। उनके बेल, घोड़े, खच्चर, रह रहकर बाजार की सड़क पर गन्दगी कर देते हैं। रंगू बीच-बीच में सड़कों को गन्दगी साफ करता है।

ऐसे ही एक दिन अचानक दस-पंद्रह बैलगाड़ी और पांच-छह उंट बाजार में आकर रुके । पूरे बाजार में हलचल मच गई - "सेठ अनाथपिंडिक का कारवां आ गया ! अनाथपिंडिक श्रावस्ती के बड़े व्यापारियों में से हैं ।

जब उसका कारवां बाजार में आया तो पूरे बाजार से लोग दौड़े चले आये यह देखने के लिए कि वह क्या-क्या सामान ले आया है ।

रंगू सड़क की एक ओर बैठ गया और देखने लगा । कई सारे मजदूर आये, सामान उतारने । कुछ गाड़ी हांकने वाले रंगू के पास आकर बैठ गए । बातों-बातों में उन्होंने उसे बताया-कैसे वे तक्षशिला से होते हुए आ रहे हैं । रंगू ने गाड़ीवान से पूछा - "तुम्हारे सेठ ने क्या-क्या खरीदा है ?" गाड़ीवान बोला, "क्या नहीं खरीदा यह पूछो । पर सही में सबसे सुन्दर चीज तो है तक्षशिला की नीले पत्थरों की मालाएं । क्या अनमोल चीज है !" रंगू बोला, "तुम भी उन दूर देशों में कुछ खरीद पाए ?" गाड़ीवान की आंखे चमक उठीं । वह बोला, "हां, खरीदा है भैया । बहुत कोशिश कर के कुछ पैसे जोड़े थे । सो हस्तिनापुर के बाजार से यह जरी का कपड़ा खरीदा है । कैसा है ?" रंगू ने कपड़े को छूते हुए कहा- "बहुत अच्छा" ।

यह सब देखकर रंगू की बहुत इच्छा हुई कि वह भी बासंती के लिए कुछ खरीदे। मगर उसके पास पैसे थे कहां ? फिर उसे अचानक याद आया कि उसने एक सिक्का महल की उत्तरी दीवार में छुपा रखा है। वह बहुत खुश हो गया। तेजी से दौड़ता हुआ वह गया और महल की दीवार से सिक्का निकाल लाया।

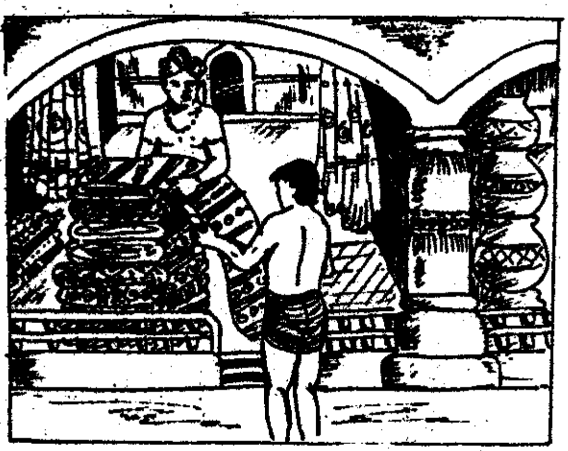

सिक्के को लेकर वह बाजार गया। वह चाहता था कि बासंती के लिए जरी रेशम का कपड़ा खरीदे। वह एक कपड़ा व्यापारी के पास गया। उसके पास खूब सारे कीमती कपड़े थे। व्यापारी ने बताया -"यह उत्तम रेशम का कपड़ा काशी नगर से आया है - इसकी कीमत है - पांच सिक्के। और यह रंगीन सूती कपड़ा उज्जयिनी से आया। इसकी कीमत है दो सिक्के।" रंगू के पास तो सिर्फ एक सिक्का था। वह दुखी होकर वहां से निकला। फिर उसने सोचा - "दूर देश में बनी चीजें तो महंगी होंगी ही। चलो यहां के कारीगरों से कुछ खरीदते हैं।"

वह सबसे पहले कुम्हार की गली में गया। गली में 10-15 कुम्हार रहते थे। उनके घरों के बाहर सुन्दर चिकने-चमकीले-काले बर्तन रखे थे। उन पर उंगली से बजाओ तो पीतल के बर्तन जैसी आवाज निकले। रंगू ने एक कुम्हार से उसका दाम पूछा तो उसने कहा -"ये है दो सिक्कों का। ऐसे सुन्दर घड़े न राजगृह में बनते हैं न काशी में। वहां के व्यापारी इन्हें यहीं से खरीदकर ले जाते हैं। चाहो तो तुम ये लाल रंग के बर्तन ले जाओ। ये सस्ते हैं। एक सिक्के में दो मिलेंगे।" मगर रंगू को लाल बर्तन पसंद नहीं आया।

घूमते-घूमते उसे एक सोनार की दुकान नजर आई। उसने सोचा शायद एक छोटी सी अंगूठी मिल जाएगी। सोनार के पास सुन्दर-सुन्दर गहने थे। तरह-तरह की मालायें थीं। सोने और चांदी की चूड़ियां थीं, छन-छन करती पायल थीं। सोने के गहनों में कीमती पत्थर गढ़े थे। सोनार ने बताया कि ये सब प्रतिष्ठान से आता है। मगर सोनार की सब चीजें महंगी थीं। रंगू को अपनी मूर्खता पर झेंप आई। सिर नीचा किए वह दुकान से निकल आया।

फिर वह बढ़ईयों की गली में जा पहुंचा। बढ़ई के पास तरह-तरह की लकड़ी की चीजें थीं। पहिये, चौकी, डिब्बे, बक्से आदि। मगर ये रंगू को पसंद नहीं आए।

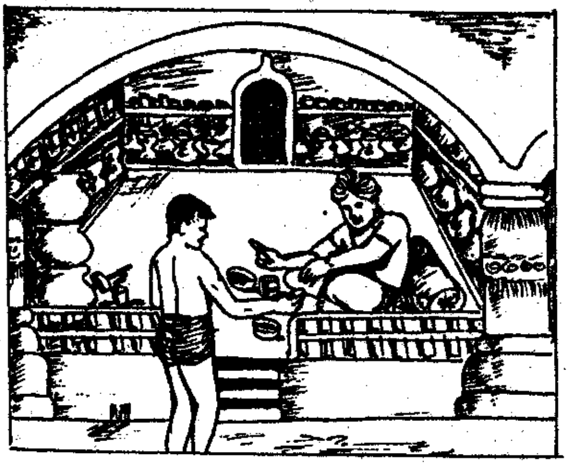

कई जगह घूमकर आखिर में रंगू एक कसेरे के पास पहुंचा । उसकी दुकान में तांबे, पीतल व कांसे के तरह-तरह के बर्तन रखे हुए थे । उसे एक तांबे का कटोरा बहुत पसंद आया । रंगू ने भाव पूछा तो उसने बताया -"तीन सिक्के में दो कटोरों की जोड़ी मिलेगी ।" अब रंगू के पास तो एक ही सिक्का था । रंगू ने कसेरे से बहुत अनुरोध किया कि वह कटोरा एक सिक्के में दे दे । कसेरे ने कहा-"मगर तांबा इतना कीमती है । इसे हम मगध से मंगवाते हैं । मैं कीमत कैसे कम करूं ?" काफी देर रंगू उसे भाव कम करने को कहता रहा । अंत में कसेरे ने कहा - "अच्छा तो तुम एक काम करो । अभी कुछ देर में सेठ अनाथपिंडिक यहां बर्तन खरीदने आने वाले हैं । तुम इन बर्तनों को साफ कर टोकरियों में बांध दो । फिर मैं तुम्हें तुम्हारा बर्तन एक सिक्के में दे दूंगा"।

रंगू विवश होकर बर्तन साफ करने लगा । कसेरे ने अपनी पोथी में लिखा हुआ था कि सेठ अनाथपिंडीक ने कौन कौन से बर्तन मांगे थे । वह पोथी में से देख देखकर बर्तन निकालने लगा और रंगू को साफ करने के लिए देने लगा ।

कुछ देर के बाद अनाथपिंडिक एक घोड़े पर चढ़कर आया । वह दुकान पर आकर घोड़े से उतरा । उसने अपनी पोथी निकाली । फिर कसेरे से बोला -"मैं कल प्रतिष्ठान जा रहा हूं - व्यापार करने । उसके लिए मुझे कांसे के बर्तन चाहिए थे । छः महीने पहले मैंने कुछ बर्तन बनाने के लिए कहा था । क्या वे बन गए ?" कसेरे ने कहा "माल तैयार है। यह आदमी उन्हीं को साफ करके बांध रहा है ।" उसने सेठ को बर्तन दिखाए । अनाथपिंडिक ने अपनी पोथी में हिसाब-किताब लिख रखा था। पोथी में से पढ़ते हुए वह कसेरे से बोला, "छः महीने पहले यही दाम तय किए थे। उसी हिसाब से दूंगा । तब आपको कुछ रकम भी चुका दी थी । बाकी की रकम यह लीजिए ।" यह कहकर अनाथपिंडिक ने कसेरे को कई चांदी के सिक्के दिए । इतने में बैलगाड़ी आयी और रंगू ने सामान गाड़ी पर लाद दिया । फिर उसने अपना एक सिक्का कसेरे को दिया और तांबे का कटोरा लेकर खुशी-खुशी घर चला ।

चलो, रंगू को घर जाने दें, और हम भी बीते दिनों की इस यात्रा से लौटें।

कितने सारे नगरों का जिक्र इस कहानी में था। इन नगरों के बारे में हमें उस समय के ग्रंथों से पता चलता है। यह भी पता चलता है कि उस समय के व्यापारी किन मार्गों से होकर व्यापार के लिए यात्रा करते थे। ये बातें हमने नीचे दिए नक्शा क्र॰3 में दिखाई हैं।

नक्शा-3 शहर और सड़क (आज से 2500 साल पहले)

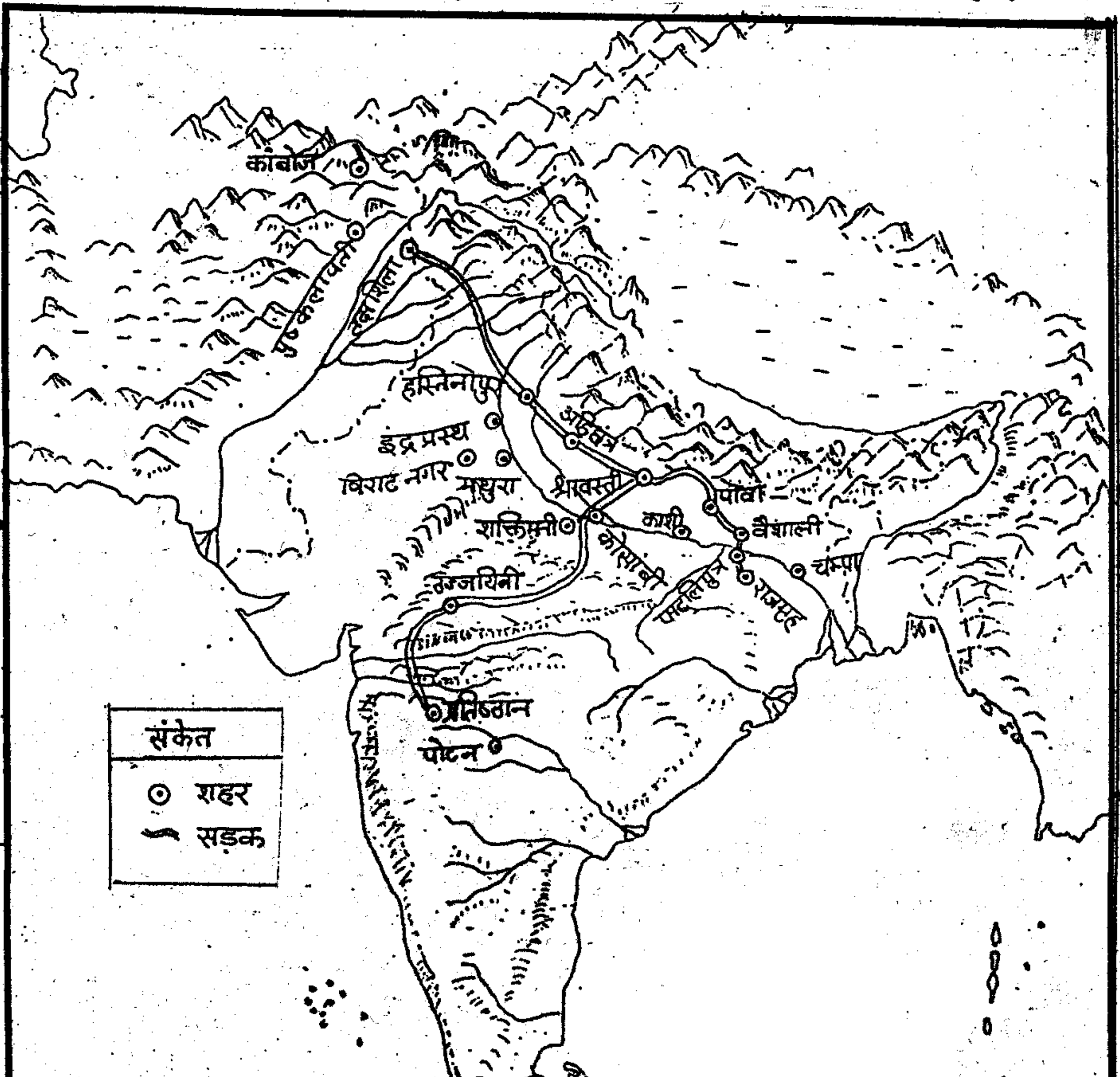

- इनमें से जिन शहरों का नाम तुम पढ़ चुके हो, उन्हें पहचान कर गोला बनाओ । इनके अलावा उस समय और कौन से शहर थे ? उनके भी नाम लिखो ।

राजगृह से उत्तर की ओर जाने वाले मार्ग को उत्तरापथ कहा जाता था ।

- राजगृह और तक्षशिला के बीच इस मार्ग में कौन-कौन से शहर पड़ते थे ?

  श्रावस्ती से दक्षिण की ओर जाने वाला मार्ग कहाँ समाप्त होता था ?

इस मार्ग को दक्षिणापथ कहा जाता था ।

- दक्षिणापथ पर कौन से शहर पड़ते थे ?

  जनपदों का नक्शा देख कर क्या तुम यह भी बता सकते हो कि उत्तरापथ कौन-कौन से जनपदों से होकर जाता था ? और दक्षिणापथ ?

इन रस्तों के होने का यह मतलब निकलता है कि उन दिनों लोग नियमित रूप से दूर-दूर की यात्रा करने लगे थे । कैसे लोग ? जैसे सेठ अनाथपिंडिक ।

- व्यापारियों के अलावा राजाओं को भी इन लम्बे मार्गों से बहुत लाभ मिलता होगा । वो कैसे - चर्चा कर के लिखो । आज भी ऐसे लम्बे रस्ते हैं । वे किन लोगों के काम आते हैं - इस पर भी कक्षा में चर्चा करो ।

हाँ उत्तरापथ और दक्षिणापथ आज के लम्बे रस्तों की तरह काले डामर वाले नहीं थे । ये कच्चे रस्ते थे और बीच-बीच में बहुत घने जंगलों से हो कर जाते थे । आज तो इतने जंगल भी नहीं बचे हैं । उन दिनों नदियों पर पुल नहीं बने थे । बाढ़ के समय कोई यात्रा नहीं कर पाता था ।

लम्बे मार्गों और नगरों के अलावा क्या तुम्हें उस समय की और कोई खास बात पकड़ में आई ? यह वो समय था जब अलग-अलग तरह के काम धंधे शुरू होने लगे थे । रंगू को ही देखो । उसका धंधा था सड़कें साफ करना । बासंती का मालाएं बना कर बेचने का धंधा था । इस तरह हर काम को करने के लिए अलग लोग हो गए थे ।

- रंगू और बासंती के अलावा ऐसे कौन से लोग तुमने रंगू की कहानी में देखे ? 8 लोगों के नाम गिनाओ।

इस पाठ के शुरू में भी तुम ऐसे बहुत से लोगों को देख चुके हो - जैसे खेती की देख रेख करने वाले गृहपति, खेती में काम करने वाले दास व मजदूर, बलि इकट्ठी करने वाला अधिकारी, हाथी चलाने वाले महौत, घोड़े चलाने वाले घुड़सवार, लड़ने के लिए सैनिक, तीर चलाने वाले तीरंदाज। उन दिनों, इसी तरह लोग कई अलग-अलग काम धंधे अपनाने लगे थे । कुछ लोग रथ चलाने वाले सारथी थे, कुछ राज्य का हिसाब किताब रखने वाले लेखपाल बने, कुछ सेना की देख रेख करने वाले अधिकारी बने, कुछ सेना के खाने पीने का प्रबन्ध करने वाले अधिकारी बने। फिर रसोइए का भी धंधा था,

और नाई का भी, हलवाई और धोबी का भी। कई लोग सुतार थे और भवन बनाते थे, कई बसोड़ थे और टोकरियां बना कर बेचते थे, कई लोग ईंट बनाया करते थे। घर के काम-काज के लिए नौकर चाकर भी थे और हां, जरूरी चीजें लिख के रखने वाले लिपिक भी।

तुम सोचोगे कि इसमें क्या आश्चर्य की बात है। आज भी तो लोग कई तरह के काम धंधे करते हैं। पर, पशुपालक आर्यों और खेती करने वाले आर्यों के समय की तुलना में सोचो। तब लोग इतने अलग अलग तरह के काम धंधे कहां करते थे?

फिर इस समय यह कैसे संभव हुआ? अलग-अलग धंधों में लगे लोगों का गुजारा कैसे होता था? इनका भोजन कौन उगाता था?

गांवों में गृहपति के खेतों पर खूब अनाज उगाया जाता था। तुम जानते हो कि इस समय पहले से ज्यादा गांव व खेत थे। पहले से ज्यादा अनाज उगता था। इन दिनों खेती के तरीके पहले से अच्छे हो गए थे। लोहे की नोक वाले हल से खेत अच्छे तैयार हो जाते थे। धान की रुपाई भी बहुत होने लगी थी। इससे काफी ज्यादा धान पैदा होने लगा। यह अनाज गृहपति, उसके परिवार, उसके दास व नौकरों के लिए काफी था। उसके ऊपर जो अनाज बचता, उसे गृहपति शहर में बेच आते। शहर में व्यापारी अनाज खरीदता और गृहपति को पैसे दे देता।

गृहपति पैसे से शहर में बनी चीजें खरीद लेता। चीजों के बदले में वो कारीगर को पैसे देता।

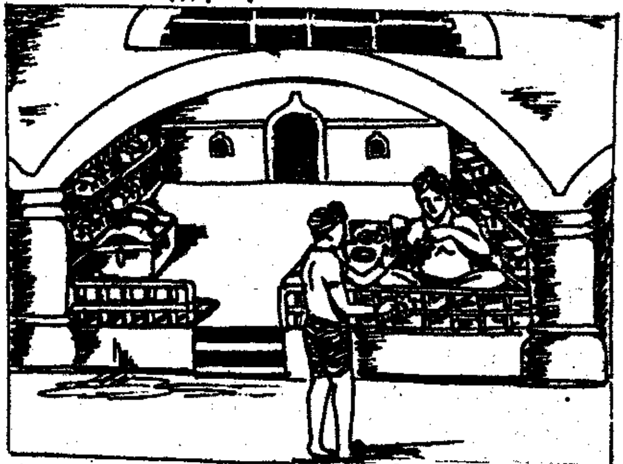

शहर के कारीगर और अलग अलग काम धंधे करने वाले लोग अनाज के व्यापारी के यहां से अपने लिए अनाज खरीद लेते।

इस तरह अलग-अलग काम धंधे करने वाले लोगों को अपना भोजन मिलता ।

- क्या आज भी इस तरह का लेन-देन होता है ?

सिक्के

एक और बात पर भी ध्यान दो । रंगू की कहानी में हमने सिक्कों का उपयोग देखा । यह वो समय था जब सिक्कों का चलन होने लगा था । इस समय से पहले लोग सिक्कों का उपयोग नहीं करते थे । सिक्कों से क्या किया जाता था ? कौन इस्तेमाल करता था सिक्के ? कहानी में ढूंढ कर लिखो -

- सिक्कों का उपयोग

किसने किया	किस लिए किया

इन दिनों ही सिक्कों का उपयोग क्यों होने लगा ? शायद इसलिए क्योंकि पहले इतना व्यापार नहीं होता था । ज्यादा व्यापार करने के लिए सिक्कों का उपयोग बहुत जरूरी है । नहीं तो लेन-देन में कठिनाई होती है । कल्पना करो कि दुनिया में अब सिक्के नहीं रहें तो क्या होगा ?

2500 साल पहले उन दिनों सिक्के चांदी के बनाए जाते थे । चांदी की चादर को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटा जाता । फिर उन पर राजा अपना एक ठप्पा लगवाता । शायद अलग-अलग राजाओं के अलग-अलग ठप्पे थे । क्या तुम देखना चाहोगे कि ये ठप्पे लगे सिक्के कैसे दिखते थे ?

मगध जनपद के सिक्के -

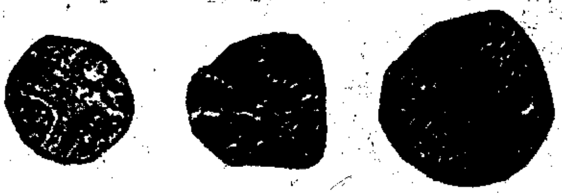

कोशल जनपद के सिक्के -

गान्धार जनपद के सिक्के -

- सिक्कों पर लगे ठप्पों को अपनी कॉपी में बनाओ ।

  क्या एक जनपद के सब सिक्के एक जैसे हैं ?

  अलग-अलग जनपदों के सिक्कों के बीच तुम्हें क्या फर्क नजर आता है ?

  आज कल हम जो सिक्के इस्तेमाल करते हैं उन पर क्या बना होता है ? वे किस चीज के बने होते हैं ? क्या भारत देश के हर हिस्से में एक ही तरह के सिक्के होते हैं ?

  पंजाब में, गुजरात में, कश्मीर में ?

लिखाई

यह वो समय भी था जब सबसे पहले लिखाई का उपयोग हुआ। तुम्हें पता है न, वेदों के मन्त्र गीत संस्कृत भाषा में बोले व गाए जाते थे। पर उन्हें लिखा नहीं जाता था।

इस समय लोग लिखने लगे। इस पूरे पाठ में तुम्हें लिखाई का उपयोग कौन करता दिखाई दिया ? ऐसे तीन लोगों के नाम बताओ।

● <u>लिखाई का उपयोग</u>

किसने किया	किस लिए किया

अगर लिखाई नहीं की जाती तो इनमें से हर एक को अपने काम में क्या कठिनाई आती ?

इस समय शायद ये लोग पत्तों पर या कपड़े पर लिखते थे। वो पोथियां तो सड़ गईं और बची नहीं। पर इन दिनों राजाओं ने पत्थरों, चट्टानों और खम्भों पर अपने संदेश भी खुदवाए थे। ऐसे एक राजा अशोक के बारे में तुम पढ़ोगे। इस तरह हमें पता चलता है कि शुरू-शुरू के अक्षर कैसे थे। जिन अक्षरों में हम यह किताब लिख रहे हैं उसे देवनागरी कहते हैं। पर शुरू-शुरू की लिखाई को ब्राह्मी कहते थे। ब्राह्मी में क को + ऐसे लिखा जाता था। इसी तरह ख को ? , ग को ∧ ।

ब्राह्मी में लिखे दो वाक्यों को देखो-

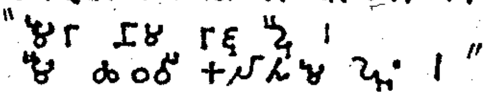

● क्या इसमें से कोई अक्षर तुम्हारी पहचान का है ?

इसमें लिखा है :

"मेरा नाम राजू है।

मैं छठवीं क्लास में पढ़ता हूं।"

क्या तुम अब बता सकते हो कि ब्राह्मी में इन अक्षरों को कैसे लिखा जाता था ?

म-	न-
र-	प-
ठ-	ता-
ला-	स -

हम जिन अक्षरों में लिखते हैं वे बाद में चलकर बने। अक्षर कैसे बनते हैं, यह बहुत मजेदार कहानी है। तुम्हें फिर कभी बताएंगे।

अभ्यास के प्रश्न

1. लिच्छवी जनपद की क्या बातें मगध जनपद जैसी नहीं थीं ?
2. इन दिनों राज्यों या जनपदों के बीच लड़ाई किन कारणों से होती थी ?
इसमें खेती करने वाले आर्यों के दिनों से क्या फर्क आया ?

3• इस समय राजा की सेना लड़ने जाती थी । आर्यों के समय में जो लोग लड़ने जाते थे, वे इन सैनिकों से कैसे भिन्न थे ?

4• इन दिनों सैनिक, अधिकारी व मंत्री रखने के लिए राजा धन कैसे जुटाता था ?

5• तुम जहां रहते हो, वहां उस पुराने समय में क्या कोई जनपद था ?

6• गृहपति कौन होता था ?

7• इन दिनों बलि कैसे ली जाती थी ? क्या खेती करने वाले आर्यों के समय में भी बलि इसी तरह ली जाती थी ?

8• नक्शा क्र•-3 में देख कर बताओ कि उस समय के कौन से शहर आज भी हैं ? अगर तुम कभी इन शहरों में जाओ तो कल्पना करना कि कैसे ये शहर हजारों सालों से बसे हुए हैं ।

9• इस समय के व्यापारी किस की सवारी करते थे ? वे व्यापार के लिए माल किस पर लादते थे ?
और आज कल व्यापारी यात्रा करने व माल ढोने के लिए क्या - क्या उपयोग करते हैं ?

10• रंगू की कहानी में एक जगह से दूसरी जगह माल लाने ले जाने के कई उदाहरण हैं ।

जैसे – 1• तक्षशिला से श्रावस्ती (अनाथपिंडिक का कारवां आया था)
2• हस्तिनापुर से श्रावस्ती (गाड़ीवान जरी का कपड़ा खरीद कर लाया था)
3•
4•
5•
6•

इसी तरह ऐसे चार और उदाहरण ढूंढ कर लिखो ।

11• इस समय बहुत सारे कारीगर और व्यापारी थे । राजा सैनिक, मंत्री व अधिकारी भी रखता था । इस सब के लिए खेतों में उगाया जा रहा अनाज बहुत जरूरी था । वह कैसे - समझा कर लिखो ।

12• समय के साथ भवन और शहरों की बनावट भी बदलती जाती है । नीचे कई तरह के भवन बने हैं । क्या तुम इस समय के भवन पहचान सकते हो ?

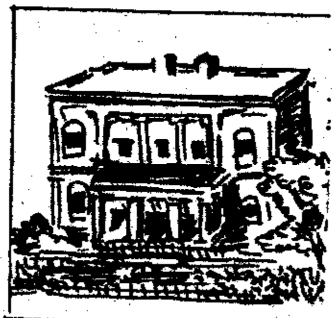

पाठ-8 नए प्रश्न नए विचार

तुमने अब तक यह देखा कि अलग-अलग समय में लोगों का जीवन कैसे बदलता गया। इस पाठ में अब हम उन बीते दिनों के लोगों के विचारों को जानेंगे उनके मन में क्या प्रश्न उठते थे? वे किन बातों के बारे में सोचते विचारते थे?

खेती करने वाले आर्यों के समय में ब्राह्मण बड़े-बड़े यज्ञ करवाते थे। वे हमेशा यह बताते थे कि कौन से यज्ञ को कैसे करना चाहिए, किस यज्ञ से क्या फल मिलेगा और किस अवसर पर कौन सा यज्ञ करना चाहिए - आदि। मगर उस समय कई ऐसे लोग थे जो केवल तरह-तरह के यज्ञों से संतुष्ट नहीं थे। वे जानना चाहते थे - यह दुनिया कब बनी? कैसे बनी? किसने यह सब बनाया? मरने के बाद हमारा क्या होगा? क्या हम मरने से बच सकते हैं? क्या दुनिया में कोई ऐसी चीज है जो बदलती नहीं है?

ऋग्वेद में उस समय की एक कविता है जिसमें एक कवि ने अपने मन में उठे प्रश्नों को लिखा है :

> "किसको पता है, कौन जानता है,
> यह सब कैसे हुआ कहां से आया?
> ईश्वर खुद इस सब के बाद बना है,
> तो किसे पता है, कि सचमुच
> यह सब कहां से आया?
> कहां से इस सब की शुरुआत हुई?
> ईश्वर जो आसमान से यह सब
> देखता है,

> चाहे उसने यह सब बनाया है या
> नहीं बनाया है,
>
> शायद उसे पता है,
>
> या शायद उसे भी नहीं पता।"

कई ऐसे ब्राह्मण और राजन्य थे जो बड़े उत्साह से इन प्रश्नों के बारे में आपस में चर्चा करते थे। कुछ ऐसे थे जो जंगल में आश्रम बनाकर रहते थे। इन प्रश्नों के बारे में सोचते और दूसरों को बताते व सिखाते थे। इन लोगों के संवाद और विचार उपनिषद नाम के ग्रंथों में पढ़ने को मिलते हैं।

उन्होंने देखा कि अपने चारों तरफ हर चीज बदलती है। चीजें पैदा होती हैं और खत्म भी हो जाती हैं। हम खुद पैदा होते हैं और मर जाते हैं। उनका मानना था कि जो चीज बदलती है और खत्म हो सकती है, वह सत्य नहीं हो सकती। इसलिए वे ऐसी चीज की खोज में लगे थे जो बदलती नहीं है,

और अमर है । उन्होंने ऐसी चीज को आत्मा या ब्रह्म कहा ।

काफी समय बीता । बड़े-बड़े शहर बने । राजा बने । तरह-तरह के कारीगर बने, व्यापारी बने, नई-नई चीजें बनीं। लोगों को नए-नए काम धन्धे करने को मिले । समाज में अमीर और गरीब के बीच अंतर बढ़ने लगे ।

अब लोगों के मन में और नए-नए प्रश्न उठे । नए विचार आए । वे पूछने लगे -
जीवन में दुख क्यों होता है ? क्या मनुष्य दुख से छुटकारा पा सकता है ? मनुष्य को अपना जीवन किस प्रकार बिताना चाहिए ? समाज में लोगों को किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए ? क्या वास्तव में ब्राह्मण उच्च हैं और बाकी लोग उनसे नीचे हैं ?

बहुत से लोग घर परिवार छोड़-छाड़कर इन प्रश्नों का उत्तर खोजने निकले । इनमें हर तरह के लोग थे - राजा के बेटे भी, ब्राह्मण, किसान, व्यापारी, गुलाम भी और कारीगर भी ।

वे गांव-गांव, शहर-शहर, जनपद-जनपद घूमते थे । अक्सर वे गांव या शहर के पास के वनों में रहते थे । रोज गांव में जाकर लोगों से भिक्षा मांगकर लाते, उसी से अपना गुज़ारा करते थे । ऐसे लोगों को परिव्राजक (घूमने वाले) या श्रमण कहा जाता था । पांच-दस श्रमण या चालीस पचास श्रमण तक एक साथ रहते और घूमते थे ।

श्रमण अकेले में प्रश्नों के बारे में विचार करते, और फिर एक-दूसरे से मिलकर चर्चा करते थे । हरेक का अपना-अपना विचार होता । उनके बीच खूब वाद-विवाद होता । चर्चा के बाद कभी कोई दूसरे का विचार मान लेता और उसका शिष्य बन जाता । अगर सहमती नहीं हुई तो दोनों अपनी-अपनी राह चलते ।

गांव और शहर के आम लोग भी उनकी बातें सुनने के लिए उत्सुक थे । जब भी कोई श्रमण किसी गांव या शहर के पास आता तो वहां के सब लोग - राजा, सैनिक, मंत्री, अधिकारी, किसान कारीगर, - उनके पास जाते - उनके विचार सुनने, उनसे प्रश्न पूछने, चर्चा

करने । इस तरह धीरे-धीरे कुछ लोग एक श्रमण की बात से प्रभावित हुए तो और कुछ लोग दूसरे श्रमण से प्रभावित हुए । गांव और शहरों में लोगों के बीच भी चर्चाएं हुआ करतीं थीं ।

उस समय कई महत्वपूर्ण श्रमण बने, जैसे - गोतम बुद्ध, महावीर जैन, मक्खली गोशाल, अजीत केश कंबलिन, और संजय वेलट्ठीपुत्र । हरेक का अपना-अपना विचार था, अलग-अलग मत था । चलो उनमें से कुछ लोगों के बारे में पढ़ें ।

तुमने गोतम बुद्ध के बारे में तो सुना ही होगा । उनका जन्म शक्य नाम के एक गण संघ में हुआ था । शक्यों की राजधानी थी कपिलवस्तु । बुद्ध के बचपन का नाम था सिद्धार्थ । उनके पैदा होते ही उनकी मां की मृत्यु हो गई थी । उनका पालन पोषण उनके पिता शुद्धोधन ने किया । बड़े होने पर सिद्धार्थ का विवाह हुआ और उन्हें राहुल नाम का एक पुत्र भी हुआ ।

सिद्धार्थ ने अपने चारों ओर लोगों को दुख से ग्रस्त पाया, एक दूसरे से लड़ते हुए पाया । वे विचार करने लगे कि इस सब से छुटकारा कैसे पा सकते हैं ? उन्हें कई परिव्राजक देखने को मिले और उन्होंने तय किया कि वे भी अपने परिवार को त्याग कर, घर छोड़कर सत्य की खोज में निकलेंगे । एक रात को वे चुपचाप घर छोड़कर निकले ।

घर से निकलकर वे कोशल जनपद में एक परिव्राजक से मिले और उससे कई बातें सीखीं । फिर वे राजगृह के पास के जंगल में रहने लगे । राजगृह में भिक्षा मांगते और जंगल में जाकर चिंतन मनन करते । वहां वे अनेक श्रमणों से मिले । फिर वे एक सुन्दर जंगल में गए और वहां घोर तपस्या की । कई दिन बिना भोजन-पानी के बिताए । अंत में उन्हें ऐसी घोर तपस्या का कोई मतलब नहीं लगा और उन्होंने तपस्या करना छोड़ दिया । उपवास भी बंद कर दिया । वे चिंतन मनन करने लगे।

एक दिन पीपल के पेड़ के नीचे बैठे वे सोच रहे थे तो उन्हें अपने प्रश्नों का उत्तर सूझा । इसके पश्चात बुद्ध जगह-जगह घूमने लगे - अब लोगों को अपने विचार बताने लगे ।

बुद्ध ने कहा कि जीवन में दुख निश्चित है - बुढ़ापा, बीमारी या मृत्यु से हम बच नहीं सकते ।

हर चीज बदलती है । ऐसी कोई चीज दुनिया में नहीं हो सकती है जो हमेशा स्थिर रहे । हर चीज का अंत भी निश्चित है । मनुष्य इस बात को समझता नहीं है । इसलिए वह जीवन में दुख भोगता है ।

मगर हम दुख पर विजय पा सकते हैं। यह कैसे ? उनका कहना था कि दुख का कारण है बहुत अधिक इच्छा करना। अगर हम संयम से अपना जीवन बितायें तो इच्छा पर विजय पा सकते हैं - इस तरह हम दुख से भी छुटकारा पा सकते हैं।

तपस्या के नाम पर अपने आप को दुख देना या हमेशा भोग विलास में रहना - बुद्ध ने इन दोनों का खण्डन किया। उनका कहना था कि मनुष्य को हर समय बीच का रास्ता अपनाना चाहिए।

बुद्ध ने बार-बार कहा है कि बड़े-बड़े यज्ञ जिनमें पशुओं की बलि चढ़ाई जाती है, उनसे कोई फायदा नहीं होगा। मनुष्य के लिए अच्छा आचरण, पूजा-पाठ व यज्ञों से श्रेष्ठ है।

उस समय ब्राह्मण कहते थे कि वे ही श्रेष्ठ हैं और बाकी जातियां उनसे नीची हैं। इस समय के बहुत सारे श्रमणों ने इसका खण्डन किया। बुद्ध का भी कहना था कि ऊंच या नीच जन्म या पेशे से नहीं बल्कि कर्म और आचरण से होती है। बौद्ध ग्रंथों में इस बात पर कई कहानियां मिलती हैं। उनमें से एक कहानी यह है-

एक बार जब गौतम बुद्ध श्रावस्ती नगर में रहते थे, अलग-अलग जनपदों से 500 ब्राह्मण श्रावस्ती में आए। उन्होंने सोचा - "गौतम बुद्ध कहते हैं कि ब्राह्मण, राजन्य, वैश्य, और शूद्र-चारों को मोक्ष मिल सकता है। यह बात सही नहीं है। उनसे वाद-विवाद करके उनके कथन को झूठा सिद्ध करेंगे।" वाद-विवाद के लिए उन्होंने आश्वलायन नाम के एक युवक ब्राह्मण का नाम सोचा। फिर उन्होंने आश्वलायन के पास जाकर उसे बुद्ध से वाद-विवाद करने को कहा।

आश्वलायन बोला-"गौतम के साथ वाद-विवाद करना कठिन है। फिर भी आपके आग्रह के कारण मैं आपके साथ चलता हूं।"

इसके बाद आश्वलायन 500 ब्राह्मणों सहित गौतम के पास गया और बोला-"हे गौतम, ब्राह्मण कहते हैं कि ब्राह्मण जाति ही ऊंची है, अन्य जाति नीची हैं। ब्राह्मणों को ही मोक्ष मिलता है, औरों को नहीं। ब्राह्मण ब्रह्मदेव के मुंह से उत्पन्न हुए हैं। अतः वे ही ब्रह्मदेव के वंश के हैं। हे गौतम, इस संबंध में आपका क्या मत है ?"

बुद्ध बोले - "हे आश्वलायन, ब्राह्मणों के बच्चे अन्य जातियों के बच्चों की तरह अपनी माता के पेट से जन्म लेते हैं। यदि ब्राह्मण ऐसा कहें कि वे ब्रह्मदेव के मुख से उत्पन्न हुए हैं तो क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है ?"

आश्वलायन बोला -"हे गौतम आप चाहे जो कहिए ब्राह्मणों का यह दृढ विश्वास है कि वे ब्रह्मदेव के वंश के हैं।"

बुद्ध -"क्या तुमको ऐसा लगता है कि यदि क्षत्रिय, वैश्य, या शूद्र, हत्या या चोरी करें, झूठ बोल दें, चुगली, गाली गलोच करें, तो वे ही मरने के बाद नरक में जाएँगे ? यदि ब्राह्मण ये कर्म करेगा तो वह नरक नहीं जायेगा ?"

आश्वलायन -"हे गौतम किसी भी वर्ण का मनुष्य ये पाप करे तो वह नरक में चला जाएगा — चाहे वह ब्राह्मण हो या शूद्र।"

बुद्ध- "क्या तुम ऐसा मानते हो कि कोई ब्राह्मण इन पापों को न करे तो केवल वही स्वर्ग में जाएगा ? बाकी वर्ण के लोग अच्छे आचरण से स्वर्ग नहीं जा सकते हैं ?"

आश्वलायन - "किसी भी जाति का मनुष्य ऐसे पाप नहीं करने पर स्वर्ग जाएगा। अच्छे आचरण का फल ब्राह्मण और शूद्र दोनों को समान रूप से मिलेगा।"

बुद्ध -"क्या तुम्हें ऐसा लगता है कि इस प्रदेश में केवल ब्राह्मण ही लोगों से प्यार कर सकते हैं ?"

आश्वलायन-"नहीं, चारों जातियों के लोग मैत्री भावना रख सकते हैं।"

बुद्ध -"तो फिर यह कहने का क्या मतलब है कि ब्राह्मण ही ऊँचे हैं और अन्य जाति नीच हैं ?"

आश्वलायन -"आप जो भी कहें ब्राह्मण यह मानते हैं कि वे ऊँचे हैं।"

बुद्ध -"हे आश्वलायन, दो ब्राह्मण भाईयों में से एक वेद-पठन किया हुआ है और अच्छा शिक्षित है तथा दूसरा अशिक्षित है, तो उनमें से किस भाई को ब्राह्मण लोग श्राद्ध तथा यज्ञ में प्रथम आमंत्रण देंगे ?"

आश्वलायन -"जो शिक्षित होगा उसी को पहले आमंत्रण दिया जाएगा।"

बुद्ध -"अब मान लो कि उन दो भाईयों में एक बहुत विद्वान किन्तु दुराचारी है और दूसरा विद्वान नहीं, किन्तु अत्यन्त सुशील है, तो उन दोनों में सबसे प्रथम किसे आमंत्रण दिया जाएगा ?"

आश्वलायन -"हे गौतम, जो शीलवान होगा उसी को प्रथम आमंत्रण दिया जाएगा। दुराचारी मनुष्य को दिया हुआ दान कैसे फलदायक होगा ?"

बुद्ध -"हे आश्वलायन, पहले तुमने जाति को महत्व दिया, फिर वेद-पठन को और अब शील को महत्व देते हो। अर्थात मैं जो कहता हूँ कि चारों वर्ण के लोग मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं उसी बात को तुमने माना है।"

बुद्ध का यह भाषण सुनकर आश्वलायन सिर झुकाकर चुप बैठ गया। उसकी समझ में न आया कि आगे क्या कहा जाए।

बुद्ध के विचारों से कई सारे लोग प्रभावित हुए। कई लोग घर-बार छोड़ कर भिक्षु (सन्यासी) बन गए और बुद्ध के साथ चल दिए। इन सब भिक्षुओं ने मिलकर एक संगठन बनाया जिसका नाम था बौद्ध संघ।

संघ में जो भी था उसे कई नियमों का पालन करना पड़ता था । संघ में कोई ऊंचा या नीचा नहीं माना जाता था । हर भिक्षु को, चाहे वह संघ में आने से पहले ब्राह्मण रहा हो या भंगी, समान अधिकार मिला हुआ था ।

भिक्षु किसी शहर या गांव के बाहर झोपड़ियों में रहते थे । रोज उनको गांव में जाकर भिक्षा मांगनी पड़ती और भिक्षा से जो अन्न मिले उसी को वे खाते थे । हर भिक्षु को संघ की तरफ से तीन जोड़ी कपड़े और एक भिक्षा पात्र मिलता था । इससे ज्यादा वह कोई और चीज नहीं रख सकता था ।

संघ का यह नियम था कि बारिश के चार महीनों को छोड़कर साल के बाकी महीने संघ के सदस्य घूमते रहेंगे । गांव-गांव जाकर धर्म का प्रचार करेंगे ।

संघ के इन नियमों से काफी लोग आकर्षित हुए । संघ में ऊंच-नीच का भेद भाव नहीं था । सबको आदर और सम्मान दिया जाता था ।

शुरू में बुद्ध ने औरतों को अपने संघ में शामिल नहीं होने दिया । पर बाद में उन्होंने अपना विचार बदला । बहुत सी औरतें घर परिवार के बंधनों को छोड़कर संघ में शामिल हुईं । उन्होंने भिक्षुणी बनकर संघ के काम में अपना जीवन बिताया ।

उस समय बुद्ध के अलावा और भी श्रमण थे । उनमें से एक थे वर्धमान महावीर । बुद्ध की तरह महावीर भी एक गण संघ के थे और वे घर त्यागकर श्रमण बन गए थे । उनका कहना था कि दूसरे लोगों और जीव-जन्तुओं को दुख पहुंचाने से हमारे ऊपर बुरे कर्मों का बोझ बढ़ता है । अतः बोझ को कम करने के लिए उपवास आदि घोर तपस्या करनी चाहिए । जहां तक संभव हो किसी भी प्रकार के प्राणी को, चाहे वह छोटे से छोटा कीड़ा या कोई क्यों न हो, दुख नहीं पहुंचाना चाहिए । हिंसा नहीं करनी चाहिए । वर्धमान महावीर द्वारा चलाए गए धर्म को जैन धर्म कहा गया । जैन धर्म ने अहिंसा पर बहुत जोर दिया है ।

कई श्रमण ऐसे भी थे जो यह कहते थे कि अपने जीवन पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं हो सकता है । ऐसे श्रमणों को आजीविक कहते थे । प्रमुख आजीविक श्रमण थे - मक्खली गोशाल, पूरण कश्यप, पकुड कात्यायन । वे नहीं मानते थे कि अच्छे कर्मों का अच्छा फल मिलेगा और बुरे कर्मों का बुरा फल मिलेगा ।

उनका कहना था कि मनुष्य अपने किसी भी प्रयत्न से न सुख बढ़ा सकता है न अपना दुख घटा सकता है । याद

करो, बुद्ध और महावीर कहते थे कि अच्छे आचरण से हम दुख पर विजय पा सकते हैं ।

उस समय अजीत केशकंबलिन नामक एक श्रमण था । उनके साथ कई और श्रमण थे। इन्हें लोकायत कहते थे । इन लोगों का मानना था कि न कोई आत्मा होती है न ईश्वर । मनुष्य मिट्टी, पानी, हवा आदि तत्वों से बना है । जब मर जाता है तो उसका कुछ भी नहीं बचता है । इसलिए यह सच नहीं है कि अच्छे कर्म करने से अगले जन्म में अच्छे फल मिलेंगे । हमें इसी जीवन में सुख पाने की कोशिश करनी चाहिए । खूब खाना-पीना चाहिए । और मौज करनी चाहिए। उनका कहना था -

"जब तक मनुष्य जिन्दा है उसे सुख से जीना चाहिए, उधार भी लेना पड़े तो भी डट के घी पीना चाहिए । जब हम मर कर राख हो जाएंगे तो क्या हमें जीवन वापिस मिल सकता है ?"

उस समय के लोग इस प्रकार सोचते थे । क्या तुम भी इन बातों के बारे में कभी सोचते हो - कि दुख क्यों होता है ? मरने के बाद क्या होता है ? समाज में ऊंच-नीच क्यों होती है ? हमें अपना जीवन कैसे बिताना चाहिए ?

क्या तुम्हारे माता-पिता या शिक्षक भी इन बातों के बारे में चर्चा करते हैं ?

अभ्यास के प्रश्न

1. जो लोग यज्ञ कर्मों से संतुष्ट नहीं थे, उनके मन में किस तरह के प्रश्न उठते थे ?
2. "आत्मा" किसे कहा गया ?
3. श्रमणों के जीवन पर 8 वाक्य लिखो ।
4. गौतम बुद्ध के अनुसार - दुख क्यों होता है ?

   मनुष्य दुख से छुटकारा कैसे पा सकता है ?
5. बुद्ध ने यह बात सिद्ध करने के लिए कि ब्राह्मण सबसे ऊंचे नहीं हैं - क्या तर्क दिए ?
6. निम्नलिखित विचार किस के थे, बताओ - (बुद्ध के, आजीविकों के, लोकायतों के, महावीर के ?)

   क- मनुष्य अपनी कोशिश से दुख घटा नहीं सकता । अगर जीवन में दुख है तो वो हो कर रहेगा ।

   ख- किसी भी जीव के प्रति हिंसा नहीं करनी चाहिए । इसी से हम दुख कम कर सकते हैं ।

   ग- मनुष्य अगर संयम से काम ले और अपनी इच्छाओं पर रोक लगाए तो दुख कम कर सकता है ।

   घ- चाहे जैसे हो इस जीवन में सुख भोगना चाहिए क्योंकि यह जीवन फिर लौट कर नहीं आएगा ।

पाठ-9 मौर्य वंश के राजा

अभी तक तुमने सोलह छोटे राज्यों को देखा था। वे धीरे-धीरे मगध के राजाओं के अधीन होते जा रहे थे। मगध का राज्य दूसरे राज्यों को अपने में मिला कर, बड़ा होता जा रहा था।

राजा महापद्म नंद के मरने के कुछ सालों बाद मौर्य वंश का चंद्रगुप्त मगध का राजा बना। उसने कई युद्ध लड़े और बहुत से छोटे-छोटे राज्यों को अपने राज्य में मिलाया।

उन दिनों सिन्धु नदी के पास कुछ यूनानी लोगों का राज्य था। ये लोग सिकन्दर की सेना के साथ आए थे।

चंद्रगुप्त ने एक यूनानी सेनापति (जिसका नाम सेल्यूकस निकेटर था) को भी हराया। सेल्यूकस के राज्य का काफी बड़ा भाग चन्द्र गुप्त का हो गया। इस तरह मगध राज्य सिन्धु नदी के पार भी फैल गया।

चंद्रगुप्त के बाद उसका बेटा बिन्दुसार मगध का राजा बना। उसने दक्षिण दिशा में मगध को फैलाया।

जब बिन्दुसार का पुत्र अशोक राजा बना, तब पूर्व दिशा में कलिंग राज्य ही एक ऐसा ताकतवर राज्य था जो मगध राज्य के बाहर था। भारत में आज जहां उड़ीसा प्रदेश है, वहां राजा अशोक के समय कलिंग नाम का राज्य था।

अशोक ने कलिंग को जीतने की ठानी। उसने कलिंग पर चढ़ाई की। बहुत घमासान युद्ध हुआ। कलिंग के लोग हार गए। लाखों लोग युद्ध में मारे गए। हजारों बेघर हो गए। कलिंग के डेढ़ लाख लोगों को बन्दी बना कर राजा के खेतों पर काम करने भेज दिया गया।

इस भयानक युद्ध के बाद अशोक ने तय किया कि वो जहां तक हो सके, युद्ध नहीं करेगा।

अशोक ने खुद बौद्ध धर्म अपना लिया। उसने 30 साल तक शासन किया। इन 30 सालों में उसने फिर कोई युद्ध नहीं लड़ा।

उसने तय किया कि वो युद्ध के बदले देश-विदेश के लोगों के बीच धर्म का प्रचार करेगा। उसने घोषणा की कि वह लोगों की भलाई में अपना जीवन लगाएगा।

राजा अशोक के समय में मगध का राज्य कितना विशाल था यह तुम नक्शे क्र. 4 में देख रहे हो।

- महापदम नंद के समय का नक्शा फिर से देखो।

  तब मगध का राज्य कहां-कहां था, और अशोक के समय में ?

  किस के राज्य में पर्वतीय भाग अधिक थे ?

  अशोक के राज्य में कितना समुद्र तट आता था। पेन फेर कर बताओ।

- क्या महापद्म नंद का राज्य भी समुद्र तट को छूता था ?

अशोक के राज्य में किन और नदियों के मैदान शामिल हो गए जो महापद्म नंद के राज्य में नहीं आते थे ?

- मौर्यों का राज्य पश्चिम में एक ऐसे देश की सीमा तक फैला था जिसके बारे में तुम इस किताब के भूगोल के पाठों में पढ़ोगे। पहचान पाए ?

नक्शा - 4 अशोक का साम्राज्य

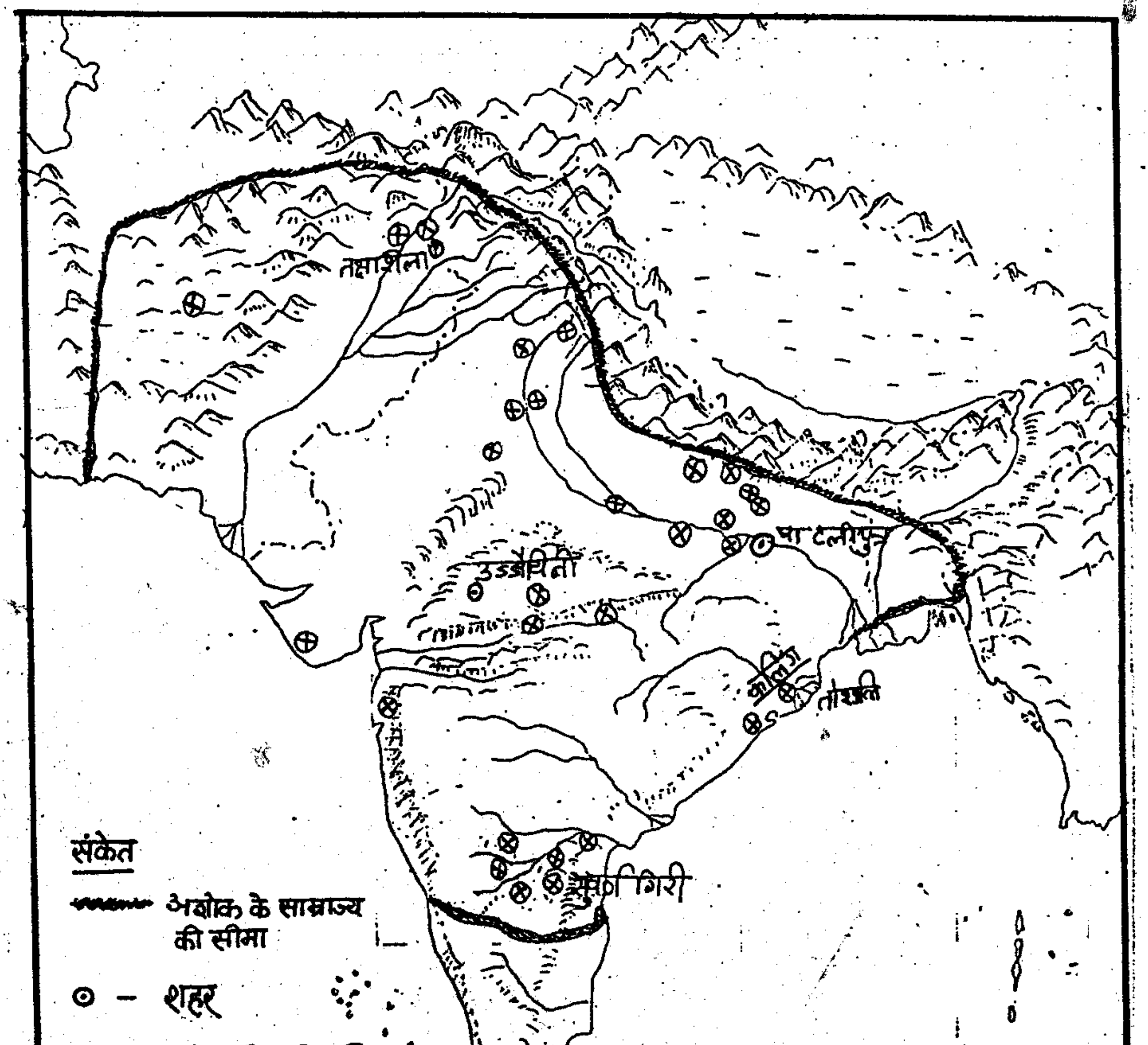

इस तरह नए-नए इलाकों के लोग एक-एक कर के मगध के अधिकार में आ गए । पहले से कहीं ज्यादा गांवों पर मगध राजा का अधिकार हो गया । इतने बड़े इलाके में सैकड़ों हजारों गांव थे । उनमें रहने वाले किसान थे । जंगलों में रहने वाले शिकारी थे । घूमते-फिरते पशु पालक लोग भी थे ।

इस राज्य में बहुत से शहर थे । इनमें कई प्रकार के कारीगर थे जो तरह-तरह का माल बनाते थे । व्यापारी थे जो दूर-दूर तक व्यापार करते थे, माल खरीदते - बेचते थे ।

इन सब लोगों पर मगध के राजा का अधिकार हो गया । राजा इन सब लोगों से लगान ले सकता था, कर ले सकता था ।

राज्य के दक्षिणीक्षेत्रों में सोना मिलता था, पश्चिम के इलाकों में तांबा और टिन मिलता था, राज्य के मध्य और उत्तर के हिस्सों में मूल्यवान पत्थर मिलते थे । इन सब चीजों पर भी मगध के राजा का हक हो गया ।

राज्य बड़ा हो गया । बहुत बड़े क्षेत्र से कर व लगान इक्ट्ठा करने का हक मगध के राजा का हो गया । इस तरह मगध के राजा के पास बहुत धन जमा हो सकता था । परन्तु इतने दूर-दूर के इलाकों से नियमित रूप से लगान और कर कैसे इकट्ठे किए जाएं ? उन दिनों एक जगह से दूसरी जगह पहुंचने में आज से बहुत ज्यादा समय लगता था ।

इसलिए मगध साम्राज्य को चार इलाकों में बांट दिया गया । और कई सारे अधिकारी व कर्मचारी नियुक्त किए गए ।

हर इलाके को राजा के परिवार का कोई एक व्यक्ति संभालता था । राज्य के उत्तरी इलाकों का कामकाज तक्षशिला नाम के नगर से चलता था ।

दक्षिण के इलाकों का कामकाज सुवर्णगिरी से चलता था । पश्चिम के इलाकों का कामकाज उज्जयिनी से ।

कलिंग को हराने के बाद पूर्व के इलाकों का काम तोशली से चलाया जाता था । पूरे साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र में थी ।

नक्शे में इन नगरों को देखो

1. इनमें से कौन सा नगर आज के मध्य प्रदेश में आता है ?
2. पाटलिपुत्र से सबसे अधिक दूरी पर कौन से नगर थे ?
3. मौर्य साम्राज्य के समुद्र तट पर बहुत से बंदरगाह थे । वहां से व्यापारी दूर देशों को व्यापार करने जाते

थे। पूर्वी तट से व्यापार करने वाले व्यापारियों से किन नगरों के अधिकारी कर वसूल करते होंगे- पाटलिपुत्र, तक्षशिला, उज्जयिनी, तोशली, सुवर्णगिरी ?

तो चलो मौर्यों के विशाल साम्राज्य के कुछ अधिकारियों से मिला जाए। मौर्य राज्य के सबसे बड़े अधिकारियों को महामात्र कहा जाता है। इन्हें राजा से बहुत ऊँची तनख्वाह मिलती है। इन महामात्रों में से कुछ राजा के मंत्री हैं। वे राजा को सलाह देते हैं। कुछ महामात्र सेनापति हैं, और कुछ राज्य के खजाने की देखरेख करते हैं। बड़े शहरों का प्रशासन भी महामात्र ही संभालते हैं। इन सब अधिकारियों को राजा की आज्ञा का पालन करना पड़ता है।

इन बड़े अधिकारियों के अलावा कई सारे छोटे अधिकारी भी हैं। उनके नाम हैं - राजुक, गोप, युक्त, प्रादेशिक आदि।

राजुक मगध साम्राज्य का बहुत महत्वपूर्ण अधिकारी है। चलो उसका काम देखें। कई सारे गांव एक राजुक की देखरेख में हैं। वह गांव-गांव से राजा के लिए किसानों से लगान वसूल करता है। वह किसानों की जमीन नापता है और निर्णय करता है कि किसको कितना लगान देना होगा।

उस समय लगान आज से बहुत ज्यादा था। किसानों को अपनी उपज का लगभग एक चौथा हिस्सा राजा को देना होता था।

पर राजुक के और भी काम हैं। वह गांव के कारीगरों और जंगलों में रहने वाले शिकारियों पर भी निगरानी रखता है। और उनसे कर वसूल करता है।

मगध के राजा कहीं-कहीं नहर बनवाते हैं। गांव के लोग भी नहर बनाते हैं। राजुक यह देखता है कि नहर का पानी सबको समान रूप से मिले। वह सड़कें बनवाना और उनकी मरम्मत करवाने का काम भी करता है।

इन सबके अलावा राजुक न्यायाधीश का भी काम करता है। गांव के झगड़ों को निपटाता है और अपराधियों को दण्ड देता है।

राजुक के इस तरह से बहुत सारे काम हैं और बहुत सारे गांव उसकी देखरेख में हैं। उसे अपने काम करने के लिए लगातार घूमते रहना पड़ता है।

राजुक के उपर एक और अधिकारी है। इसका नाम प्रादेशिक है। कर वसूल करके राजुक प्रादेशिक को देता है। प्रादेशिक का काम है गांव और शहरों की देख-रेख करना और राजुकों का निरीक्षण करना। अगर राजुक अत्याचार करें तो गांव वाले प्रादेशिक से शिकायत लगा सकते हैं। ये अधिकारी भी सदा घूमते रहते हैं।

इस तरह मगध साम्राज्य में कई और अधिकारी हैं - कुछ अधिकारियों का काम है बाजारों में व्यापारियों के तराजुओं और बाटों की जांच करना। कारीगर और व्यापारी जो भी सामान बेचते हैं उस पर वे कर वसूल करते हैं। कई अधिकारी चुंगी नाकों पर काम करते हैं। वे बाहर से आने वाले सामान और बाहर जाने वाले सामान पर कर वसूल करते हैं।

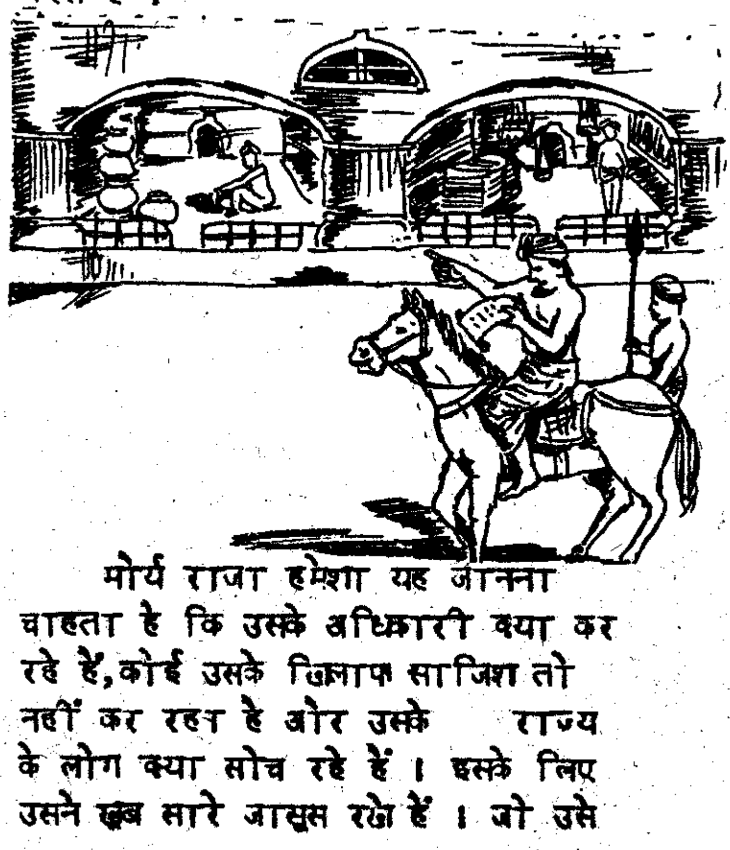

मौर्य राजा हमेशा यह जानना चाहता है कि उसके अधिकारी क्या कर रहे हैं, कोई उसके खिलाफ साजिश तो नहीं कर रहा है और उसके राज्य के लोग क्या सोच रहे हैं। इसके लिए उसने खूब सारे जासूस रखे हैं। जो उसे लगातार अधिकारियों के बारे में, लोगों के बारे में, खबरें देते हैं।

मौर्य राजा के पास खूब सारे खेत हैं जिन पर दास और मजदूर काम करते हैं। इन खेतों की उपज राजा के खजाने में जाती है। इन खेतों के निरीक्षण के लिए भी अधिकारी हैं। इसी तरह राजा के कारखाने भी हैं जहां हथियार आदि बनते हैं। कारखानों को संभालने के लिए भी अधिकारी हैं।

मगध साम्राज्य के कई अधिकारियों से तुम मिल लिए। तुम्हें शायद इस तरह के अधिकारी कुछ जाने पहचाने लगते होंगे। आज भी तो गांव, तहसील, जिले आदि के स्तर पर इस तरह के अधिकारी हम देखते हैं। आज के अधिकारी भी कई वैसे काम करते दिखते हैं जैसे मगध साम्राज्य के अधिकारियों को हमने करते पाया था। और जैसे राजुकों के उपर प्रादेशिक थे वैसे आज भी तो छोटे अधिकारियों के उपर बड़े अधिकारी होते हैं।

पर ध्यान देने की बात यह है कि इस तरह के अधिकारी और उनके काम करने का ढंग, मौर्य राजाओं के समय नया-नया ही शुरू हो रहा था। अजातशत्रु के समय में जरूर कुछ मंत्री व अधिकारी रखे जाने लगे थे। पर तुम खुद याद करो - पशुपालक आर्य और खेती करने वाले आर्यों के समय में हमने इतने सारे अधिकारी और उनके काम की यह व्यवस्था नहीं देखी थी। (इसे ही प्रशासन व्यवस्था भी कहा जाता है)

आर्यों के समय में ऐसा क्यों नहीं हुआ था ? इस प्रश्न पर कक्षा में चर्चा करो। कुछ 2-3 कारण सोच कर लिखो।

:: अशोक का "धम्म" ::

इतनी दूर-दूर के इलाके, इतने अलग-अलग लोग, पहले कभी एक राजा के नीचे नहीं आए थे। राजा अशोक ने अपनें विशाल राज्य के लोगों पर शासन करने की व्यवस्था कैसे की - यह हमने पढ़ा ।

पर अशोक ने अपनी प्रजा तक सिर्फ अपने अधिकारी और कर्मचारी ही नहीं भेजे । उसने लोगों तक अपने कई संदेश पहुंचाए जिसमें बताया कि वह कैसे युद्ध को छोड़ चुका है और कैसे लोगों की भलाई के कामों में लगा है ।

संदेश में उसने यह भी बताया कि अच्छा व भला जीवन क्या होता है, और कैसे वह चाहता है कि सब लोग एक भला जीवन बिताएं । इन्हीं बातों को वह "धर्म" या उन दिनों की भाषा में "धम्म" कहता था ।

उसने अपने राज्य में चारों तरफ यह सारी बातें, बड़ी-बड़ी चट्टानों और खम्भों पर खुदवाईं, जिससे कई सालों तक लोग उसके संदेश जान सकें ।

उसके अधिकारी चट्टानों व खम्भों पर खुदी बातें लोगों को पढ़कर सुनाते थे। उस समय भी सब लोग पढ़े-लिखे नहीं थे न ।

अशोक के स्तंभालेख (यानी खम्भों पर खुदे लेख), शिलालेख (यानी चट्टानों पर खुदे लेख) आज भी कई जगह हमें पढ़ने को मिलते हैं ।

● नक्शा क्र. 4 में देखो कहां-कहां हैं ।

आज के भारत के कौन-कौन से राज्यों में अशोक के शिलालेख मिलते हैं? कौन से राज्यों में बिल्कुल नहीं ?

● मध्य प्रदेश में कहां-कहां मिलते हैं, देखो ।

तुम्हें कहीं ये शिलालेख और स्तम्भालेख मिलें तो उन्हें पहचान सको इस लिए नीचे चित्र दिए गए हैं -

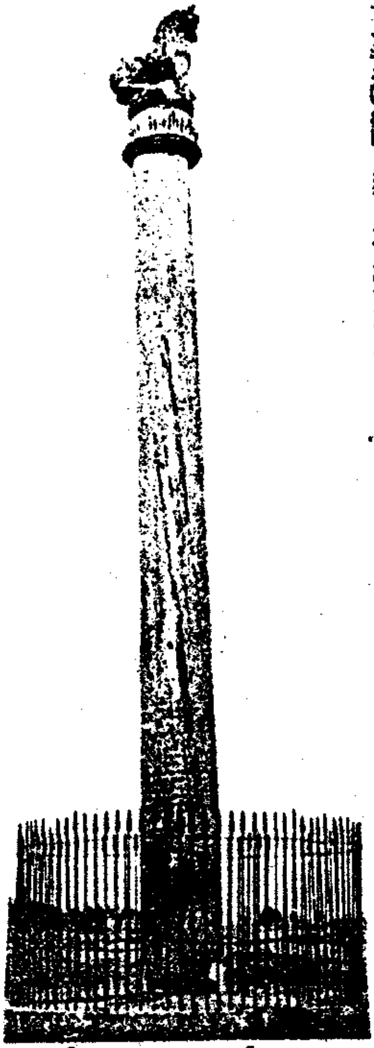
अशोक का खंभा

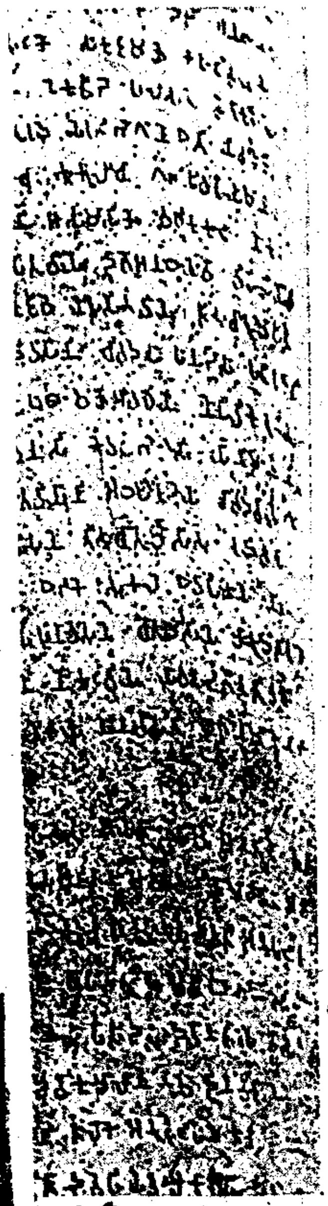
खंभे पर खुदा संदेश

अशोक के समय के अक्षर ऐसे ही होते थे । इस तरह की लिखाई को ब्राह्मी कहते हैं यह तुमने पिछले पाठ में देखा । आज से 100 साल पहले जब, इतिहासकारों ने इन शिलालेखों को खोजा तो उन्हें कुछ समझ नहीं आया कि इनमें क्या लिखा है । धीरे-धीरे बहुत मुश्किल से इतिहासकारों ने इन्हें पढ़ना सीखा । इनसे अशोक के बारे में, उसके राज्य के बारे में बहुत कुछ पता लगता है । ब्राह्मी लिपि (यानी लिखाई) के कुछ अक्षर तो तुम्हारी पहचान में आ गए हैं, जैसे म, र, ला ।

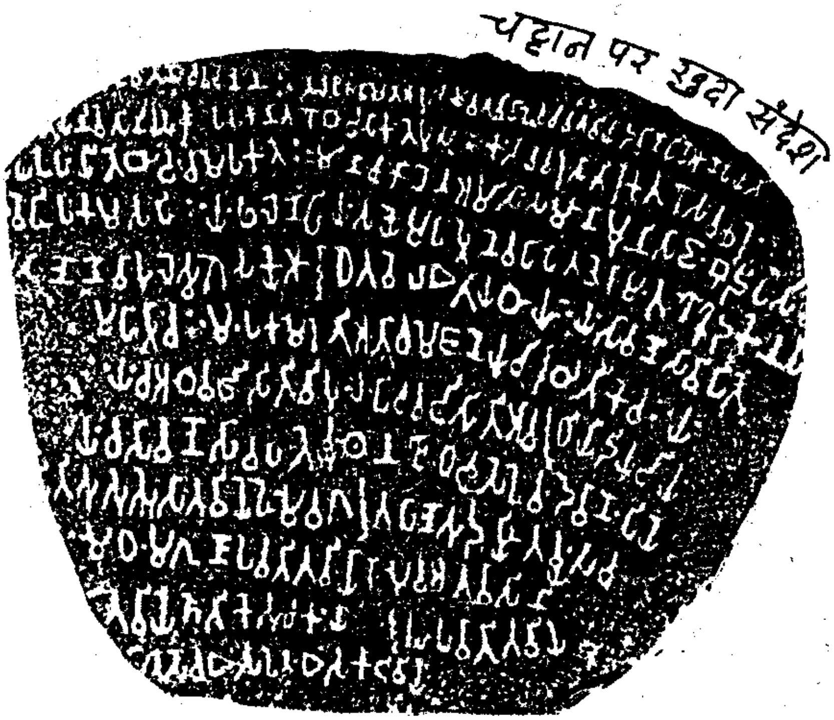

● इन्हें ऊपर दिए चित्रों में ढूंढो ।

हमने तुम्हारे लिए अशोक के कुछ संदेश हिन्दी में लिखकर यहां दिए हैं । इन्हें पढ़ो, और देखो कि राजा अशोक ने अपने राज्य के लोगों से क्या बातें कहीं ।

अशोक ने अलग-अलग जगह लिखवाया-

1• "जब मैंने कलिंग पर विजय पाई तो मुझे बहुत दुख हुआ । यह क्यों ? जब एक आजाद जनपद हराया जाता है, वहां लाखों लोग मारे जाते हैं । और बंदी बनाकर अपने जनपद से बाहर निकाल दिए जाते हैं । वहां रहने वाले ब्राह्मण, श्रमण मारे जाते हैं । ऐसे गृहस्थ जो अपने बंधु-मित्र, दास और मजदूरों से नम्रता पूर्ण बर्ताव करते हैं - ऐसे लोग युद्ध में मारे जाते हैं । अपने प्रियजनों से बिछुड़ जाते हैं । इस तरह हर किस्म के लोगों पर युद्ध का बुरा प्रभाव पड़ता है । इससे मैं बहुत दुखी हूं । अब मेरे लिए धर्म की विजय, युद्ध में प्राप्त विजय से बढ़कर है ।"

● इस संदेश में अशोक अपने दुख का क्या कारण बताता है ?

पर तुम एक बात और सोचो ।
अगर अशोक को कलिंग के युद्ध का पश्चाताप हुआ, तो उसने कलिंग राज्य को आजाद क्यों नहीं किया ? उसने कलिंग के लोगों को बंदी क्यों बनाया ?

2• "मैंने अपने अधिकारियों को आदेश दिया है कि वे हर पांच साल में अपने प्रदेश का दौरा करें और लोगों को धर्म के बारे में बतायें ।"

"लोग तरह-तरह के अवसरों पर तरह-तरह के संस्कार करते हैं। जब बीमार पड़ते हैं, जब लड़के लड़कियों की शादी होती है, जब बच्चे पैदा होते हैं, जब यात्रा पर निकलते हैं, आदि । महिलाएं खासकर बहुत से ऐसे बेमतलब के संस्कार करती हैं ।

ऐसे धार्मिक संस्कारों को करना चाहिए। मगर इनसे प्राप्त लाभ कम ही हैं । मगर कुछ संस्कार ऐसे होते हैं जिनसे अधिक फल मिलता है । वह क्या क्या हैं ? गुलाम और मजदूरों से नम्रता से व्यवहार करना, बड़ों का आदर करना, जीव जंतुओं से संयम से व्यवहार करना, ब्राह्मण और श्रमणों को दान देना आदि ।"

3. "मैं सभी धर्मों का आदर करता हूं, और सभी धर्मों के सन्यासियों और गृहस्थों को दान और सम्मान देता हूं । मैं चाहता हूं कि सब धर्मों के विचारों की उन्नति हो ।"

4. "अपने धर्म के प्रचार में संयम से बोलना चाहिए, अपने धर्म के गुणों को बढ़ा-चढ़ाकर कहना या दूसरे धर्मों की बुराई करना दोनों बातें गलत हैं । और हर तरह से हर वक्त दूसरे धर्मों का आदर करना चाहिए ।

अगर कोई अपने धर्म की बढ़ाई करता और दूसरे धर्मों की बुराई करता है तो वह वास्तव में अपने धर्म को हानि पहुंचाता है । इसीलिए एक दूसरों के धर्म की मुख्य बातों को समझना और उनका सम्मान करना चाहिए ।"

- अशोक ने लोगों से कैसा व्यवहार अपनाने को कहा ? पिछले तीन संदेशों को पढ़कर लिखो ।

5. "पहले समय में धर्म की उन्नति के लिए कोई अधिकारी नहीं था । मैंने सबसे पहले ऐसे अधिकारियों को नियुक्त किया । ये अधिकारी धर्म की स्थापना के लिए, लोगों में धर्म के प्रति रुचि बढ़ाने के लिए, धार्मिक लोगों की देखभाल के लिए निरन्तर काम कर रहे हैं । वे मजदूर, व्यापारी, किसान, ब्राह्मण, अनाथ, वृद्ध आदि की भलाई के लिए काम कर रहे हैं । वे धर्म को मानने वाले कैदियों को रिहा करने में व्यस्त हैं ।"

"बौद्ध संघ, ब्राह्मण आजीविक, जैन तथा अन्य धर्मों की देखभाल के लिए अलग-अलग अधिकारियों को मैंने नियुक्त किया है ।"

6. "मैंने सड़कों पर बरगद के पेड़ लगवाये ताकि पशुओं और मनुष्यों को छांव मिले । इसके लिए मैंने आम के बगीचे भी लगवाये । मैंने हर आधे कोस पर एक कुंआ भी खुदवाया, और ठहरने के लिए धर्मशाला भी बनवाई । मैंने यह सब केवल इसलिए किया ताकि लोग धर्म का पालन करें ।"

- अशोक ने अपनी प्रजा को अपने क्या-क्या कामों के बारे में बताया?

अशोक ने ऐसे संदेशों को दूसरे राजाओं के दरबार में भी, अपने अधिकारियों के हाथ पहुंचाया । उसके अधिकारी मिस्त्र, यूनान और श्रीलंका के राज्यों तक अशोक के संदेश लेकर गए ।

- तुमने कई राजाओं के बारे में पढ़ा-सुना होगा । क्या अशोक तुम्हें इन सब से कुछ बातों में फर्क लगता है ?

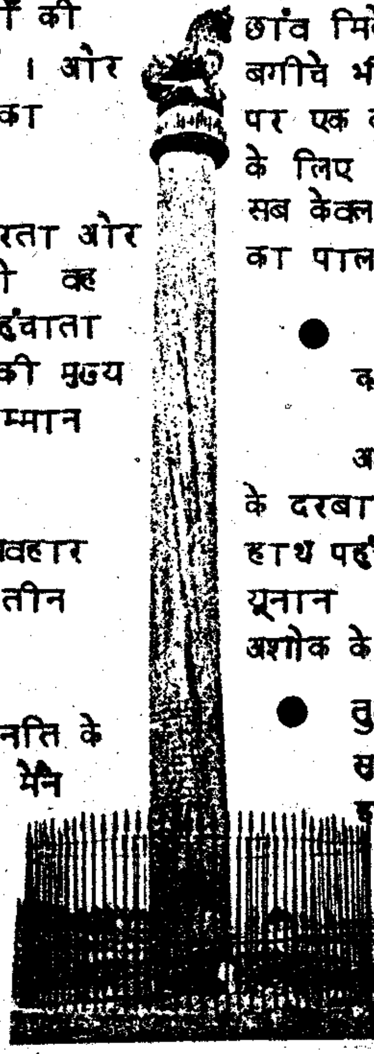

अभ्यास के प्रश्न

1. अशोक के समय में मगध राज्य के अन्दर क्या ये इलाके आते थे ?

क- गंगा नदी का मैदान
ख- विन्ध्याचल पर्वत
ग- सिंधु नदी का मैदान
घ- कावेरी नदी का मैदान
ङ- दक्कन का पठार
च- भारत के पूर्वी तट के कुछ भाग
छ- भारत का पूरा पश्चिमी तट
ज- हिमालय पर्वत के कुछ भाग
झ- गंगा नदी का मुहाना
ट- ब्रह्म-पुत्र नदी का पूरा मैदान
ठ- केस्पियन सागर का तट

2. अशोक के राज्य के पांच प्रमुख केन्द्रों के नाम लिखो ।

3. मौर्य राजाओं के अधिकारी किस-किस तरह के काम करते थे बताओ ।

4. मौर्य राजाओं ने किन कारणों से प्रशासन की पूरी व्यवस्था की ?

पाठ-10 विदशों से व्यापार और संपर्क

जिस पुराने समय के बारे में हम पढ़ रहे हैं, उस समय भारत का यूनान, रोम, ईरान और मिस्त्र जैसे देश के लोगों के साथ काफी संपर्क हुआ ।

तुम जानते हो कि यूनान का राजा सिकन्दर भारत आया था । उसके लौटने के बाद भी ईरान और अफगानिस्तान में उसके सेनापति राज्य करते रहे ।

मौर्य राजाओं ने उनके राज्यों को अपने राज्य में मिला लिया था । अशोक का नक्शा देखो--उसका राज्य अफगानिस्तान तक फैला था ।

अशोक की मृत्यु के बाद ईरान व अफगानिस्तान में फिर से यूनानी राजाओं ने अपने राज्य बना लिए । उन्होंने पंजाब के क्षेत्र पर भी कब्जा कर लिया । इस पूरे समय में कई यूनानी भारत में बसते रहे । वैसे काफी समय से भारत के व्यापारी यूनान तक व्यापार करने जाते रहे थे और वहां के व्यापारी यहां आते रहे थे । मेनान्डर और डिमिट्रियस नाम के यूनानी राजा बहुत प्रसिद्ध हुए ।

यूनानियों के अलावा मध्यएशिया से भी कई और लोग भारत आकर बसे । इन्होंने यूनानी राजाओं को हरा कर उत्तर भारत पर अपना राज्य स्थापित किया । इनमें से शक वंश व कुषाण वंश प्रसिद्ध हैं । जबकि दक्षिण भारत में इस समय शतवाहन वंश के राजाओं का राज्य बन गया ।

जिस विशाल क्षेत्र में मौर्य वंश राज्य करता था वहां अब कई राज्य हो गए। इन राज्यों के बीच भी लगातार लड़ाईयां होती रहती थीं। कभी किसी वंश का राज्य बड़ा हो जाता, तो कभी किसी का।

इन वंशों के कुछ प्रमुख राजाओं के नाम जान लो। कनिष्क और कृष्ण नाम के कुषाण वंश के राजा थे।

रूद्रदामन शक वंश का प्रसिद्ध राजा था। शतवाहन वंश में वसिष्ठीपुत्र और

नक्शा - 5 कुशाण, शक और शतवाहन राज्य

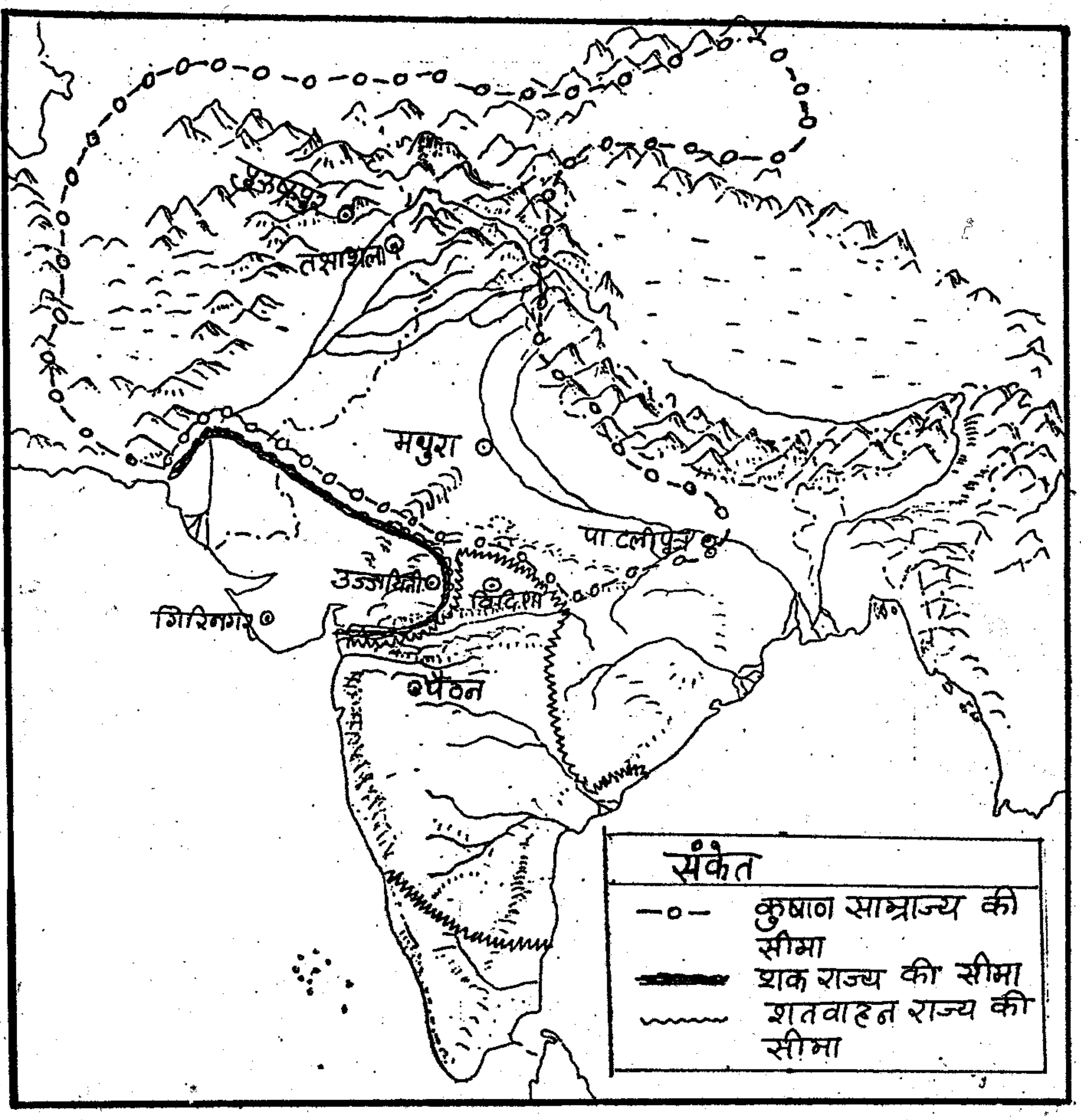

गौतमीपुत्र सतकर्णी नाम के बड़े राजा हुए ।

यद्यपि यह कहना मुश्किल है कि किस वंश का राज्य कहां तक था, फिर भी, नक्शा नं• 5 से एक अंदाज लग सकता है।

इस नक्शे में कुषाण, शक व शतवाहन राज्यों के इलाकों को अलग-अलग रंगों से भरो ।

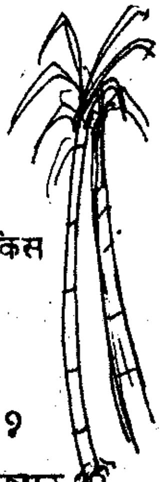

- इनमें से कौन सा राज्य सबसे बड़ा है ?

  आज का गुजरात प्रदेश उस समय किस के राज्य में था ?

  आज का महाराष्ट्र उस समय किस राज्य में था ?

  मथुरा किस के राज्य में था ?

  गिरिनगर किस के राज्य में था ?

  अगर कोई व्यापारी पैठन से पुरुषपुर जाना चाहता तो वह किस-किस के राज्यों से होकर जाता ?

  क्या यह सारे इलाके पहले मौर्य राज्य में आते थे ?

  कुषाण राज्य के उन हिस्सों को अलग से दिखाओ जहां मौर्यों का राज्य नहीं था । वहां कौन से पहाड़ थे ?

  एशिया के कौन-कौन से देशों के हिस्से उस समय कुषाण राज्य में थे ?

विदेशों से व्यापार

इस समय बहुत दूर-दूर तक जाकर व्यापार किया जाता था । पाटलीपुत्र, मथुरा, पुरुषपुर के व्यापारी अफगानिस्तान होते हुए यूनान तक जाते थे और यूनान के व्यापारी यहां आते थे । भड़ोच, मुसिरी और कोरकई के व्यापारी समुद्र की यात्रा कर के रोम और मिस्त्र पहुंचते थे ।

यूनान व रोम के व्यापारी भारत से क्या चीजें खरीदते थे ? बहुत सारी चीजें जैसे-

1• काली मिर्च, दाल चीनी, जीरा, अदरक जैसे मसाले । ऐसे मसाले यूरोप में नहीं उगते हैं । (यूनान और रोम यूरोप महाद्वीप के देश हैं।) वहां के लोगों को यह मसाले भारत से ही मिलते थे ।

2• शक्कर और चावल : यूरोप में उस समय गन्ना नहीं उगता था । वहां मीठे के लिए शहद का इस्तेमाल किया जाता था । भारत आने पर गन्ने को देखकर यूनानी व रोमन व्यापारियों को बहुत आश्चर्य हुआ । पौधे से शहद से भी ज्यादा मीठी चीज मिलती थी । इसी लिए वे भारत से शक्कर खरीदते थे । यूरोप में अधिक ठंड के कारण चावल भी कम उगते थे, गेहूं और जौ अधिक होते थे। इसलिए वह चावल भी भारत से ही खरीदते थे ।

3• उस समय मगध और शतवाहन राज्य के कारीगर मजबूत लोहे की चीजें बनाते थे । भारत का लोहा काफी मशहूर था और यूनान, मिस्त्र आदि देशों के व्यापारी भारत से ही लोहा खरीदते थे ।

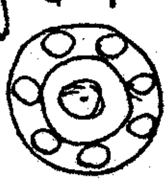

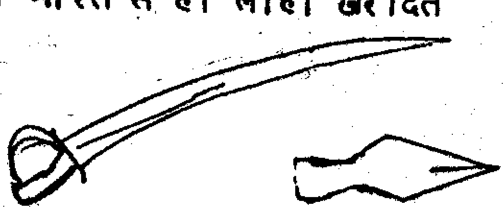

4• यूरोप में कपास नहीं उगता था इसलिए वहां के व्यापारी सूती कपड़े यहीं से खरीदते थे। उसके अलावा लाख और नील जैसे रंग भी वे भारत से ही खरीदते थे।

5• रोम और मिस्त्र के अमीर लोगों को तरह-तरह की सुन्दर वस्तुएं इकट्ठा करने का बहुत शौक था। भारत में बने गहने, इत्र, चंदन, हाथी-दांत, मोती आदि की इन देशों में खूब मांग थी। यही नहीं, तरह-तरह के जानवर जो यूरोप में नहीं पाए जाते - हाथी, शेर बाघ, भैंस, लंगूर, तोते, मोर-भी यहां से जाया करते थे।

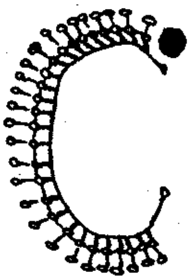

इन चीजों के बदले रोम और मिस्त्र के व्यापारी भारत क्या-क्या लाते थे?

अ. खूब सारे सोने के सिक्के, खासकर रोम से भारत आते थे।

ब. सुन्दर घड़े व कांच की चीजें। इन सुन्दर घड़ों में शायद कीमती मदिरा लाई जाती थी। यूनान में अच्छे अंगूर उगने की वजह से अच्छे किस्म की मदिरा बनती थी।

स. इसके अलावा कई धातुएं जैसे टीन, सीसा (लेड) आदि भी विदेशों से भारत आतीं थीं।

अब नक्शा क्र•6 देखो। इस नक्शे में दिखाया गया है कि व्यापारी कौन-कौन से रास्तों से कहां-कहां जाते थे, और भारत में बंदरगाह कहां-कहां थे।

नक्शे में व्यापार का जलमार्ग देखो। समुद्र के इन रास्तों से व्यापारियों के भरे भराए जहाज सफर करते थे।

- अगर एक व्यापारी अपना सामान बड़ौंच पर जहाज में लादता है और उसे बेरू पहुंचाना चाहता है, तो वह कैसे जाएगा?

रोम का माल ताम्रलिप्ति पहुंचाने के लिए एक व्यापारी किन रास्तों को अपना सकता था?

भारत के तट पर कौन कौन से बंदरगाह थे?

उन दिनों दक्षिण भारत और रोम, मिस्त्र, यूनान के बीच व्यापार समुद्र मार्ग से ही ज्यादा होता था। दक्षिण भारत के कई बंदरगाहों में यूनानियों की बस्ती भी थी।

- नक्शे में देखकर यह भी बताओ कि पाटलीपुत्र से बड़ौंच जाने वाली सड़क किस नगर से होकर जाती थी?

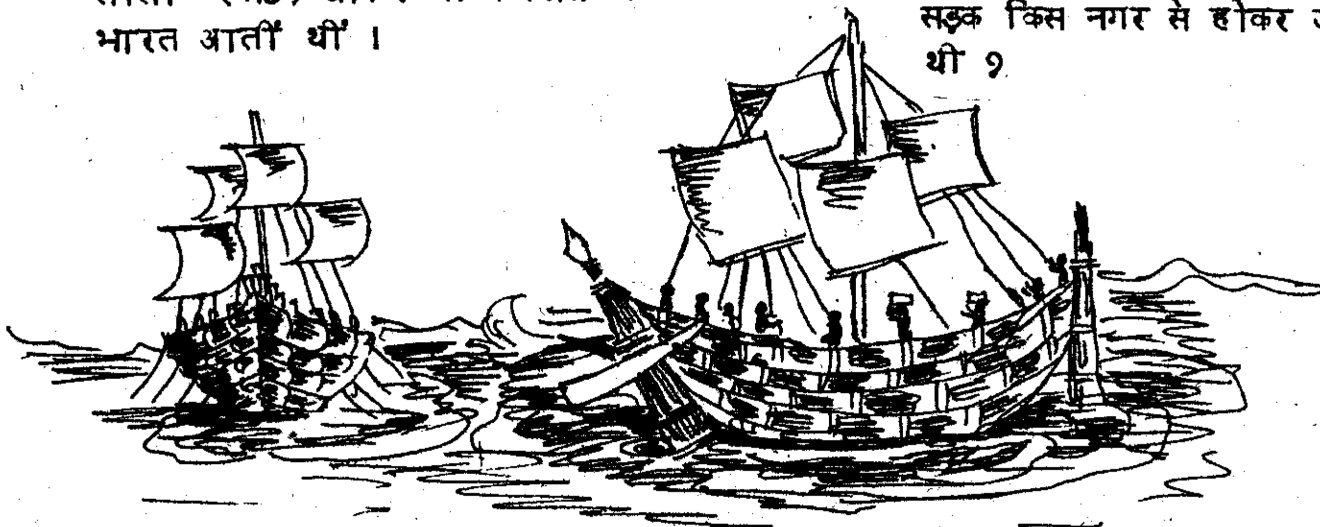

- यह यात्रा कितने किलोमीटर लम्बी थी ?

क्या यह अनुमान लगा सकते हो कि उस समय इस यात्रा को करने में कितना समय लगता होगा ? उस समय रेलगाड़ी तो थी नहीं । मोटर व हवाई जहाज भी नहीं थे । लोग बैलगाड़ियों में जाते थे। यदि हम मान लें कि एक बैलगाड़ी एक दिन में 40 कि॰मी॰ चलती है तो पाटलीपुत्र से बड़ौंच जाने में कितने दिन लगते होंगे ?

- गंधार से रोम जाने के मार्ग देखो । रोम आज के इटली नामक देश की राजधानी है । क्या गंधार से रोम तक सड़क मार्ग था ?

अगर कोई व्यापारी पाटलीपुत्र से चले तो वह रोम कौन-कौन से रास्तों से जा सकता था - इन रास्तों में कौन-कौन से मुख्य शहर पड़ते थे ? एक ऐसा रास्ता ढूंढो जिसमें अधिक समय सड़क से यात्रा करनी पड़े, और एक ऐसा रास्ता

नक्शा - 6 व्यापार के पुराने मार्ग

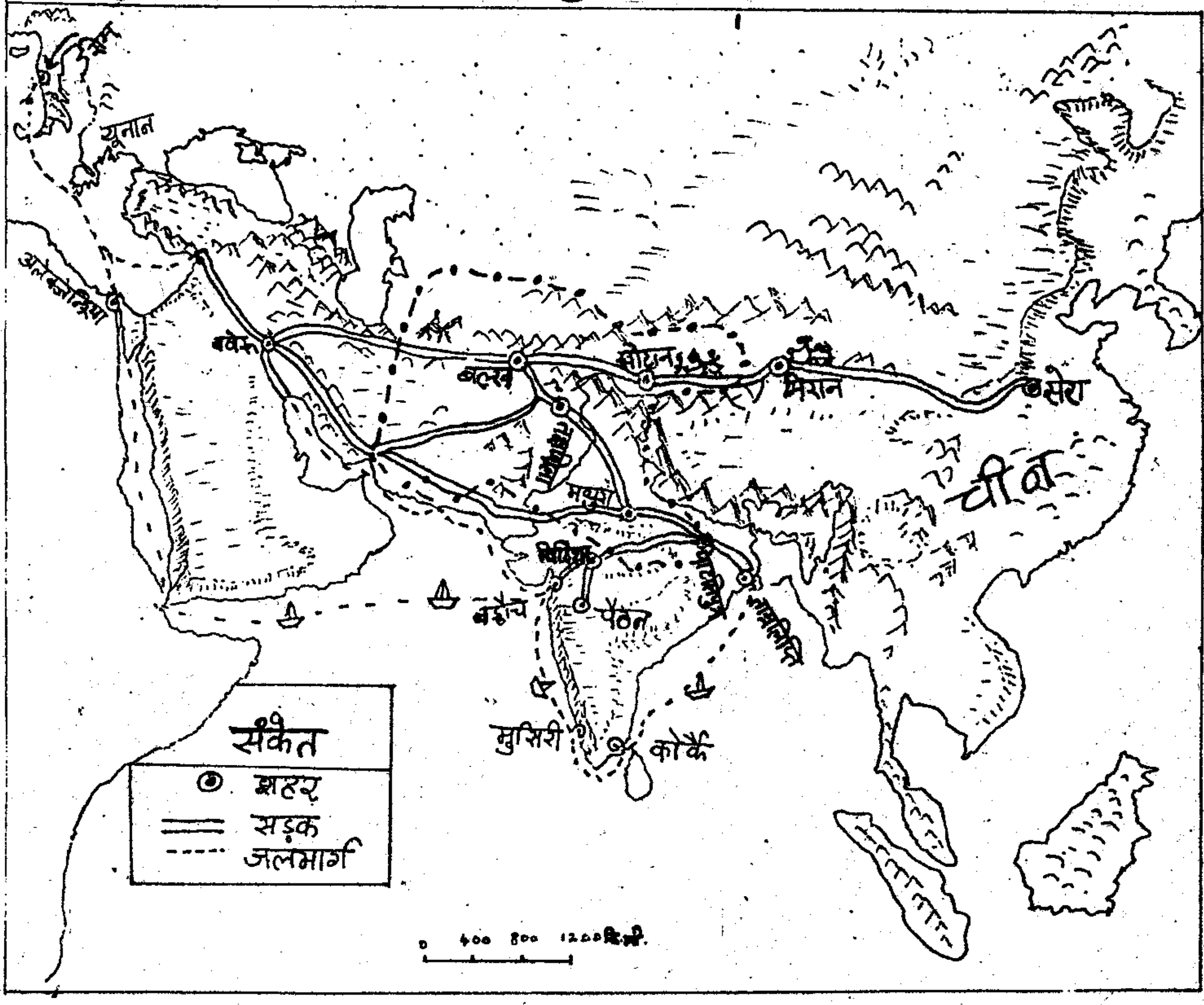

भी ढूंढो जिसमें अधिकतर समय समुद्र से यात्रा करनी पड़ती हो ।

उस समय चीन से रोम हजारों मील लम्बी सड़क थी । इस सड़क से व्यापारी आते जाते थे । चीन से कीमती रेशम के कपड़े लेकर रोम जाते थे । और इसी-लिए इस सड़क को रेशम सड़क कहा जाता था । यह सड़क ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों, गर्म रेगिस्तानों, तेज बहती नदियों, बर्फीले प्रदेशों आदि से गुजरती थी । इन पर व्यापारी ऊँटों, घोड़ों और खच्चरों पर बैठकर बड़े-बड़े समूहों में एक साथ चलते थे । ऐसे समूह को कारवां कहते हैं । व्यापारियों के कारवां महीनों तक यात्रा कर के एक जगह से दूसरी जगह जाते थे ।

- क्या रेशमी सड़क कुषाण राज्य से गुजरती थी ? पाटलीपुत्र से जो सड़क निकलती थी वह रेशम सड़क से कहां पर मिलती थी ?

कुषाण राजा अपने राज्य से गुजरने वाले व्यापारियों से कर वसूल करते थे। इन सब करों को इकट्ठा करने से उनके पास खूब सारा सोना जमा हो गया था । इस सोने का इस्तेमाल उन्होंने

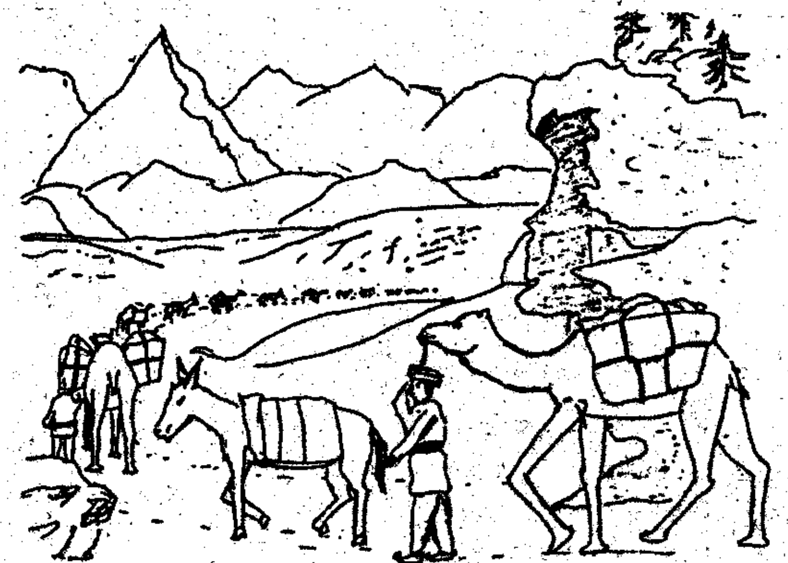

सोने के खूबसूरत सिक्के बनवाने के लिए किया ।

इस समय के ढेरों सिक्के मिलते हैं । इन सिक्कों से व्यापारी लेन-देन करते थे । कुषाण राजाओं ने जो सिक्के जारी किए ये उनके चित्र हैं -

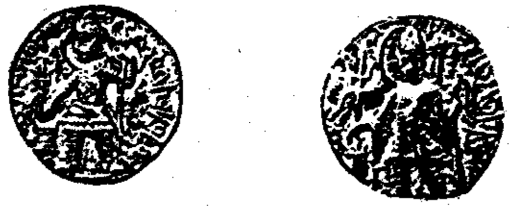

इन सिक्कों में से बहुत से सिक्कों पर कुषाण राजा अपनी तस्वीर और नाम लिखवाते थे । इन सिक्कों को देखो । इनके किनारों पर कुछ लिखा है । सिक्के बनाने के लिए पहले सोना पिघलाया जाता, फिर उसे सांचे में डाला जाता । जब सांचे में सोना ठंडा हो जाता तो वह मजबूत सोने का सिक्का बन जाता । फिर उसे सांचे से निकाल लिया जाता ।

- क्या पहले भी सिक्के इसी तरह बनते थे ?

इस तरीके से सिक्के बनाना कुषाणों ने यूनानी लोगों से सीखा । नीचे कुछ यूनानी राजाओं के चांदी के सिक्के दिए गए हैं ।

- इनमें और कुषाण राजाओं के सिक्कों में क्या समानता है ?

अभ्यास के प्रश्न

1• इस समय के प्रमुख राज्य किन वंशों के थे ?

2• इस समय के व्यापार के रास्तों पर 8 वाक्य लिखो ।

3• व्यापार किन वस्तुओं का होता था ?

4• अलग-अलग समय के सिक्कों की अपनी पहचान होती है । क्या नीचे दिए चित्रों में से तुम जनपदों के सिक्के व कुषाण वंश के सिक्के अलग छांट सकते हो ?

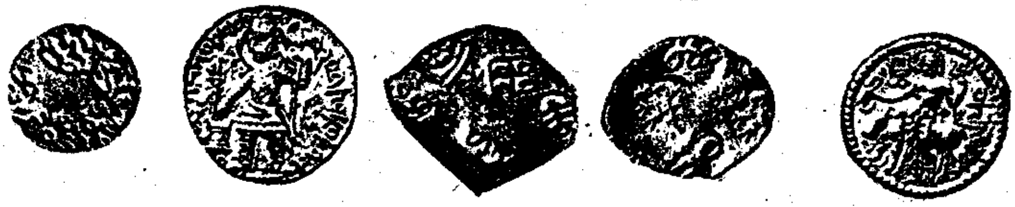

5• कई राजवंशों के राज्यों के बारे में तुम पढ़ चुके हो । अजातशत्रु, महापद्मनंद, अशोक, कुषाण वंश, शक वंश, शातवाहन वंश। तो बताओ कि नीचे दिए गए क्षेत्र किस-किस के राज्य में रह चुके हैं -

क- गंगा नदी का निचला मैदान

ख- गंगा नदी का ऊपरी मैदान

ग- सिन्धु नदी का मैदान

घ- हिमालय पर्वत

ङ- हिन्दुकुश पर्वत

च- अफगानिस्तान का पठार

छ- दक्कन का पठार

ज- थ्यान शान पर्वत

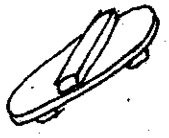

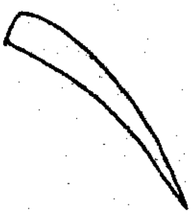

पाठ-7 सरकार

तुमने पंचायत और नगर पालिका के बारे में पढ़ते समय कई बार "सरकार" शब्द को पढ़ा होगा ।

- "पचायत" और "नगरों में सुविधाओं का प्रबन्ध" अध्याय में किन-किन अवसरों पर सरकार के बारे में तुमने पढ़ा - अपनी कॉपी में एक सूची बनाओ ।

- तुम कौन-कौन सी सरकारी संपत्ति या चीजों के बारे में जानते हो या इस्तेमाल करते हो, इसकी भी एक सूची बनाओ ।

- तुम कौन-कौन से सरकार से संबंधित व्यक्तियों के बारे में जानते हो ?

क्या तुमने कभी सोचा है कि आखिर यह "सरकार" क्या है ? चलो इस पाठ से हम सरकार के बारे में कुछ समझने की कोशिश करते हैं ।

नियम बनाना, सब लोगों से उन नियमों का पालन करवाना और जो उनका पालन न करें उन्हें दण्ड देना- ये सरकार के प्रमुख काम हैं ।

तुम कई तरह के नियमों का पालन करते हो । तुम्हारे घर में तुम्हें कई नियमों का पालन करना होता होगा। जैसे-कब सोना, कब जागना, कब और कैसे खाना, कब नहाना धोना, कब खेलना, पढ़ना आदि काम तुम किसी नियम के अनुसार करते होगे । घर के

- यह नियम कौन तय करता है ? ये कैसे तय होते हैं ?

तुम हमेशा अपनी मर्जी से तो नहीं चल सकते हो । कुछ बातें अपने बड़ों से पूछकर ही करनी पड़ती हैं । कुछ बातें अपनी मर्जी से भी कर सकते हो । कौन सी बातें तुम बिना पूछकर कर सकते हो और कौन सी बातें तुम्हें बड़ों से पूछकर करनी होंगी - यह भी किसी नियम के अनुसार ही होगा ।

इसी तरह तुम्हारे स्कूल में भी नियम होंगे । कब आना, कैसे बैठना·· कैसे खेलना, कब खाना, ऐसे अनेक नियम हैं ।

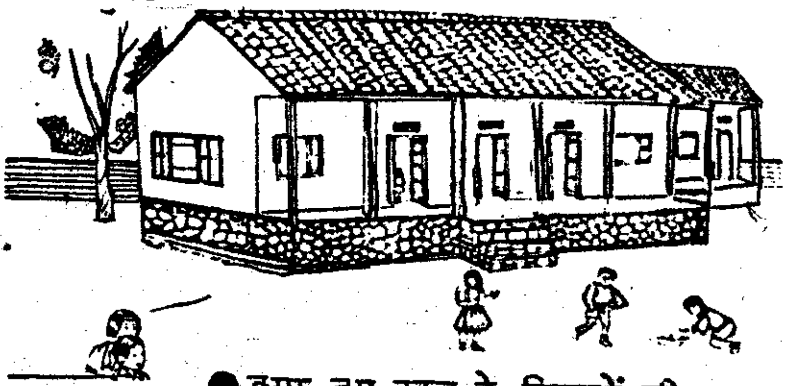

- क्या तुम स्कूल के नियमों की एक सूची बना सकते हो ?
- किस ने ये नियम बनाये ?
- यदि तुम इनमें से किसी नियम को न मानो तो क्या होगा ?

घर और स्कूल में नियम होते हैं। तुम्हें पता होगा कि कई और तरह के नियम भी होते हैं। जैसे- रेल में यात्रा करने के, सामान खरीदने बेचने के, ज़मीन

जायदाद खरीदने बेचने के, दुकान, कारखाना खोलने के आदि। देश के करोड़ों लोगों के अनेक काम इन नियमों के हिसाब से होते हैं।

- क्या तुम्हें इन चीजों के नियमों की कुछ जानकारी है? आपस में चर्चा करो और गुरूजी से भी पूछो।

- अब सोचो कि ये नियम कौन बनाता है? इन्हें बनाना क्यों जरूरी है?

अपना देश हजारों मीलों में फैला हुआ है और उसमें करोड़ों लोग रहते हैं। सरकार इस पूरे देश में रहने वाले लोगों के लिए तरह-तरह के नियम बनाती है। ये नियम अपने देश में रहने वाले सब लोगों पर समान रूप से लागू होते हैं। सरकार द्वारा बनाये गए इन नियमों को कानून कहते हैं।

- तुम्हारी शाला में क्या कोई कानून लागू होते हैं? गुरूजी से पता करो तुम्हारी शाला से संबंधित क्या-क्या कानून हैं।

अब देखते हैं कि सरकार कानून कैसे बनाती है।

:: केन्द्रीय सरकार ::

पूरे भारत देश की जो सरकार है उसे केन्द्रीय सरकार कहा जाता है। केन्द्रीय सरकार या भारत सरकार में तीन तरह के लोग होते हैं - कानून व नीतियां बनाने वाले, उनको लागू करवाने वाले और कानून तोड़ने वालों को दण्ड देने वाले। जो लोग कानून बनाते हैं उन्हें <u>सांसद</u> या <u>संसद सदस्य</u> कहते हैं।

सांसद कौन होते हैं? वे कैसे सांसद बनते हैं? सांसद जनता द्वारा पांच साल के लिए चुने जाते हैं। जिस प्रकार पंच या नगर-पालिका सदस्य वार्डों से चुने जाते हैं, उसी प्रकार सांसद चुनने का भी एक क्षेत्र होता है। यह क्षेत्र किसी भी वार्ड से बहुत बड़ा होता है। इस क्षेत्र को <u>संसदीय चुनाव क्षेत्र</u> कहा जाता है। इस क्षेत्र में कई गांव व शहर आ जाते हैं। उदाहरण के लिए एक संसदीय चुनाव क्षेत्र में पूरा बैतूल जिला और होशंगाबाद जिले के हरदा, टिमरनी व खिड़किया विकास खण्ड आते हैं।

कई शहरों में घनी आबादी रहती है - जैसे, भोपाल, इन्दौर, दिल्ली, मद्रास। ऐसे शहरों में तो एक से अधिक चुनाव क्षेत्र होते हैं। कुछ शहरों से तो सात-आठ सांसद चुने जाते हैं।

एक संसदीय चुनाव क्षेत्र के लोग मिलकर एक सांसद चुनते हैं।

इस तरह पूरा भारत संसदीय चुनाव क्षेत्रों में बांटा गया है। हर गांव या शहर किसी न किसी क्षेत्र में होता है।

चुनाव क्षेत्र के सभी लोग जिनकी उम्र 21 वर्ष से अधिक है, सांसद के चुनाव में वोट डाल सकते हैं।

- तुम जिस जगह रहते हो वह कौन से संसदीय क्षेत्र में आता है ?
- तुम्हारा संसदीय क्षेत्र कितना बड़ा है ? उसमें और कौन-कौन सी जगह गांव, शहर मोहल्ले आते हैं ?
- तुम्हारे क्षेत्र का सांसद कौन है ?

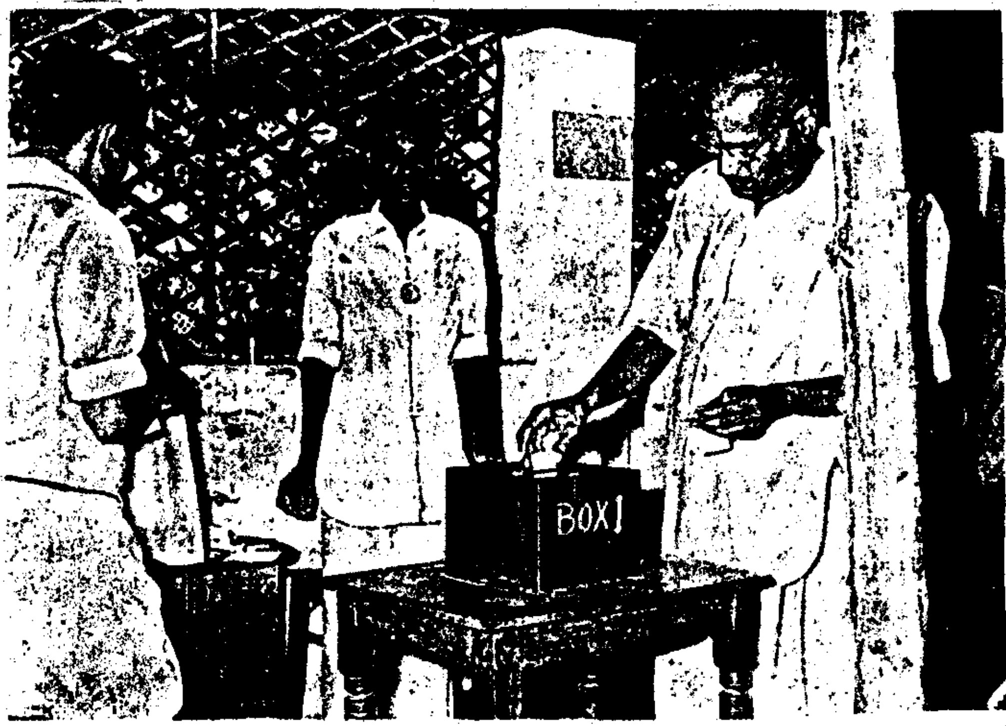

वोट डालते हुए

मध्यप्रदेश के कुछ संसदीय चुनाव क्षेत्रों का नक्शा

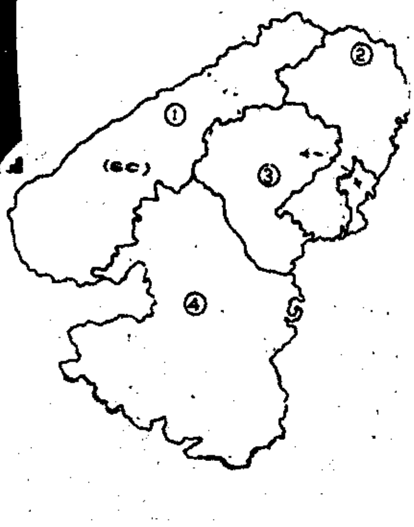

पूरे भारत से कुल 544 सांसद चुने जाते हैं। नई दिल्ली में संसद सदन है। यहां सांसदों की बैठक होती है। संसद की बैठक में कम से कम 109 सांसदों का होना जरूरी होता है। इन बैठकों में देश की विभिन्न समस्याओं पर चर्चा की जाती है।

भारत के हर राज्य से सांसद चुनकर संसद में आते हैं।

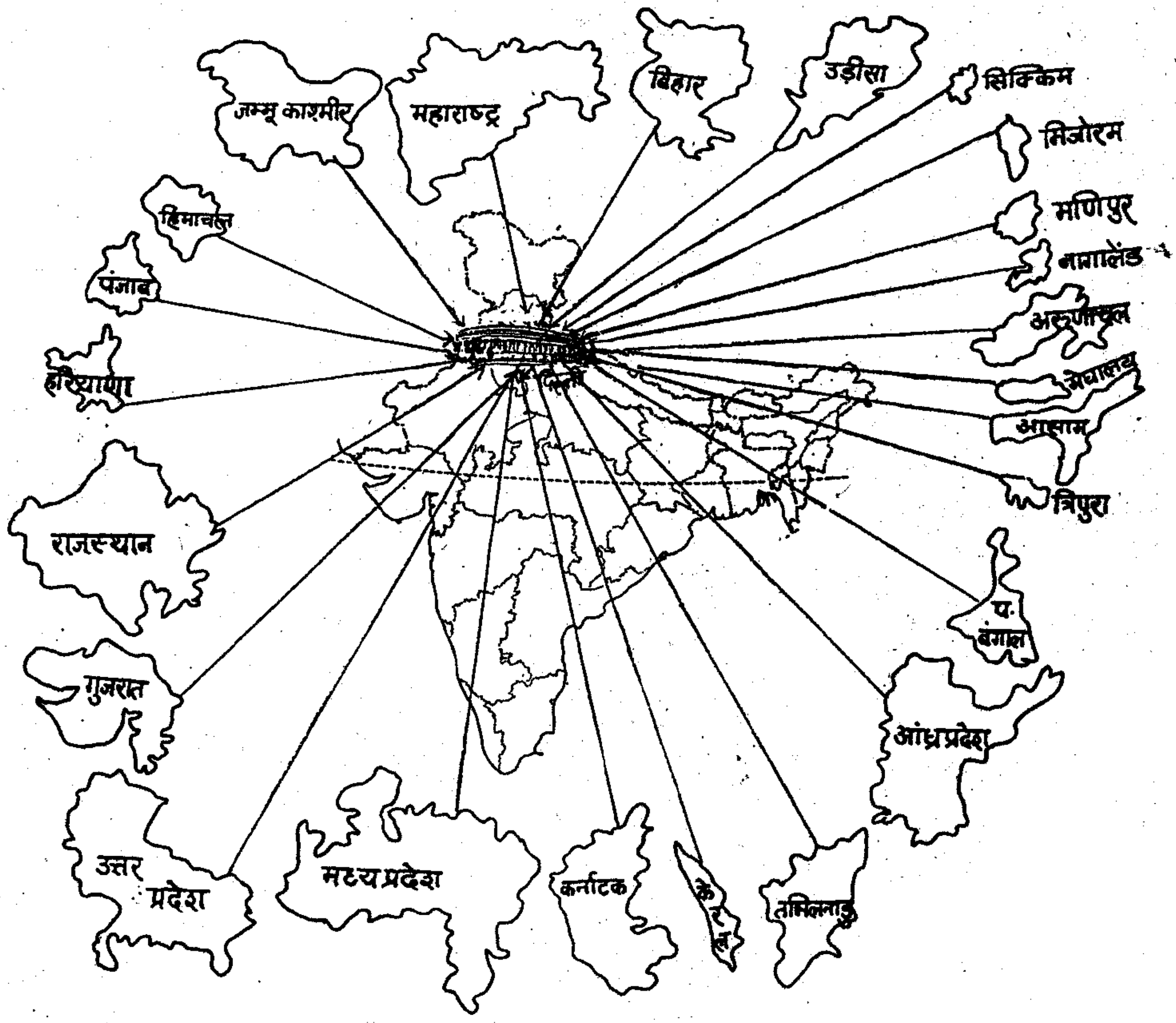

नई दिल्ली ही भारत की राजधानी है।

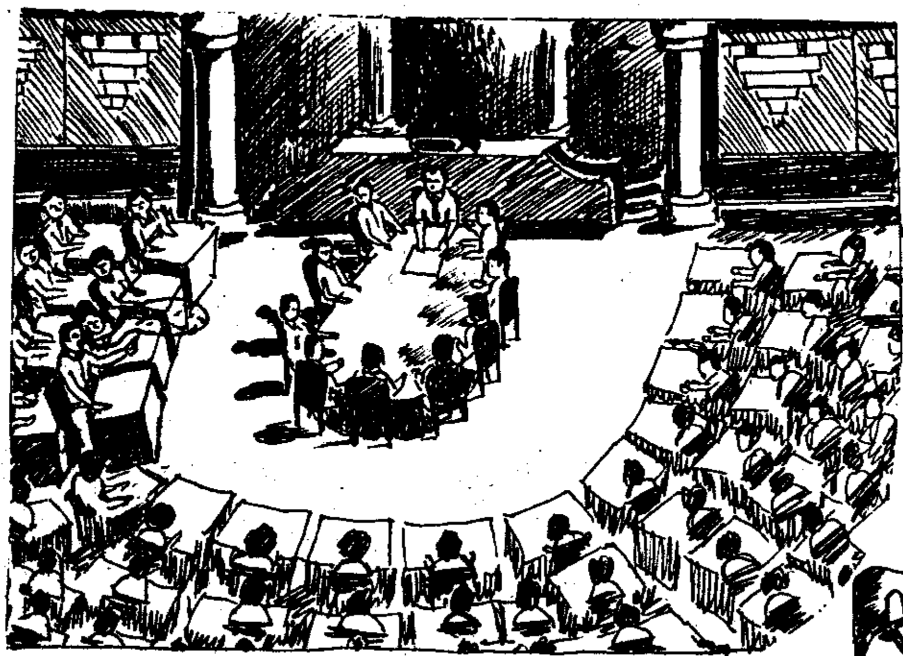

संसद में विधेयक पर चर्चा

राष्ट्रपति कानून पर हस्ताक्षर करते हुए

जब कोई नया कानून बनाना हो तो उस पर खूब चर्चा की जाती है और अंत में सब सांसद उस कानून के बारे में अपना फैसला सुनाते हैं । कोई उस कानून को बनाने के पक्ष में होता है कोई उसके विरोध में । अगर संसद में उपस्थित सदस्यों में आधे से अधिक सदस्य उस कानून के पक्ष में हो तभी उसे पास किया जाता है । फिर यह राष्ट्रपति के पास जाता है । उनकी मंजूरी पाने के बाद वह वास्तव में कानून बन जाता है ।

कानून तो संसद में बन गया । पर यह कौन देखता है कि कानून लागू भी हो ? सांसदों में से ही कुछ लोगों को कानून व नीतियों को लागू करवाने का काम दिया जाता है । यह काम केन्द्रीय मंत्री मंडल करता है ।केन्द्रीय मंत्रीमण्डल भी नई दिल्ली में काम करता है ।

केन्द्रीय मंत्री मंडल कैसे बनती है ?

अधिकतर सांसद किसी न किसी पार्टी के होते हैं । जिस पार्टी के 272 से अधिक सांसद चुनाव जीतते हैं उसे बहुमत वाली पार्टी कहा जाता है - यानि संसद में उसी पार्टी का बहुमत होगा । उसी पार्टी के नेता को राष्ट्रपति प्रधान मंत्री नियुक्त करते हैं और उससे अपना मंत्री मंडल बनाने को कहते हैं ।

प्रधान मंत्री संसद के सदस्यों में से मंत्री चुनते हैं । अगर कभी प्रधान मंत्री चाहे तो किसी भी मंत्री को हटाकर नए मंत्री नियुक्त कर सकते हैं । प्रधान मंत्री और उनका मंत्रिमंडल कानूनों को लागू करवाते हैं ।

संसद भवन में सांसदों की बैठक

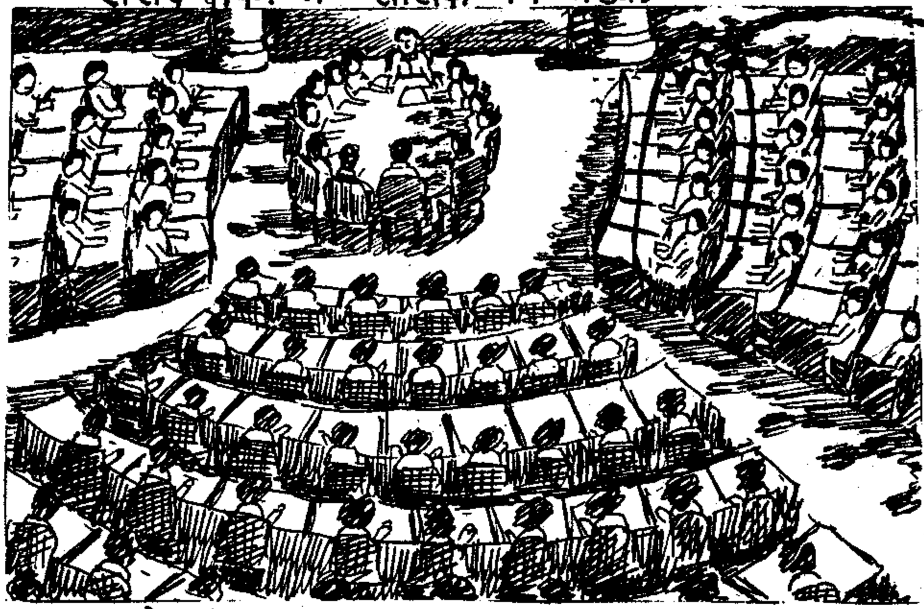

मंत्रिमंडल

बोलचाल की भाषा में केन्द्रीय मंत्रिमंडल को केन्द्रीय "सरकार" भी कहा जाता है। इसीलिए तुमने सुना होगा कि "इस" पार्टी की सरकार बनी या "उस" पार्टी की सरकार बनी।

सरकार संसद में बनी नीतियों को लागू करने के लिए लाखों कर्मचारियों को नियुक्त करती है। ये सरकारी कर्मचारी अलग-अलग विभागों में काम करते हैं। जैसे - रेल कर्मचारी, डाक व तार विभाग के कर्मचारी, सेना के कर्मचारी। उन्हें मंत्रिमंडल के आदेशानुसार काम करना होता है। इन्हें केन्द्रीय सरकार से तन्खवाह मिलती है। ये सब केन्द्रीय सरकार के कर्मचारी होते हैं।

तुम्हारे शिक्षक, तुम्हारे गांव के पटवारी, तहसीलदार, थानेदार ये सब भी सरकारी कर्मचारी हैं। मगर ये केन्द्रीय सरकार के कर्मचारी नहीं हैं। ये तो राज्य सरकार के, यानि मध्य-प्रदेश सरकार के कर्मचारी हैं। हम तो केन्द्रीय सरकार की बात कर रहे थे, तो ये राज्य सरकार की बात कहाँ से आ गई? राज्य सरकार क्या होती है? चलो देखते हैं।

सेना

विदेशों से संपर्क

::राज्य सरकार::

पूरे भारत की एक सरकार तो है ही, पर इस के अलावा भारत करीब 24 राज्यों में बंटा है। इन राज्यों की अपनी सरकारें हैं। हां, तुम यह तो समझ गए होगे कि ये राज्य किसी राजा के घटते बढ़ते राज्य नहीं। इन राज्यों की सरकारें बदलती हैं, राज्य वही रहता है।

राज्यों की अपनी-अपनी सरकार होने का यह मतलब नहीं कि वे केन्द्रीय सरकार से स्वतंत्र हैं। केन्द्रीय सरकार पूरे भारत के लिए कई विषयों का कानून बनाती है। जैसे - सेना, विदेशों से संबंध डाक-तार, रेल्वे, रुपये, सिक्के, बैंक आदि। ये कानून पूरे देश पर लागू

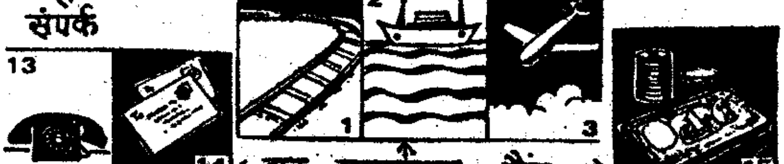

←डाक, यातायात, बैंक →

होते हैं । लेकिन कई विषय हैं जिन पर राज्य सरकार अपने कानून बनाती है । जैसे कृषि से संबंधित, पंचायत संबंधी आदि ।

● नीचे दिए गए नक्शे में राज्यों के नाम भरो । तुम जिस राज्य के हो उस राज्य को किसी रंग से रंग दो ।

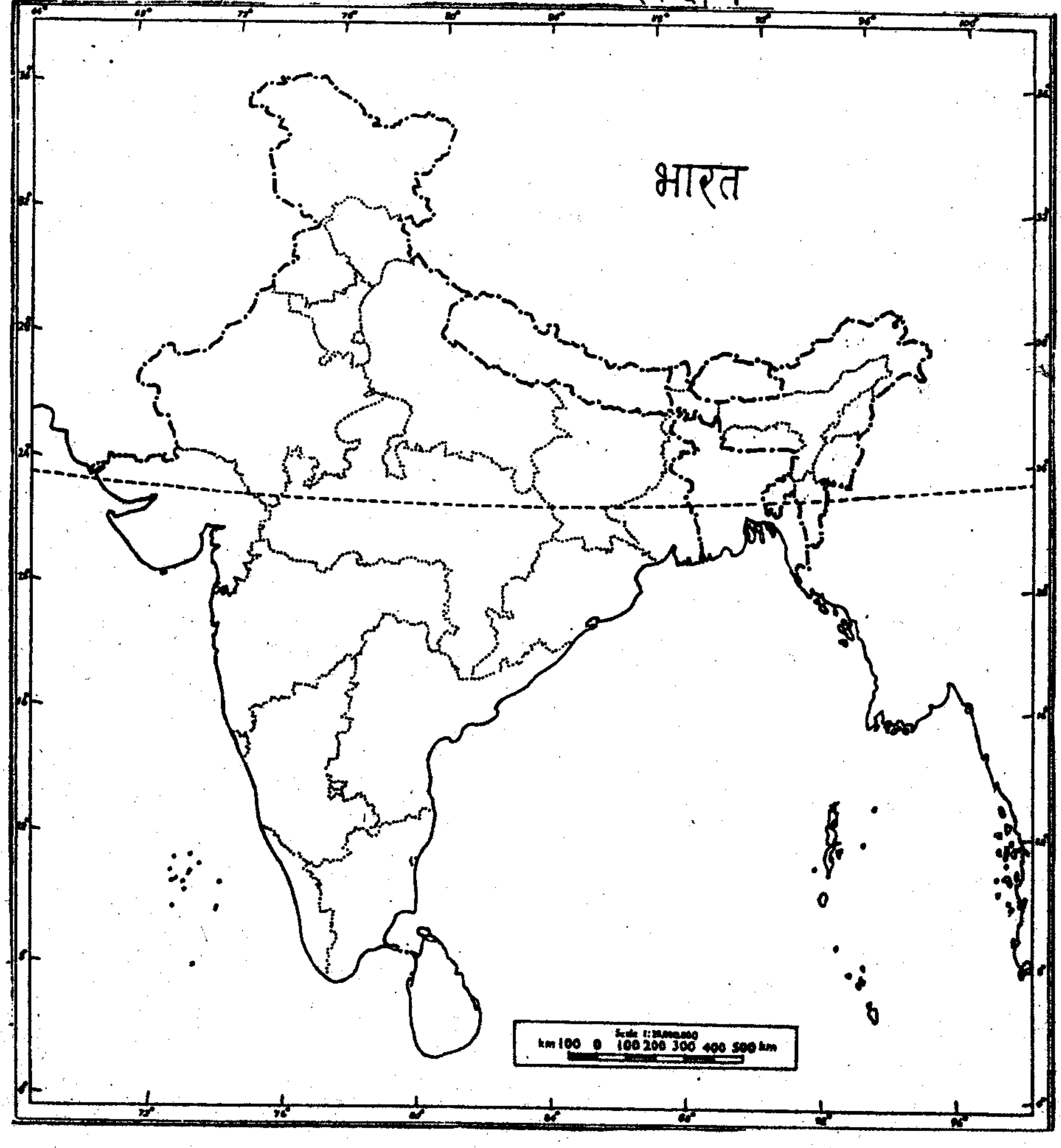

हर राज्य की सरकार अपने-अपने राज्य के लिए कानून बनाती है ।

- क्या मध्य प्रदेश सरकार द्वारा बना कानून हिमाचल प्रदेश में लागू हो सकता है ?
- क्या तामिलनाडु सरकार पंजाब के लिए कानून बना सकती है ?
- क्या केन्द्र सरकार द्वारा बनाया गया कानून उड़ीसा में लागू होगा ?

राज्य सरकार कुछ विषयों पर तो अपने आप कानून बना सकती है, मगर कई विषयों पर उसे केन्द्रीय सरकार के कानूनों को मानना पड़ता है और उन्हें लागू भी करना होता है ।

हम सबसे केन्द्र सरकार भी और हमारे राज्य की सरकार भी कर इकट्ठा करती हैं । इसी पैसे से सरकारी कर्मचारियों को तनख्वाह दी जाती है और तरह-तरह की योजनाएं लागू की जाती हैं । केन्द्र सरकार जो कर हमसे लेती है उसका कुछ भाग वह राज्य सरकार को भी देती है ।

राज्य सरकार कैसे बनती है ?

राज्य सरकार में जो लोग कानून बनाते हैं उन्हें विधायक या विधान सभा सदस्य कहते हैं ।

विधायक राज्य के अलग-अलग क्षेत्रों से लोगों द्वारा चुने जाते हैं ।

इन क्षेत्रों को विधान सभा चुनाव क्षेत्र कहा जाता है । यह क्षेत्र संसदीय चुनाव क्षेत्र से काफी छोटा होता है । विधान सभा चुनाव क्षेत्र में लगभग एक लाख लोग रहते हैं ।

- क्या तुम बता सकते हो कि विधान सभा चुनाव क्षेत्र बड़ा होगा कि पंचायत या नगर पालिका का वार्ड ?

विधान सभा चुनाव क्षेत्र

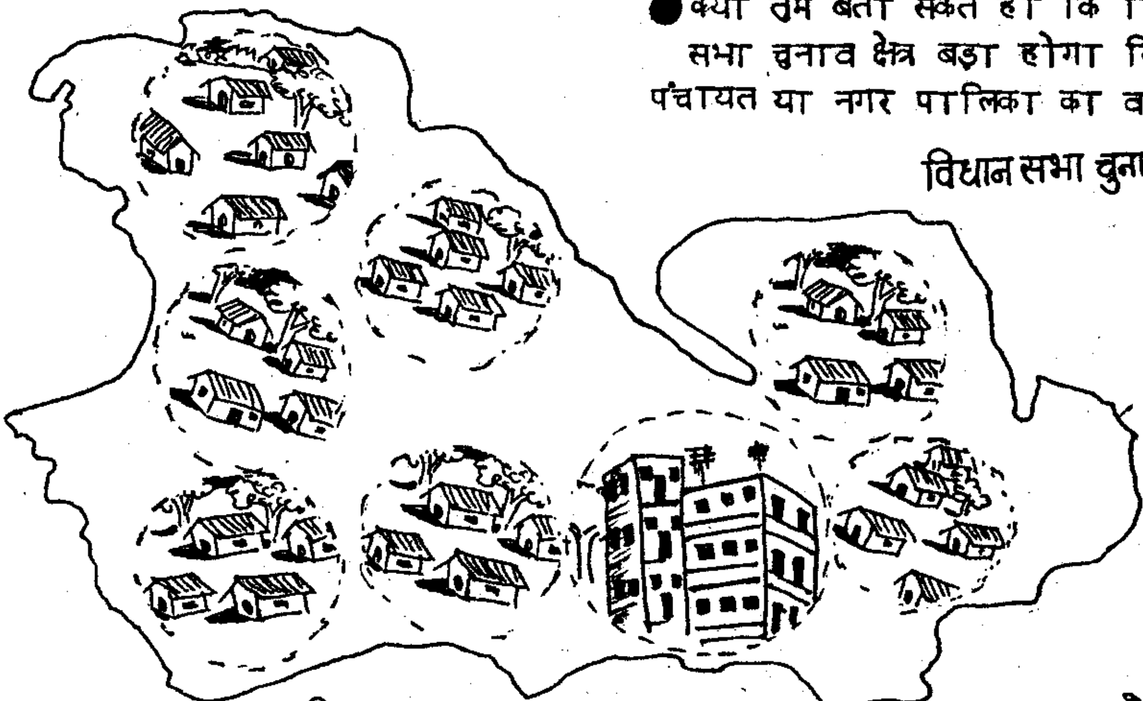

एक विधान सभा चुनाव क्षेत्र में कई गाँव और शहर आते हैं।

● यहां मध्य प्रदेश के संसदीय चुनाव क्षेत्रों और विधान सभा चुनाव क्षेत्रों के नक्शे दिए गए हैं।

दोनों की तुलना करके बताओ कि एक संसदीय चुनाव क्षेत्र में लगभग कितने विधान सभा क्षेत्र आते हैं?

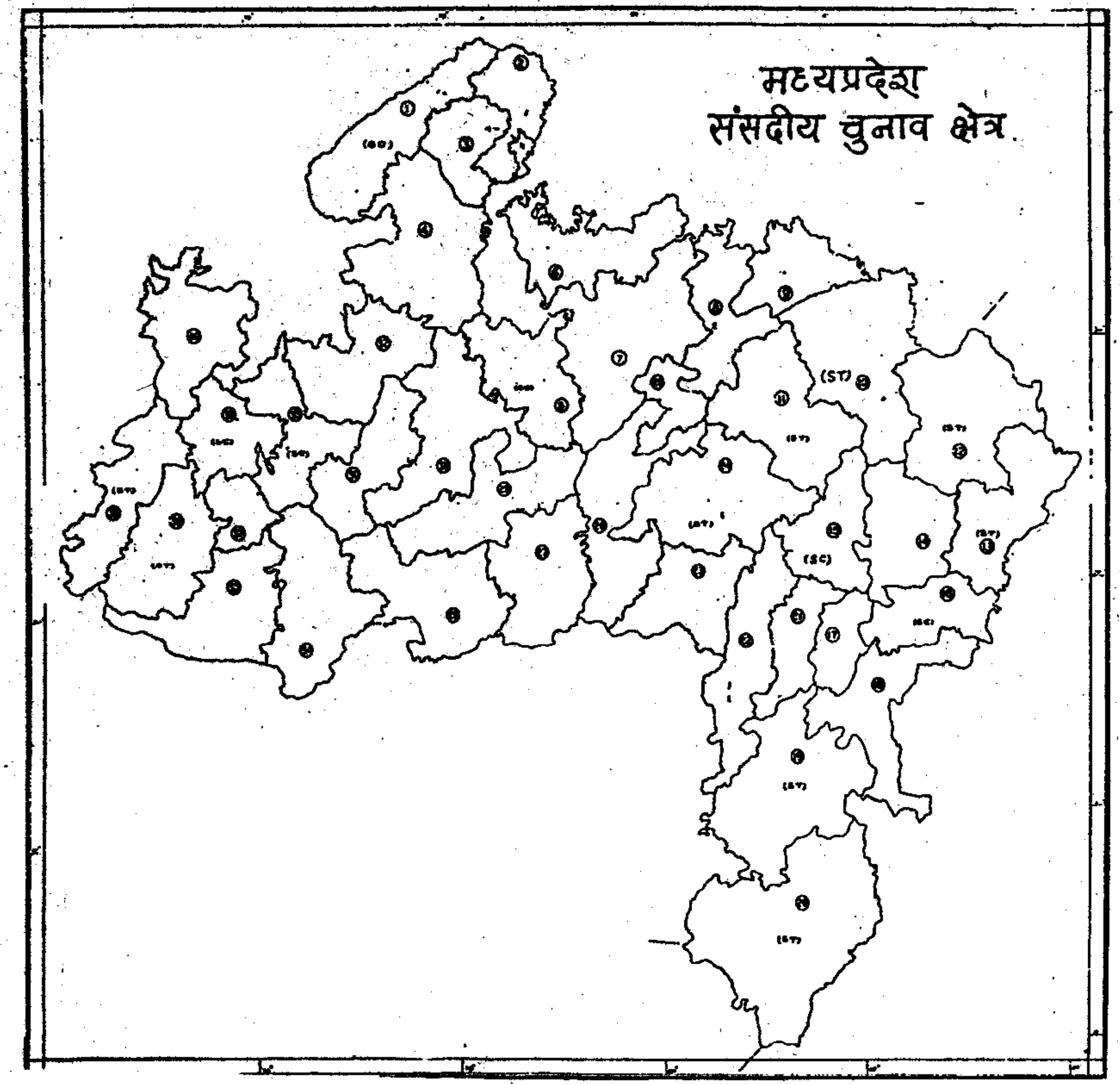

मध्यप्रदेश

विधान सभा चुनाव क्षेत्र

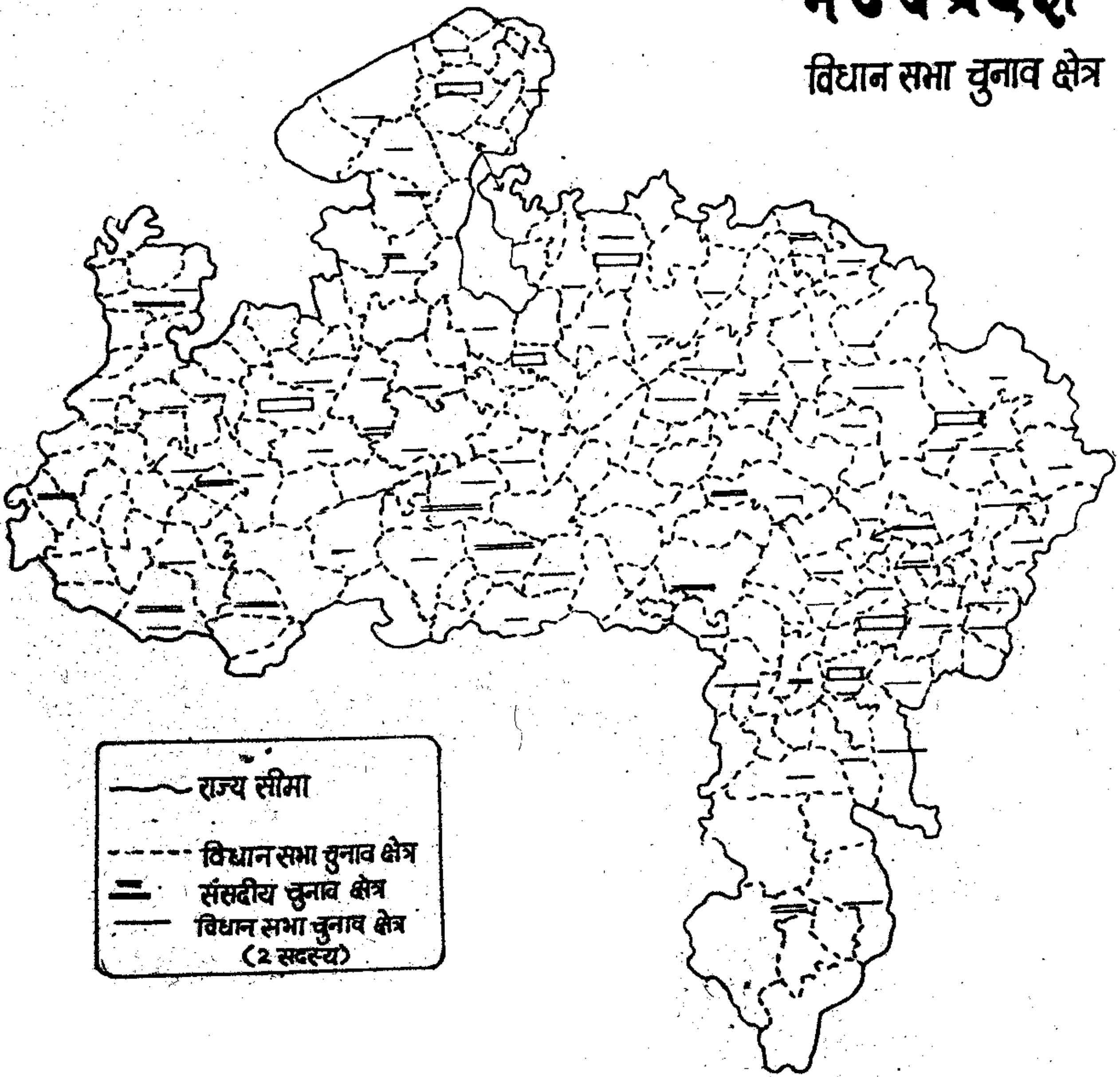

विधान सभा क्षेत्र में रहने वाले सभी लोग जिनकी उम्र 21 वर्ष से अधिक हो, विधायक के चुनाव में वोट डाल सकते हैं।

क्या तुमने कोई विधान सभा चुनाव देखा है? शायद उसका मतदान तुम्हारे ही स्कूल में हुआ होगा, और तुम्हारे गुरूजी चुनाव कार्य में लगे होंगे।

- संसद या विधान सभा के चुनाव की एक मजेदार कहानी लिखो। (चुनाव में कौन-कौन खड़ा हुआ, भाषणों में क्या कहा गया, मतदान कैसे हुआ, कौन जीता उसके बाद क्या हुआ - सब कुछ याद से लिखना।)
- तुम्हारे क्षेत्र का विधायक कौन है?

मध्य प्रदेश की विधान सभा भोपाल में है। पूरे मध्य प्रदेश के विधायकों को विधान सभा की बैठकों में भाग लेना होता है।

भोपाल को मध्यप्रदेश की राजधानी क्यों कहा जाता है?

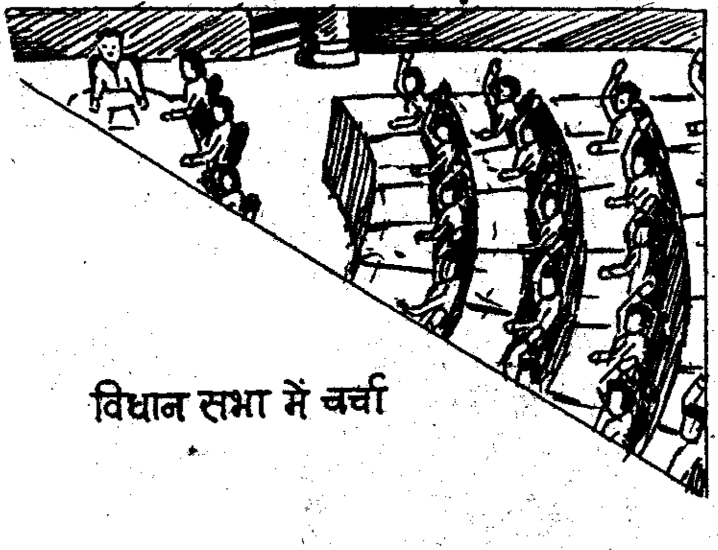

विधान सभा में चर्चा

विधान सभा में तरह-तरह के विषयों पर चर्चा होती है - कृषि पर, शिक्षा पर, उद्योग पर, चोरी डकैती पर, विभिन्न क्षेत्रों की समस्याओं पर। कुछ विषयों पर कानून भी बनाए जाते हैं। विधान सभा में उपस्थित विधायकों में से आधे से अधिक विधायक जब किसी विधेयक/या बिल के पक्ष में हों तभी वह कानून बन सकता है। विधान सभा में पास होकर "बिल" राज्यपाल के पास जाता है। उनकी मंजूरी के बाद ही वह कानून बनता है और लागू होता है।

इन कानूनों को लागू करना राज्य के मंत्रिमंडल का काम है। मंत्रिमंडल कैसे बनता है? विधान सभा में जिस पार्टी के आधे से ज्यादा विधायक हों उस पार्टी का नेता मुख्य मंत्री बनता है। राज्यपाल ही मुख्य मंत्री को नियुक्त करते हैं। मुख्य मंत्री विधान सभा के सदस्यों में से अन्य मंत्री चुनते हैं। बोलचाल की भाषा में राज्य मंत्रिमंडल को राज्य सरकार कहा जाता है।

यह ध्यान रखो कि केन्द्रीय मंत्रि-मंडल और राज्य मंत्रिमंडल एक ही पार्टी का होना जरूरी नहीं है।

- आजकल केन्द्रीय मंत्रिमंडल किस पार्टी का है?
- तुम्हारे राज्य का मंत्रिमंडल किस पार्टी का है?
- भारत के कौन से राज्यों में मंत्रि-मंडल उस पार्टी का नहीं है जिसका केन्द्रीय मंत्रिमंडल है?

राज्य में विधान सभा में बने कानून व नीतियों को लागू करने के लिए राज्य सरकार कई लाख सरकारी कर्मचारी नियुक्त करती है - डाक्टर, तहसीलदार विकास खण्ड अधिकारी, पुलिस, पटवारी, आदि । इन सबको राज्य सरकार तनख्वाह देती है और उन्हें राज्य मंत्रिमंडल के आदेशों का पालन करना होता है । अगले पाठ में तुम ऐसे कुछ अधिकारियों के बारे में पढ़ोगे ।

इस पाठ में तुमने देखा कि "सरकार" क्या है, कानून कैसे बनता है, और मंत्रिमंडल कैसे बनता है । इन बातों को और अच्छी तरह समझने के लिए एक विधायक की कहानी पढ़ो ।

::एक विधायक की कहानी::

कोशलपुर एक काल्पनिक जगह है । हम मान लेते हैं कि यह जगह मध्य प्रदेश में ही है । इस कहानी में पार्टी और लोग भी काल्पनिक हैं । लेकिन विधायक चुनने का तरीका, नियम तय करने के तरीके, जो इस कहानी में बताए हैं, वे सही हैं ।

कोशलपुर क्षेत्र में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं । पांच पार्टियां चुनाव लड़ रही हैं । उन्होंने अपने चुनाव प्रत्याशी या उम्मीदवार (यानी कोशलपुर क्षेत्र के लिए विधायकों के चुनाव के लिए पार्टी से कौन खड़ा होगा) तय कर लिया है । सब से ताकतवर पार्टियां हैं मध्य भारत दल और महाकोशल संघ मध्य भारत दल से चुनाव लड़ रहे हैं, विकास भाई और महाकोशल संघ से रामप्रसाद जी । कुछ निर्दलीय उम्मीदवार भी हैं, जो किसी पार्टी के सदस्य नहीं । कोशलपुर क्षेत्र से चुनाव के लिए कुल 8 उम्मीदवार या प्रत्याशी हैं । 5 पार्टियों के और तीन निर्दलीय ।

प्रचार

चुनाव 25 सितंबर को होने वाले हैं । 15-20 दिन पहले ही चुनाव प्रचार शुरु हो गया । लाउड स्पीकर, जीप, तांगे - आम सभाएं । हर पार्टी के सदस्य आश्वासन देते हैं । कोई कहता "हम सड़क बनवाएंगे"। तो कोई कहता "हम जमीन दिलवाएंगे"। उम्मीदवार दूसरी पार्टी के सदस्यों की निन्दा भी करते । 24 ता॰ तक यह शोरगुल रहा और फिर सब शान्त हो गया ।

कोशलपुर में वोट डले

25 तारीख को सुबह वोट डलना शुरु हुए और शाम तक डलते रहे । चुनाव केन्द्रों के सामने लम्बी कतारें थीं । बड़े-

मतदाताओं की कतारें

बूढे, औरत, आदमी सभी वहां थे। एक व्यक्ति दरवाजे पर बैठा था। उसके पास लम्बी सूचियां थी। वोट देने वाले उसके पास पहले जाते। जिस का नाम उस सूची में न होता उसे वह लौटा देता। बीच में एक व्यक्ति से उस अधिकारी की खूब लड़ाई हुई। अधिकारी कह रहा था, "तुम तो अपना वोट डाल चुके हो, फिर से क्यों आए हो" वोट डालने वाला बार-बार अपने नाखून और पर्ची दिखाता "जब मेरे नाखून पर निशान ही नहीं और पर्ची भी मेरे पास है तो आप मुझे रोक कैसे सकते हैं ?" आपने मेरे नाम को सूची में गलती से काटा होगा या कोई फर्जी पर्ची लेकर आया होगा। अधिकारी ने उस से वोट एक लिफाफे में रख कर सील बन्द करके देने को कहा। वोट का लिफाफा अधिकारी ने अपने पास रख लिया।

कोशलपुर में वोट डल ही रहे थे कि पास के रामपुर क्षेत्र से खबर आई कि कई सारे लोगों ने लाठी लेकर 2 केन्द्रों पर धावा बोला। अधिकारियों को पीटा गया और वोट पेटी के ताले खुलवाकर उस में फर्जी वोट डाले गए। अधिकारियों से फिर जबरजस्ती वोट पेटियां सील करवाई गई। पुलिस वहां बहुत देर में पहुंची।

दूसरे दिन वोटों की गिनती शुरू हुई। शाम तक चुनाव के परिणाम आने लगे। कोशलपुर की सभी वोट पेटियों की जब गिनती खत्म हुई तो पता चला कि रामप्रसाद जी को 42,803 वोट मिले और विलास भाई को 28,156। बाकी 6 प्रत्याशियों को 5 हजार से भी कम वोट मिले।

● बताओ कोशलपुर का विधायक कौन बना ? वह किस पार्टी का था ?

सरकार किसकी बनी

जब हर विधान सभा क्षेत्र के चुनाव परिणाम घोषित हो गए तो पता चला कि कुल 320 विधान सभा क्षेत्रों में से 192 क्षेत्रों में विलास भाई की पार्टी यानी मध्य भारत दल के प्रत्याशी जीते हैं 93, महाकोशल संघ के और बाकी 35 विधायक अन्य पार्टी के हैं, या निर्दलीय हैं।

● बताओ मंत्रीमंडल और मुख्यमंत्री किस पार्टी के बने ?

मंत्री शपथ लेते हुए

हालांकि रामप्रसाद जी कोशलपुर क्षेत्र से विजयी हुए, उनकी पार्टी की सरकार नहीं बनी। वे विपक्षी दल के हो गए।

5 सालों में विधान सभा की कई बैठकें हुई। इन बैठकों में राज्य से संबंधित

कई बातों पर चर्चा और बहस होती और कई मसले तय किए जाते । जैसे- किस चीज पर कितना कर लगेगा ? माचिस पर अधिक या पेट्रोल पर ? खेती की जमीन पर भी कर लगेगा या नहीं ? पंचायत किस प्रकार से बनाई जाएगी ? और ऐसे ही कई मसले ।

विधायक सरकार से प्रश्न पूछते और संबंधित मंत्री जवाब देते । कोई पूछता "मंहगाई बहुत बढ़ रही है, उसे रोकने के लिए आप क्या कर रहे हैं ?" तो वित्त मंत्री को जवाब देना पड़ता । यदि पूछा जाता प्रदेश में कितनी प्राथमिक शालाओं की छतें नहीं है ? आप इस के बारे में क्या कर रहे हैं ?" तो शिक्षामंत्री उत्तर देते । कुछ विधायक जवाबों से संतुष्ट हो जाते और कुछ नहीं भी ।

न्यूनतम मजदूरी का कानून बना

एक दिन श्रम मंत्री ने विधान सभा में न्यूनतम मजदूरी का बिल पेश किया । पहले सब विधायकों को बिल की प्रतियां बांटी गई । श्रम मंत्री ने बिल को संक्षेप में समझाते हुए कहा-"पिछले कुछ सालों में उत्पादन काफी बढ़ा है । महंगाई भी बढ़ी है । लेकिन मजदूरों की मजदूरी इतनी नहीं बढ़ पाई है जितना कि और लोगों की आमदनी बढ़ी है । कई मजदूर संगठनों ने अपने मालिकों के साथ ये मसले भी उठाए हैं । हड़तालें भी हुई हैं । हड़तालों से उत्पादन पर बुरा असर पड़ा है । पर मजदूरी की मांगे भी कुछ हद तक जायज हैं । इन सब चीजों को ध्यान में रखते हुए हम यह बिल पेश कर रहे हैं जिस में उद्योगों में काम करने वाले मजदूरों की न्यूनतम मजदूरी 10 रू से बढ़ाकर 15 रू प्रति दिन की जा रही है और खेतिहर मजदूरों की 8 रू से 10 रू । यह अन्तर इसलिए रखा जा रहा है चूंकि शहरों में मंहगाई अधिक बढ़ रही है । इसके अलावा बिल में कुछ और बिन्दु भी हैं । आप सब को बिल की एक प्रति दी गई है । सब लोग उसे ध्यान से पढ़ लें । इसके बाद हर बिन्दु पर चर्चा होगी ।"

सब विधायकों ने बिल पढ़ा । फिर बहस शुरू हुई । कोई बिल के पक्ष में बोलता तो कोई उसके विरूद्ध । महाकोशल संघ के रामप्रसाद जी अधिकांश मामलों में कुछ न बोलते । पर आज वे खड़े हो गए । बोले "हमारे देश में अधिकांश खेतिहर मजदूर हैं । जब तक उनकी हालत

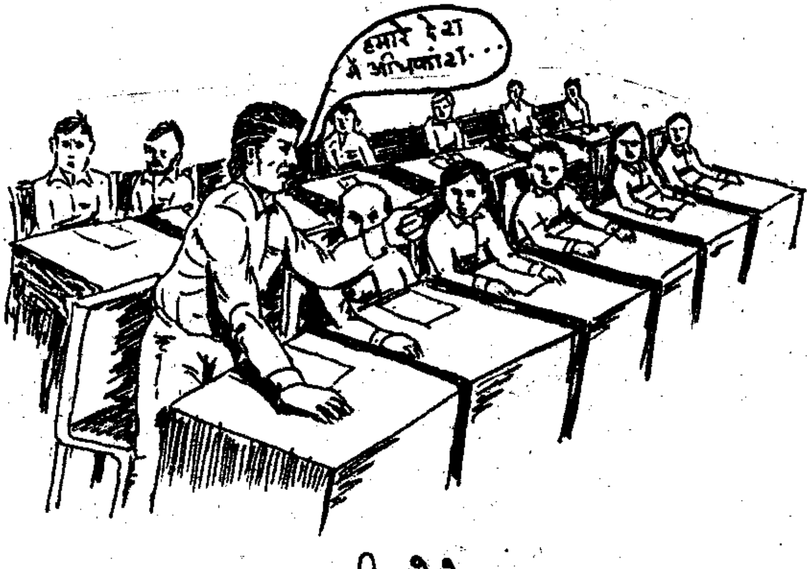

राम प्रसाद जी बोले ...

नहीं सुधरेगी हमारा देश आगे नहीं बढ़ सकता । सिंचाई के आने से साल में कई

फसलें होने लगी हैं । अनाज के भाव भी खूब बढ़ गए हैं । इससे कई किसानों को फायदा हुआ है । पर खेतिहर मजदूर की मजदूरी उतनी नहीं बढ़ी । उसे भी अनाज आदि की बढ़ती कीमतों का सामना करना पड़ रहा है । खेतिहर मजदूरों की मजदूरी और बढ़नी चाहिए ।"

कई विधायक रामप्रसाद जी की बातों से प्रभावित हुए । दूसरों ने कहा- "यदि खेतिहर मजदूरी और बढ़ गई तो अनाज, दाल, तेल सभी के भाव बढ़ जाएंगे । ये वस्तुएं सभी के काम की हैं । फिर उद्योगों के मजदूर भी अधिक मजदूरी मांगने लगेंगे ।"

दूसरे विधायक बोले....

एक और विधायक श्री आकाशमल जी ने कहा -"इतने सारे खेतिहर मजदूरों के पास पैसे बढ़ेंगे तो वे लोग भी कपड़े, रेडियो, साईकल जैसी कारखानों में बनने वाली चीजें खरीद पाएंगे । इन चीजों की मांग भी तो बढ़ेगी । इससे उद्योग को फायदा होगा ।"

चर्चा और बहस खूब हुई । कोई खेतिहर मजदूरों के लिए 10 रू॰ न्यूनतम मजदूरी रखने को कहता, कोई 11 रू॰ तो कोई 12 रू॰ । औद्योगिक मजदूरी पर इतनी बहस नहीं हुई । 15 रू॰ तक बढ़ोत्तरी सब को मान्य थी । जब बिल पर मत पूछे गए कि खेतिहर मजदूरों के लिए 11 रू॰ के पक्ष में कितने लोग हैं तो उपस्थिति 273 में से 200 हाथ उठ गए। फिर बिल में यह संशोधन किया गया कि खेतिहर मजदूरों को कम से कम 11 रू॰ दिन मजदूरी मिलनी चाहिए । और इस संशोधित बिल को राज्यपाल के हस्ताक्षर के लिए पेश किया गया । राज्यपाल ने हस्ताक्षर कर दिए। ऐसे न्यूनतम मजदूरी का कानून बना ।

कानून कैसे लागू होगा

गजट में छपकर यह कानून जिलाधीश जैसे सरकारी कर्मचारियों के पास पहुंचा । अब यह देखना उनकी जिम्मेदारी हो गई कि हर मजदूर को उतनी मजदूरी मिलती है जितनी विधान सभा में तय की गई है ।

कानून बनाने वाले विधायकों की कहानी तो तुमने पढ़ ली । अब अगले पाठ में कानून लागू करने वाले सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों के बारे में पढ़ना ।

अभ्यास के प्रश्न

1. सब से बड़े चुनाव क्षेत्र से कौन चुना जाता है ? इस क्षेत्र को क्या कहते हैं ?
पंच, सांसद, विधायक, नगर पालिका सदस्य, नगर निगम सदस्य

2. क्या सभी लोग जो पंचायत के चुनाव में वोट डाल सकते हैं, सांसद के चुनाव में भी वोट डाल सकते हैं ?

3. कानून बनाने का काम कौन करता है ?
पूरे भारत के लिए -
राज्यों के लिए -

4. प्रधान मंत्री कैसे बनता है ?

5. मंत्रिमंडल का काम क्या है ?

5. मंत्रिमंडल का काम क्या है ?

6. मंत्रिमंडल कैसे बनता है ?

7. इन में से कौन केन्द्रीय सरकार के कर्मचारी है और कौन राज्य सरकार के ?
तहसीलदार, पटेल, सेना के कर्मचारी, तुम्हारे शिक्षक, थानेदार, रेल कर्मचारी।

8. विधान सभा में आज खेती की भूमि पर कर समाप्त करने का विधेयक पेश किया गया । जब विधायकों से पूछा गया कि कितने इस के पक्ष में हैं । 272 विधायक उपस्थित थे । उन में से 106 के हाथ उठे । क्या यह विधेयक कानून बना ? कारण सहित उत्तर दो ।

9. भारत की 5 पार्टियों के नाम बताओ ?

पाठ-8 जिला प्रशासन

हमने पिछले पाठ में पढ़ा कि सरकार नियम कानून बनाती है, उसका पालन करवाती है। हमने यह भी पढ़ा कि पूरे भारत की सरकार है और भारत के अलग-अलग राज्यों या प्रदेशों की भी सरकार है।

सरकार जो कानून और नीतियाँ बनाती है उन्हें लागू करने के लिए बहुत सारे लोगों को काम पर रखती है। इन्हें सरकारी कर्मचारी कहते हैं। इन लोगों को सरकार तन्खवाह देती है। ये लोगों द्वारा वोट डालकर चुने नहीं जाते।

कानून और नीति लागू करने का काम किसी एक जगह से करना मुश्किल है। इसलिए हर राज्य को जिलों में बांटा गया है। हर राज्य में कई जिले होते हैं। जिले में कई सरकारी कर्मचारी काम करते हैं। मध्य प्रदेश के जिलों के नक्शे में अपने जिले को पहचानो।

<u>जिला प्रशासन के कर्मचारी</u>

1. कलेक्टर
2. तहसीलदार
3. कानूनगो
4. पटवारी
5. पुलिस सुपरिटेंडेंट
6. पुलिस इंसपेक्टर
7. चीफ मेडिकल अफसर
8. जिला शिक्षा अधिकारी
9. कृषि अधिकारी
10. विकास खंड अधिकारी
11. सिंचाई अधिकारी
12. दरोगा

ये नाम तुमने जरूर सुने होंगे।

- इनमें से किन लोगों के बारे में तुम जानते हो वे क्या करते हैं - उनके काम क्या क्या हैं ?

<u>पुलिस विभाग</u>: पुलिस विभाग का नाम किसने नहीं सुना। पुलिस का काम है विधायकों व सांसदों द्वारा बनाए गए कानून का पालन करवाना।

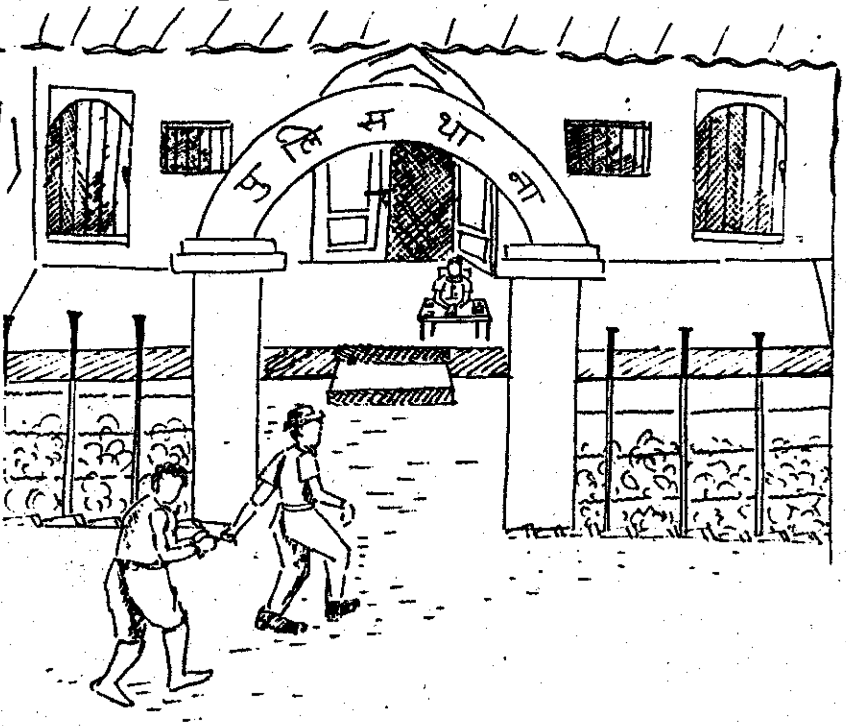

पुलिस विभाग कानून का पालन कैसे करवाती है ? अगर कोई व्यक्ति कानून तोड़ने का प्रयास करे तो उसे रोकती है, (जैसे दंगा, फसाद, मारपीट आदि)।

अगर कहीं किसी ने कानून तोड़ा तो पुलिस पता लगाती हैं कि किसने कानून

तोड़ा, क्यों तोड़ा आदि। फिर कानून तोड़ने वाले को गिरफ्तार करती है और उसके खिलाफ न्यायालय में मुकदमा चलाती है। उदाहरण के लिए अगर रघुवीर के घर में चोरी हो जाए तो उसे जाकर थाने में रिपोर्ट लिखवाना होगा। इस रिपोर्ट को मौके की पहली रिपोर्ट या एफ•आई•आर• भी कहा जाता है। इस रिपोर्ट के आधार पर पुलिस को यह पता लगाना पड़ता है कि वास्तव में चोरी हुई या नहीं। अगर चोरी हुई तो किसने की आदि। जिस व्यक्ति पर पुलिस को शक है उसे वे गिरफ्तार भी कर सकते हैं। किसी भी घटना की पहली रिपोर्ट लिखने से कोई थानेदार मना नहीं कर सकता।

अगर किसी व्यक्ति को पुलिस किसी प्रकार की सज़ा नहीं दे सकती है। गिरफ्तार व्यक्ति पर केवल कोर्ट में मुकदमा चला सकती है। न्यायाधीश ही यह तय करेंगे कि क्या वास्तव में यह व्यक्ति चोर है या नहीं। अगर चोर है तो उसे क्या सज़ा मिलनी चाहिए।

किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तार करने से पहले उसे बताना पड़ता है कि उसे किस जुर्म के लिए गिरफ्तार किया जा रहा है। गिरफ्तार करने के 24 घन्टे के अन्दर उसे न्यायलय में पेश करना पड़ता है और उसे गिरफ्तार करने के लिए न्यायाधीश से अनुमति लेना पड़ती है। अगर कोई थानेदार किसी व्यक्ति को गिरफ्तार करता है और कोर्ट में उसे 24 घन्टे में पेश नहीं करता तो उस थानेदार पर मुकदमा चलाया जा सकता है।

पुलिस विभाग में कौन-कौन काम करते हैं और कहां-कहां काम करते हैं।

● तुम्हारे घर में चोरी हुई तो तुम क्या करोगे ?

हर गांव में एक कोटवार होता है। कोटवार का काम है गांव में हुए जुर्म या अपराध की सूचना पास की पुलिस चौकी में देना।

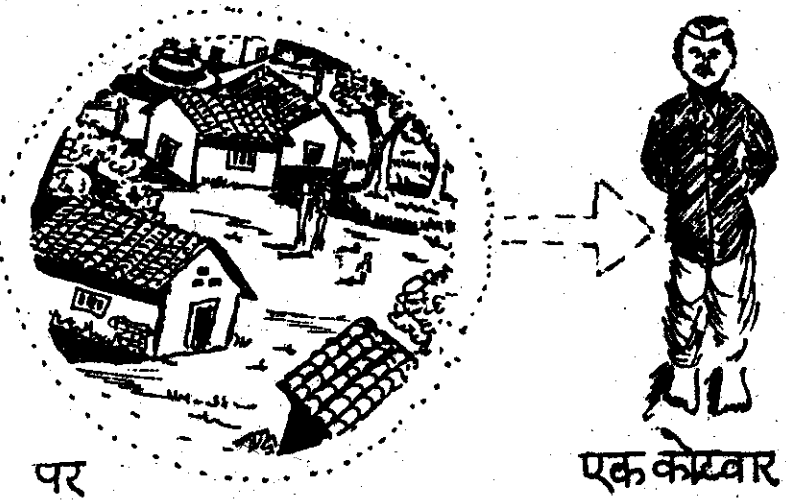

एक गाँव पर एक कोटवार

चार पांच गांवों के लिए एक पुलिस चौकी होती है । हर चौकी पर दो-तीन सिपाही और एक दरोगा होता है । चौकी के गांवों में हुए अपराधों की वे खबर रखते हैं और जा कर छान-बीन करते हैं ।

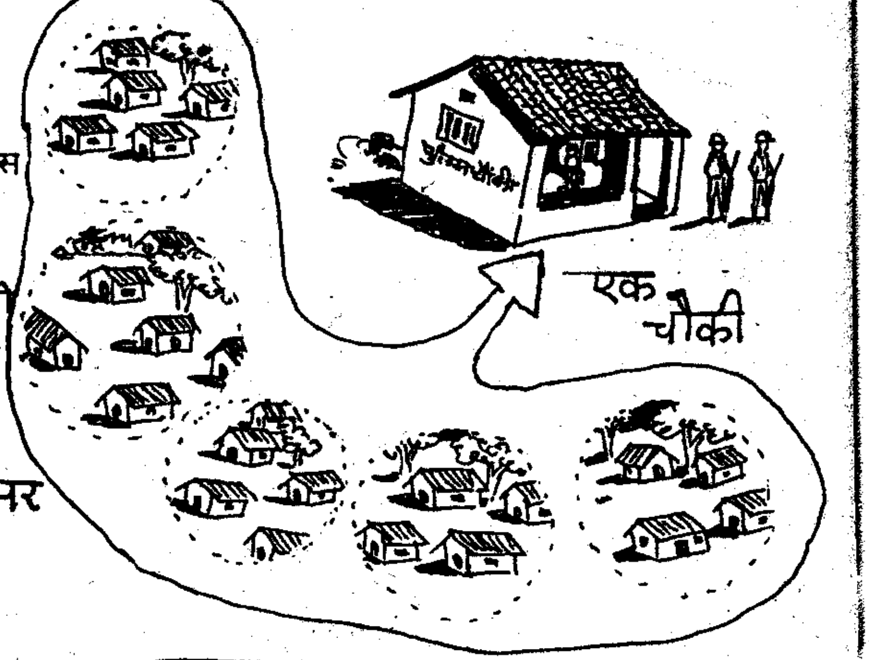

चार-पाँच गाँवों पर

- अगर तुम्हें चौकी में रपट दर्ज करानी हो तो तुम्हें कितनी दूर जाना पड़ेगा ?

कई चौकियों पर एक थाना होता है । थाने में चौकियों से अधिक सिपाही होते हैं और एक थानेदार (सब इंसपेक्टर) होता है । भोपाल जैसे बड़े शहरों में कई थाने होते हैं जो अपने अपने क्षेत्र संभालते हैं - जैसे हबीबगंज थाना, टी॰टी॰ नगर थाना, जहांगीराबाद थाना आदि।

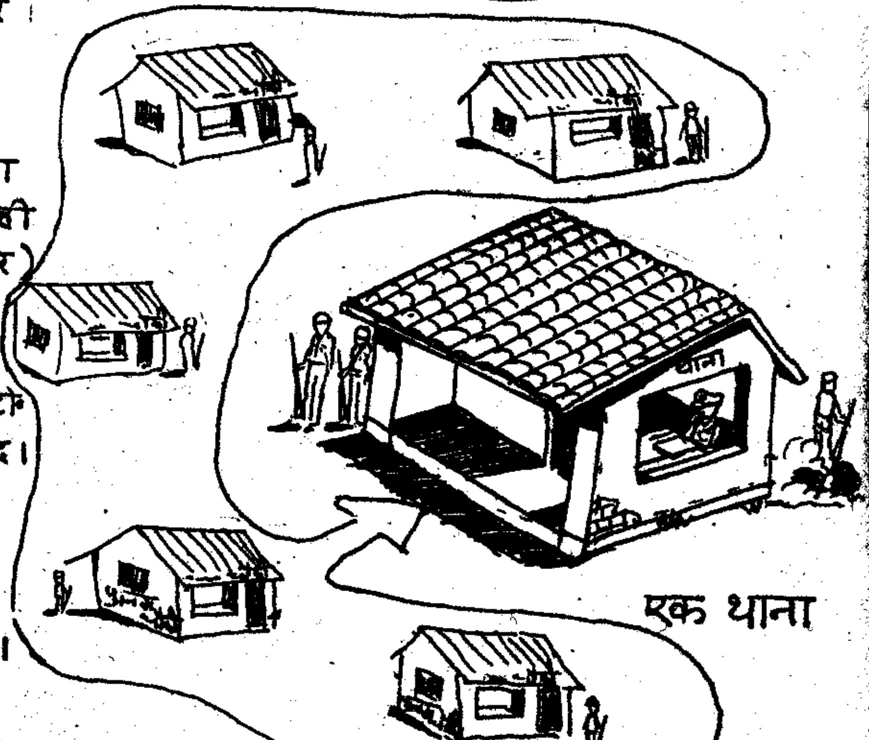

कई चौकियों पर

ये रही चौकी व थाने की बात । इन थानों पर नियंत्रण किसका है ? हर जिले में कई अनुविभागीय पुलिस अधिकारी होते हैं ।(एस॰डी॰ओ॰पुलिस) उनके निर्देशन में ही थानेदार काम करते हैं । अगर किसी जगह कोई दंगा फसाद जैसी वारदात हो जाये तो एस॰डी॰ओ॰ कई थानों से सिपाही बुलाकर वहां भेज सकता है । कोई थानेदार अपने थाने के सिपाही दूसरे थाने के इलाके में नहीं भेज सकता है ।

पूरे जिले में एक पुलिस सुपरिटेंडेंट एस॰पी॰ होता है जो पूरे जिले की पुलिस पर नियंत्रण रखता है । उसकी देख रेख करता है ।

शिक्षा विभाग : राज्य सरकार कई हज़ार शालाएं चलाती है । इन शालाओं में शिक्षकों का प्रबन्ध उनकी तन्खवाह आदि पढ़ाई की देख-रेख, भवन आदि का प्रबंध, परीक्षा का प्रबंध, सब राज्य सरकार को करना होता है ।

● सोच कर लिखो कि शाला के लिए और किन चीजों की जरूरत होती है ?

इतनी सारी शालाओं के लिए इन सब चीजों का समय पर प्रबन्ध करना, इन सब शालाओं में पढ़ रहे बच्चों की परीक्षा लेना, खासा बड़ा काम है । उदाहरण के लिए, हर शाला में चाक पहुंचानी होती है । जहां कम शिक्षक हैं वहां और शिक्षक भेजने पड़ते हैं । बच्चों के लिए बुक बैंक को पुस्तकें भिजवानी पड़ती है । सभी शाला के शिक्षकों को हर महीने वेतन पहुंचाना पड़ता है । जिन बच्चों को छात्रवृत्ति मिल रही है, उनकी छात्रवृत्ति के पैसे समय-समय पर शालाओं में भिजवाने पड़ते हैं ।

इसके लिए जरूरी है कि शिक्षा विभाग को सभी शालाओं की आवश्यकताओं की जानकारी समय-समय पर मिलती रहे । इस जानकारी को इकट्ठी करने और वस्तुएं समय पर पहुंचाने के काम के लिए शिक्षा विभाग के कई कर्मचारी काम करते हैं ।

ए.डी.आई.एस- शाला का निरीक्षण करते हुए

70-75 प्राथमिक शाला और 10-15 माध्यमिक शालाओं पर	एक सहायक जिला शाला निरीक्षक (ए.डी. आई.एस)
एक विकास खण्ड पर	एक विकास खण्ड शिक्षा अधिकारी
एक जिले पर	एक जिला शिक्षा अधिकारी (डी.ई.ओ.)

इन सब कामों की देखरेख करते हैं ।

● अपने गुरूजी से पता करो कि ऊपर दिए गए शिक्षा विभाग के लोग और क्या-क्या करते हैं ? कैसे काम करते हैं ?

● क्या तुम्हारी शाला में सभी जरूरत की चीजें पर्याप्त हैं ? यदि नहीं तो किन चीजों की कमी है ? इन कमियों को पूरा करने को कहोगे ?

● तुम किस से इन कमियों को पूरा करने को कहोगे ?

● अपने गुरूजी से पूछो क्या वह व्यक्ति ये कमियों पूरी कर सकता है ?

● उस अधिकारी को तुम्हारी शाला की जरूरतों को पूरा करने के लिए क्या-क्या करना पड़ेगा ?

<u>स्वास्थ्य विभाग</u> : तुम्हारे घर में तुम या कोई और कभी बीमार पड़े होंगे। अस्पताल, डिसपेन्सरी या "प्रायवेट" डाक्टर के पास कभी गए होगे।

● तुम्हारे लिए सब से नज़दीक कौन सा अस्पताल पड़ता है ? उसे क्या कहते हैं ?

कभी न कभी बीमार तो सभी पड़ते हैं - अमीर हो या गरीब। यदि इलाज केवल पैसों से ही मिलता तो गरीब अपना इलाज नहीं करवा पाते। पर सरकारी अस्पतालों में सभी को निशुल्क इलाज मिल सकता है।

सरकार कई सारे अस्पताल चलाती है। बड़े शहरों में बड़े अस्पताल और कुछ बड़े गांवों में छोटे अस्पताल। इन अस्पतालों में काम करने वाले डाक्टरों और नर्सों आदि को सरकार तन्खवाह देती है। अस्पतालों में आवश्यक चीजें और दवाएं पहुंचाती है। इन सब कामों के प्रबन्ध के लिए कई कर्मचारी होते हैं, जो डाक्टर न भी हों।

सब से छोटे अस्पताल होते हैं मिनी पी॰एच॰सी (लघु प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र)। इस में एक डाक्टर और एक नर्स होती है। इसके अलावा गांव-गांव घूम कर छोटी-मोटी बीमारियों के इलाज करने और गम्भीर बीमारियों की जानकारी इकट्ठा करने के लिए ग्राम स्वास्थ्य रक्षक होता है। आदमियों के लिए अलग और औरतों के लिए अलग। वह डाक्टर नहीं होता लेकिन इलाज की कुछ जानकारी उसे होती है। यह भी जानकारी होती है कि कब किसी मरीज को डाक्टर के पास ले जाया जाए। उस के पास बुखार, सिर दर्द, पेचिश, फोड़े-फुंसी, चोट आदि की दवाएं भी रहती हैं। उस से कोई भी ये दवाएं मांग सकता है।

एक मलेरिया कर्मचारी भी होता है जो मलेरिया के लिए खून की जांच करता है और उसकी दवा देता है ।

● क्या तुम्हारे यहां स्वास्थ्य रक्षक और मलेरिया कर्मचारी आते हैं ? तुम्हें उनसे क्या मदद मिलती है ?

मिनी पी•एच•सी से बड़ी पी• एच•सी• (प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र) होती है । इस में तीन डाक्टर और कुछ नर्स होते हैं । कुछ पलंग होते हैं तो मरीजों के भरती करने का भी प्रबन्ध होता है । एक जिले में कई पी•एच•सी• होती हैं ।

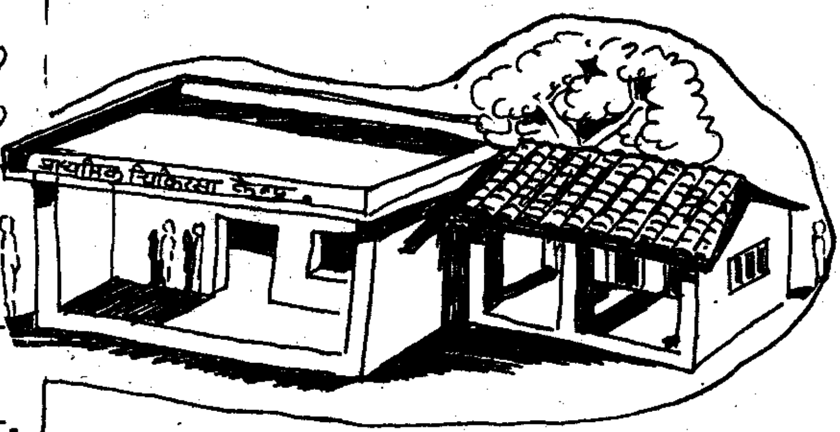

जिला स्तर पर सिविल अस्पताल होता है जिस की पूरी देख रेख चीफ मेडिकल अफसर सी•एम•ओ• या सिविल सर्जन करता है जो एक अनुभवी डाक्टर होता है । पी•एच•सी• में यदि कोई गम्भीर केस आए तो उसे वहां के डाक्टर सिविल अस्पताल भेज देते हैं । सी•एम• ओ• के अलावा सिविल अस्पताल में कई डाक्टर नर्स और कंपाउण्डर भी होते हैं ।

यह सरकार का स्वास्थ्य विभाग है ।

● क्या ये डाक्टर और अस्पताल काफी हैं ? तुम्हें क्या लगता है ? उस दृश्य का वर्णन करो जो कभी तुमने अस्पताल में देखा होगा ?

पर ये तो तब है जब इलाज की नौबत आए । बीमारी को रोका भी तो

जा सकता है । साफ और पर्याप्त पानी पी कर, सफाई और रोशनी में रहकर, व्यायाम करके, ठीक से खा पी कर । बहुत सी ऐसी जगह हैं जहां ये सब सुविधाएं नहीं हैं । बहुत से लोग हैं जिन्हें ठीक से खाना पीना भी नहीं मिलता ।

- इस स्थिति में लोगों के स्वास्थ्य की देख भाल के लिए सरकार को क्या-क्या करना चाहिए ? आपस में चर्चा करके लिखो ।
- तुम्हारे विचार में पी•एच•सी•व अस्पताल की सुविधाओं में क्या सुधार किया जाना चाहिए ?

तुमने शिक्षा विभाग और स्वास्थ्य विभाग के बारे में पढ़ा । ये विभाग लोगों को शिक्षा और इलाज की सुविधाएं देने के लिए हैं । ऐसे और भी विभाग हैं, जो लोगों की सुविधाओं के लिए बने हैं।

- पता करो ऐसे कौन से और विभाग हैं ? वे क्या-क्या सुविधा देते हैं ?
- तुम्हारे विचार में इन्हें और अच्छा बनाने के लिए क्या करना चाहिए?

तुमने देखा कि सरकार के कितने विभाग हैं । हर एक विभाग के जिले में कितने सारे कर्मचारी हैं । इन सब की तन्खवाह सरकार ही देती है । ये सुविधाएं ठीक से लोगों को मिलें, इस के लिए बहुत सारी चीजों की जरूरत होती है । जैसे अस्पतालों में आपरेशन के औजार, दवाईयां, कागज-(दवाई लिखने के लिए) आदि। उसी तरह स्कूल-कालेजों के लिए भी ढेर सारी चीजें चाहिए । इन सब के लिए सरकार को पैसा चाहिए । ये पैसा आता कहां से है ? अगर तुम सोचते हो कि सरकार जितना जी चाहे नोट छाप सकती है तो यह सही नहीं है । यदि ऐसा होता तो नोट ही नोट होते और उन से खरीदने की चीजें बहुत कम पड़ जातीं । इसलिए एक देश में जितनी चीजें बनती हैं उसके हिसाब से ही नोट छापे जाते हैं । ये कैसे होता है - काफी मुश्किल है समझना। आगे धीरे-धीरे समझने की कोशिश करेंगे ।

- तो फिर कैसे पैसा आता है सरकार के पास ?

तुम्हारे और हमारे परिवारों से । हां, सभी लोग सरकार को टैक्स देते हैं। जो भी बाजार में माचिस, नमक,कपड़ा या कोई भी वस्तु खरीदता है वह सरकार को टैक्स देता है । यह उन वस्तुओं की बिक्री पर टैक्स होता है जो दुकानदार को सरकार को देना पड़ता है । दुकानदार इस टैक्स के पैसे खरीदने वालों से ले लेता है । कुछ टैक्स केन्द्रीय सरकार लेती है और कुछ राज्य सरकार । टैक्स या कर इकट्ठा करने के भी विभाग हैं, और उन में भी सरकारी कर्मचारी काम करते हैं ।

पर इस के अलावा एक और तरीके से सरकार टैक्स वसूल करती है । वह है खेती की जमीन पर कर लेकर । इसे भूमि कर कहते हैं । सभी किसानों को यह कर देना पड़ता है ।

● तुम्हारी कक्षा में जिन बच्चों के परिवार में खेती की जमीन हो, उन से पता करो कि उन्हें साल में अपनी भूमि पर कितना कर देना पड़ता है ?

● क्या सभी किसानों को एक सा कर देना पड़ता है या बड़े किसानों को अधिक और छोटे किसानों को कम? यह कर किसान किस के पास जमा करवाते हैं ?

राजस्व विभाग : भूमि कर की वसूली के लिए एक विभाग है जिसे राजस्व विभाग कहते हैं । भूमि पर कर लेने से पहले किसानों की जमीन नापनी पड़ती है । यह काम पटवारी का होता है । एक पटवारी 4-5 गांव की जमीन का लेखा-जोखा रखता है - यानी यह जानकारी कि किसके पास कितनी जमीन है । यदि कोई जमीन बेचे या खरीदे तो उसे यह जानकारी पटवारी के पास दर्ज करानी पड़ती है। उन दो-चार गांवों को जिसकी जमीन नपाई एक पटवारी करता है - हल्का कहा जाता है । यानी एक हल्के पर एक पटवारी ।

● तुम्हारे हल्के का पटवारी कौन है ? और कौन-कौन से गांव आते हैं तुम्हारे हल्के में ?

जमीन नाप कर पटवारी गांव के नक्शे भी बनाता है । जमीन नापने के अलावा पटवारी गांव की सभी जानकारी का लेखा जोखा रखता है । जैसे जन्म व मृत्यु का, फसल का और उपज आदि का ।

हर गांव में एक पटेल होता है, जिसे सरकार ने भूमि कर इक्ट्ठा करने का ठेका दिया हुआ है । जितना कर इक्ट्ठा होता है उसका कुछ भाग वह अपने पास रख लेता है । कितना भाग रखेगा यह बंधा होता है । सरकार पटेल को तन्खवाह नहीं देती । वह सरकारी कर्मचारी नहीं होता । सिर्फ पटवारी के नाप के अनुसार कर इक्ट्ठा करता है ।

जिले को कुछ अनुविभागों में बांटा जाता है । अनुविभागों को तहसीलों में। एक तहसील में कई गांव आते हैं ।

तहसीलदार तहसील की देख-रेख करता है।तहसील की तिजोरी में पटेल अपने गांव से इक्ट्ठा किया गया कर जमा करता है।यदि जमीन के झगड़े हों तो उनका फैसला तहसीलदार कर सकता है। इस फैसले के लिए वह पटवारी से जानकारी ले सकता है।

जिलाधीश व अनुविभागीय अधिकारी:

जिले के स्तर पर इन्हीं सब कामों की देख रेख के लिए जिलाधीश होता है । भूमि कर की देख रेख के अलावा जिलाधीश और कई कामों के लिए भी जिम्मेदार है । वही जिले का सबसे बड़ा अधिकारी है ।

यदि कहीं दंगा फसाद हो जाए या होने की संभावना हो तो वह दंगा करने

वालों को गिरफ्तार करने का आदेश दे सकता है । धारा 144 (यानी उस समय 4 से अधिक व्यक्ति एक साथ नहीं इक्ट्ठे हो सकते)- का आदेश भी जिलाधीश दे सकता है । यदि कोई भीड़ हिंसक हो जाए तो लाठी या गोली तक चलाने का आदेश जिलाधीश ही दे सकता है ।लेकिन ये आदेश देने से पहले उसे भीड़ को तितर-बितर होने को कहना भी जरूरी है । यदि फिर भी भीड़ नहीं छटी तो ही लाठी या गोली चलवा सकता है। जिले के किसी भी विभाग के विरूद्ध या पंचायत के विरूद्ध यदि शिकायत आए तो जिलाधीश उसकी छानबीन करवा सकता है।सभी विकास के कार्यों की देख-रेख भी जिलाधीश करता है ।

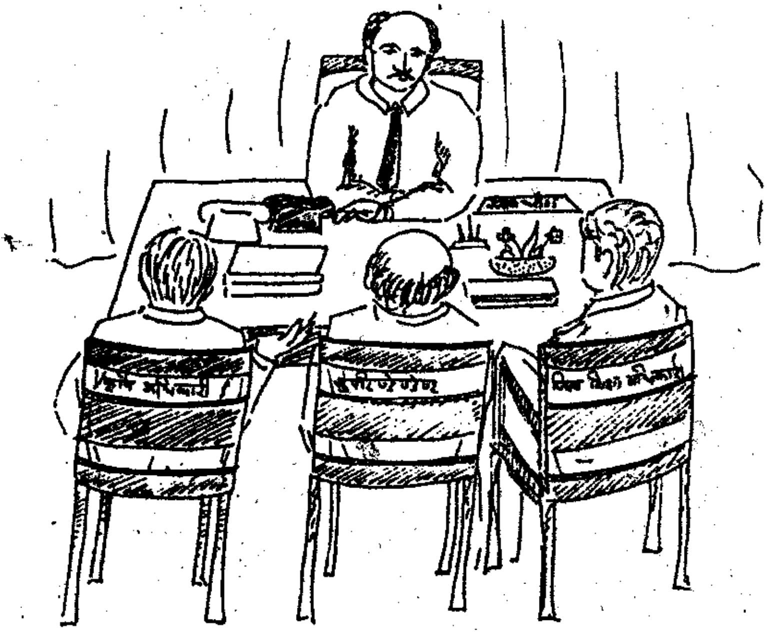

अनुविभागीय स्तर पर अनुविभागीय अधिकारी (एस•डी•ओ•) जिलाधीश के सभी कार्य (भूमि कर की देख-रेख, शांति बनाए रखना,आदि) करता है ।

विकास के कार्य :- कुछ सालों से सरकार ने कुछ खास विकास कार्य शुरू किए हैं, जैसे-कृषि उत्पादन बढ़ाने की योजना, रोजगार देने की योजना आदि ।

- विकास क्या होता है ? आपस चर्चा करो ।
- तुम्हारे विचार में सरकार ने विकास के काम क्यों शुरू किए ? इन से लोगों को क्या लाभ मिलता है क्या सरकार को भी इन से कुछ लाभ मिलता है ?

विकास के कामों के लिए जिले को विकास खण्डों में बांटा गया है । विकास खण्ड और तहसील बराबर ही होते हैं पर तहसीलदार विकास कार्यों की देख रेख नहीं करता । इस के लिए विकास खण्ड अधिकारी (ब्लॉक डिवेलपमेंट अफसर या बी•डी•ओ) होता है । अनुविभाग स्तर पर अनुविभागीय अधिकारी और जिला स्तर पर जिलाधीश इन कामों की देख रेख करता है । गांवों में ग्राम सेवक इन्हीं कामों के लिए होता है ।

प्रशासन का मतलब है कोई भी काम को ठोस रूप से करना । कानून या नीति लागू करना । पाठ को पढ़कर तुम शायद समझ गए होगे कि जिला प्रशासन में कौन-कौन से काम आते हैं ।

अभ्यास के लिए प्रश्न :

1. जिले के जितने सरकारी कर्मचारी के नाम तुमने इस पाठ में पढ़े, उन्हें तालिका में भरो। साथ ही वे किस विभाग के हैं और क्या काम करते हैं, यह भी भरो।

क्र.	कर्मचारी का नाम	विभाग	काम
1.	शिक्षक